वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

फरवरी–अप्रैल 2021
(संयुक्तांक)

वायरस : एक डर पैदा करने वाला जीव (8)
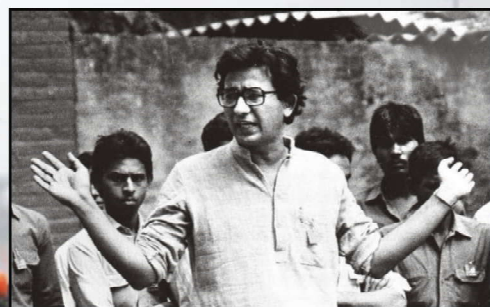
सफदर हाशमी की याद में (15)

धार्मिक समाधि (20)

संघर्ष के बिना कोई प्रगति नहीं, यह ही विजय की राह है : फ्रैड्रिक डगलस

मिट्टी से सने हाथ

-हरपाल

अरे ! ये काली औरतें
अभी तो कीचड़ और पानी से लथपथ
जमींदार के खेतों में रोप रही थी धान
इनकी दुबली-पतली पिंडलियों में
चिपकी थी खून चूसती जोंकें
पानी के छींटें, पसीने के खारेपन के साथ
पड़ रहे थे आंखों में
और जा रहे थे मुंह के अंदर भी
इस मौसम के प्रभाव को महसूसती
ये थीं दुनियाभर की कामगार औरतें
अब आ रही थीं बाहर
जहां इनका एक साथी
लाया था इनके लिए तैयार कर
दुपहर का कलेवा
घास के तिनके
मिट्टी सने हाथों से चिपकी
कुछ जिद्दी चींटियां
धोकर हाथ उसी गंधेले पानी में
बैठ गयी हैं
हाथों की थालियां पलेटें खोल
खाने को तैयार
पेट मे मुड़ी-तुड़ी अंतडियां
होने लगी हैं सीधी।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 **IFSC: SBIN 0002420** में जमा करा सकते है। शुल्क कैश रूप में जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:
दोआबा कम्यूनिकेशंस
मो : 92530 64969, **Email: baldevmehrok@gmail.com**

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक :
बलवन्त सिंह- 94163-24802

संपादक सहयोग :-
गुरमीत सिंह अम्बाला- 94160-36203
बलबीर चंद लोंगोवाल-98153-17028
हेम राज स्टेनो- 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :
गुरमीत अम्बाला
Email:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर, नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली ।
जिला कुरुक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email:
tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए:
www.facebook.com/tarksheelindia
Tarksheel on
twitter@gurmeeteditor
Tarksheel on Whatsapp No. :
9416036203

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉगऑन करें:
www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.
wordpress.com
Tarksheel on Mobile App:
Readwhere.com

आगामी मीटिंग के बारे

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग 16 मई, 2021 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक कैथल में रखी गई है। स्थान के बारे तर्कशील साथियों को वट्सएप व अन्य माध्यमों से सूचित किया जायेगा।
संपर्क सूत्रः
कृष्ण लालः 92552 75781

सोशल मीडिया पर निजता का प्रश्न-(?)

विश्व भर में इंटरनेट के बहुतायत रूप में उपलब्धता के कारण आज सामान्य आदमी का भी बहुत सा समय इसके उपयोग करने पर व्यतीत होता है। मीडिया के अनेकों लोकप्रिय प्लेटफॉर्म हैं, जिनमें वाट्सएप भी एक है, जिसके नीति निर्धारकों की एक घोषणा कि वह जल्दी ही अपने निजता के नियम को बदलने जा रहा है, जहां वह अपने उपभोक्ताओं की जानकारी को आगे अन्य मीडिया प्लेटफार्म को शेयर करेगा। इस घोषणा से निजता के प्रश्न पर विश्व भर में आलोचनात्मक बहस छिड़ गई है, जिस कारण वाट्सएप ने अपनी इस घोषणा को मई 2021 तक स्थगित कर दिया है।

क्या अन्य सोशल मीडिया निजता की सूचनाओं पर नजर नहीं रखता? लगभग सभी सोशल मीडिया के प्लेटफार्म अपने यूजर्स की रुचियों पर नज़र रखते हैं। वह उपभोक्ता की किसी भी सर्च या रुचि को आर्टीफिशियल इंटेलीजेंट के माध्यम से पकड़ता है और उसकी रुचि के कंटेंट उपलब्ध कराता है।

हम ये सोच कर तसल्ली करने लगते हैं कि हमारी जानकारी प्राप्त कर कोई क्या कर लेगा, यह गलत धारणा है। कोई भी आपकी मामूली सी जानकारी के माध्यम से आप तक पहुंच जाएगा, खास कर ठगी करने वाले। उसके पास कुछ जानकारी है जिसके माध्यम से वह आपसे स्नेहमयी व्यवहार करते हुए अन्य जानकारी भी ले लेगा और आपको किसी न किसी तरीके से नुकसान पहुंचा देगा। बैंकों में घोटाला करने वालों के उदाहरण हमारे सामने हैं। दूसरा, क्या हम व्यवहारिक जीवन मे ऐसे व्यक्ति को पसंद करेंगे जो हमारी हर गतिविधि पर नजर रखता रहे कि हम कब उठ रह हैं, कब खाना खा रहे हैं, कब कहीं जा रहे हैं...नहीं ना ! इसी प्रकार कोई इंटरनेट के माध्यम से हम पर हर पल नज़र रखे, क्या यह हमें स्वीकार होगा?

आज सोशल मीडिया से जहां हम पल भर मे विश्व भर में इंटरनेट के माध्यम से जुड़ कर जानकारी लेते रहते हैं, वहीं बहुत कुछ ऐसा भी है जो हम गंवा रहे होते हैं। निजता के प्रश्न पर विश्वव्यापी यह बहस बेहद लाज़िमी है कि कहीं हम अपनी रुचियों के कारण ब्लैकमेल का शिकार न हो जाएं या किसी प्रॉपेगैंडा के शिकार हो कर मास हिस्टीरिया में न फंस जाएं।

जरूरत है कि इंटरनेट का इस्तेमाल मानववाद, वैज्ञानिक चेतना एंव चहुंमुखी विकास के लिए हो, न कि आपसी नफरत में हम फंस कर मानवीय गरिमा को ही मिटा दें।

बार की आबादकारी और बीसवीं शताब्दी की पहली किसान लहर

मूल लेखक :- गुरदेव सिंह सिद्धू
अनुवादः बूटा सिंह सिरसा

वर्तमान समय में तीन कृषि कानूनों व बिजली बिल 2020 के विरोध में किसान आन्दोलन अपने शिखर पर है तथा जन आन्दोलन बन गया है। पंजाब का किसान इस आन्दोलन में नेतृत्वकारी भूमिका में है देश के नैगम मीडिया, आई.टी. सैल व सोशल मीडिया पर सक्रिय मध्यम वर्ग के एक हिस्से द्वारा इस आन्दोलन को मात्र पंजाब का आन्दोलन, पंजाब सरकार द्वारा प्रायोजित, खालिस्तानी, आतंकवादी आदि बताकर असली मुद्दों से ध्यान हटाने की कोशिशें की जा रही है। यह कोशिशें लोगों को धर्म, जाति, क्षेत्र व लिंग के आधार पर बाँटकर उनका शोषण बनाए रखने के लिए की जा रहीं हैं। लेकिन पंजाब के किसान आन्दोलन का अपना एक इतिहास है, विरासत है व लोगों में शुरू से विद्रोही भावनाएं हैं। किसान आन्दोलन के इतिहास व विरासत को पेश करता यह लेख पत्रिका में छापते हुए हमें खुशी हो रही है । –***सम्पादक***

19वीं शताब्दी के दौरान पंजाब के पश्चिमी क्षेत्र में जेहलम और सतलुज नदी के बीच जिला शेखुपुर, झंग और मिंटगुमरी का विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र था। इस क्षेत्र में नाममात्र की वर्षा होती थी। वर्ष में औसतन मात्र 5 इंच, जिस कारण जगह-जगह या तो रेतीले टीले थे या दूर-दूर तक फैली हुई कंटीली जंगली झाड़ियाँ। इस कारण यह सारा क्षेत्र लगभग निर्जन था। यदि कहीं लोगों का निवास दिखाई देता था तो वह था जंगली लोगों का निवास जो कि पशुपालन करके गुजारा करते थे। इस मरुस्थलीय क्षेत्र को नहरों से सिंचाई सुविधाएं प्रदान करके उपजाऊ बनाने की योजना पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर जेम्ज ब्राडवुड लायल जो 1887 से 1892 तक पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर रहे, ने बनाई । रावी, सतलुज और यमुना नदी में से निकाली गई नहरों के कारण मिली सिंचाई सुविधाओं से माझा, मालवा तथा दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में आई खुशहाली की मिसाल उनके सामने थी। इससे उत्साहित होकर उन्होंने चिनाब नदी के पानी को कृषि के लिए उपयोग करने हेतु लोअर चिनाब नहर निकालने की योजना बनाई। इस निर्जन क्षेत्र का पुनर्गठन किया गया तो सर जेम्ज लायल की दूरदृष्टि की कद्र करते हुए नए बनाए गए जिले तथा इसके जिला मुख्यालय को जेम्ज लायल के नाम पर लायलपुर का नाम दिया गया। जिला झंग और शेखुपुरा के कुछ क्षेत्रों को शामिल करके यहां बसाई गई कॉलोनी को लोअर चिनाब कॉलोनी कहते थे। आम बोलचाल में इसको 'बार' का क्षेत्र कहा गया। यहां पंजाब के केंद्रीय जिलों अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, फिरोजपुर आदि से लाकर नए आबादकारों को बसाया गया । यह जमीन नाममात्र कीमत पर लगभग मुफ्त में ही दी जा रही थी। जिस कारण हर किसान यहां जमीन लेने का इच्छुक था परंतु सरकारी अधिकारियों ने इच्छुक व्यक्तियों के हाथ देखकर खुरदरे एवं सख्त हाथों, जो किसी व्यक्ति के मेहनती एवं जी जान से कार्य करने का प्रतीक थे, उन किसानों को ही जमीन अलाट की। नई जगह बसे इन किसानों का जीवन बहुत मुश्किलों भरा था। उन्होंने नया ठिकाना तो बना लिया था परंतु अभी सिंचाई सुविधाएं पूरी तरह से उपलब्ध नहीं हुई थी। जमीन में से कंटीली झाड़ियों को उखाड़कर जमीन को समतल करना और सिंचाई के लिए खाले बनाए जाने थे। गर्मी के मौसम में लायलपुर की गर्मी का मुकाबला नहीं था। स्थानीय पशुपालक लोग चरागाहों को कृषि योग्य बनाने के लिए आए बाहरी किसानों को पसंद नहीं करते थे। वह उनके पशु चोरी कर लेते थे और तंग परेशान करने के लिए और ढंग तरीके भी प्रयोग करते थे । परंतु सारी मुश्किलों का मुकाबला करते हुए नए आबादकार पूरी मेहनत से अपने काम में लगे रहे।

परिणाम यह हुआ कि सैकड़ों सालों से बेआबाद क्षेत्र की वर्ष दर वर्ष कायाकल्प होने लगी और जल्दी ही यह पंजाब का सबसे खुशहाल क्षेत्र बन गया।

सांपों के सिरों पर पैर रखकर समृद्धि लाने वाले इन किसानों के लिए खुशी का समय ज्यादा देर न रहा। इनकी समृद्धि को देखते हुए इसमें से अपना अंश प्राप्त करने के लिए पंजाब सरकार के मुंह से लार टपकने लगी । किसानों में बार के क्षेत्र में जाने के लिए रुचि पैदा हो गई थी तो सरकार ने नए बार क्षेत्रों में जमीन की अलॉटमेंट करते हुए लोअर चिनाब कालोनी के मुकाबले सख्त शर्ते लगाई थी। उदाहरण के लिए एक शर्त यह लगाई गई कि जमीन का लगान न देने एवं दूसरी शर्तों को पूरा न करने की सूरत में जमीन सरकार के पास चली जाएगी एक और शर्त के अनुसार बार की जमीन का बंटवारा रोकने के लिए जट सिख परिवारों में पिता की जायदाद सारे पुत्रों में बराबर बांटे जाने की परंपरा से उल्ट इसकी मिल्कियत केवल सबसे बड़े पुत्र की मानी गई। बेशक सरकार जानती थी कि शानदार युद्ध सेवाएं देने के बदले जिन सेवानिवृत्त सैनिकों को जमीन दी गई है, उनमें से अधिकतर अविवाहित हैं। फिर भी यह शर्त लागू की गई कि जमीन मालिक के बेऔलाद मर जाने की हालत में जमीन सरकार के खाते में चली जाएगी । 1906 में पंजाब सरकार ने अलॉटमेंट की शर्तों में समानता लाने एवं कालोनियों के सुचारू प्रबंधन का उद्देश्य बता कर आबादकारी बिल बनाया इसमें किसानों पर और अधिक बंदिशें थोपने के साथ-साथ उनके जमीन पर मिल्कियत के हक यहां तक सीमित कर दिए गए कि कोई आबादकार अपनी जमीन अपने खेत में लगे वृक्षों को भी नहीं काट सकता था। बिल में यह प्रावधान भी था कि इन शर्तो का थोड़ा सा उल्लंघन करने के दोष में केवल 24 घंटे का नोटिस देकर जमीन की अलॉटमेंट रद्द की जा सकती थी। इन दिनों में ही सरकार ने बारी दोआब नहर के पानी से सिंचित होने वाली जमीनों का लगान कई गुना बढ़ा दिया। कपास और गन्ने की खेती के लिए तो यह दर पहले से दुगनी कर दी गई । माझा क्षेत्र विशेषकर अमृतसर और लाहौर के किसानों पर लगान बढने का भार सबसे ज्यादा पड़ा फलस्वरुप माझे और बार के क्षेत्रों में व्यापक रोष फैल गया । जिसको अंग्रेज साम्राज्य की गुलामी से देश के लिए मुक्ति की लहर में बदलने के लिए नौजवान सरदार अजीत सिंह आगे आया।

सरदार अजीत सिंह को देश प्रेम की घुट्टी विरासत में मिली लेकिन डीएवी कॉलेज लाहौर में पढ़ते हुए प्रिंसिपल लाला हंसराज की शिक्षा के कारण देश प्रेम की भावना और भी बलवती हो गई थी। 1906 में कोलकाता में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मेलन में भाग लेने ने सोने पर सुहागे का काम किया। कोलकाता से वे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, श्री अरबिंदो घोष आदि गर्म दलीय नेताओं के विचारों से प्रभावित होकर आए। एक जनवरी 1906 में उनके कोलकाता से वापिस आने तक बार के क्षेत्र में नए बिल के बारे में कानाफूसी शुरू हो चुकी थी। सरदार अजीत सिंह ने इस मौके को संभालने का मन बनाया और वे पंजाब सरकार के इस अन्यायपूर्ण इरादे के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के लिए सक्रिय हो गए।

सरदार अजीत सिंह लाला लाजपत राय उन्होंने अपने भाइयों सरदार किशन सिंह और स्वर्ण सिंह एवं एक मित्र घसीटा राम को सहयोगी बनाकर पहले लाहौर शहर में जलसे करने शुरू किए और फिर बार के सारे क्षेत्र को ही अपना कर्म क्षेत्र बना लिया। उसने बार के क्षेत्र अर्थात लायलपुर, झंग, मिंटगुमरी आदि के साथ-साथ अमृतसर, फिरोजपुर में लोगों एकत्रित करके किसानों को सरकार के इन फैसलों के कारण उनके ऊपर पड़ने वाले बुरे प्रभावों के बारे में जागरूक किया और इस मुद्दे पर किसान वर्ग को सरकार के विरुद्ध एकजुट करने में सफल हुए। मार्च एवं अप्रैल के दो महीने सरदार अजीत सिंह सरकारी आदेशों से प्रभावित क्षेत्र में चकरी की भांति घूमे। इन दो महीनों में बिल का विरोध कर लोगों की 23 रैलियों में से 15 को उन्होंने स्वयं संबोधन किया। उन दिनों पंजाब में लाला लाजपत राय नेता की नेता के रूप में पहचान बन गई थी। इसलिए सरदार अजीत सिंह ने लाला जी को भी कई बार इन रोष रैलियों में बुलाया। 22 मार्च 1906 को लायलपुर में हुए बहुत बड़ी रैली में नौजवान लाला बांके दयाल ने पगड़ी संभाल जट्टा धुन वाला गीत गाया किसानों के दुख दर्द को पूरी तरह बयान करने वाला यह गीत श्रोताओं के मन को छू गया। इस आंदोलन के दौरान हर किसी की जुबान पर चढ़ने वाला यह गीत आंदोलन की आत्मा के साथ

इतना जुड़ गया कि यह आंदोलन ही 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन के नाम से जाना जाने लगा। लालचंद फलक इस लहर का मुख्य कवि था। इस आंदोलन को खड़ा करने में सरदार अजीत सिंह की भूमिका का जिक्र भारत सरकार के गृह विभाग (राजनैतिक) की 1907 की कार्यवाहियों बारे में एक रिपोर्ट (नंबर 148-235) में इस प्रकार मिलता है" आंदोलन गांव-गांव और जिले-जिले में चल रहा है। गुप्त तौर पर साजिशें रची जा रही हैं। सरदार अजीत सिंह सब लोगों की सहायता प्राप्त कर रहा है। वह बड़े जोशीले भाषण करता है तथा उसके भाषण में अंग्रेजों के लिए 'लानत' जैसे शब्द बार-बार दोहराए जाते हैं। लोगों में बहुत अधिक जोश पैदा हो रहा है।' सरकार के इन दोनों फैसलों के विरुद्ध लोगों का बहुत अधिक विरोध था परन्तु सरकार ने इसके प्रति लापरवाही दिखाई और आबादकारी बिल 5 मार्च 1907 को कानून बन गया। उधर 1907 के मध्य तक पंजाब के अंदर अंग्रेज विरोधी जन आंदोलन शिखर पर पहुंच गया। जगह-जगह लोग अंग्रेज सरकार के विरुद्ध रैलियां, धरने, जुलूस आदि आयोजित करने लगे। सरदार अजीत सिंह ने इस आंदोलन को व्यापक और शक्तिशाली रूप देने के लिए दिन-रात एक कर के काम किया। एक बार तो ऐसे प्रतीत हुआ जैसे यह रोष विद्रोह का ही रूप ले लेगा। इसलिए अंग्रेज सरकार सरदार अजीत सिंह की इन कार्यवाहियों के कारण घबरा गई। सरदार अजीत सिंह और उनके साथियों द्वारा तैयार किए गए इस बगावती माहौल के बारे में पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर डैनियल इबस्टन ने टिप्पणी थी : "स्यालकोट, लायलपुर, रावलपिंडी आदि शहरों में अंग्रेज विरोधी प्रचार खुले और विद्रोही तरीके से किया जा रहा है। प्रांत की राजधानी लाहौर में प्रचार बड़ा जहरीला है और गंभीर अशांति पैदा हो रही है।'' इसके आधार पर उसने हिंदुस्तान सरकार को 30 अप्रैल 1907 को भेजी रिपोर्ट में लिखा, 'वर्तमान आंदोलन एक गंभीर रूप धारण कर रहा है, गांव में अंग्रेजों के विरुद्ध जोरदार प्रचार शुरू कर दिया गया है। आंदोलनकारी अपने कार्य को पूरा करने के लिए जनता के दुख-दर्दो को साधन रूप में प्रयोग करने से भी संकोच नहीं कर रहे। इस आंदोलन के दौरान अक्सर ही लाला लाजपत राय जी सरदार अजीत सिंह के साथ होते हैं। इस कारण वर्तमान संकट में से निकलने के लिए सरकार ने इन दोनों के विरुद्ध कार्यवाही करने का मन बनाया। परिणाम स्वरूप अंग्रेज सरकार ने मई 1907 में 1818 के एक्ट 3 के अधीन इन दोनों नेताओं के गिरफ्तारी वारंट जारी किए। लाला लाजपत राय 29 मई और सरदार अजीत सिंह 3 जून को पुलिस की गिरफ्त में आए आ गए। अंग्रेज सरकार ने दोनों को कुछ दिनों के ही अंतर में निर्वासन की सजा सुना कर बर्मा की मांडले जेल में बंद कर दिया। सरकार की यह कार्यवाही लोगों को डराने की जगह उनकी सरकार विरोधी भावनाओं को और तीव्र करने का कारण बनी और आंदोलन और भी तेजी पकड़ने लगा। बार जमींदार एसोसिएशन जिसका प्रधान जैलदार सरदार ईशर सिंह डस्का और महासचिव चौधरी शहाबुद्दीन था, ने रोष रैलियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जालंधर के राम करण दास ने उस समय पंजाब और बंगाल के क्रांतिकारियों को इकट्ठा करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। एसोसिएशन ने आबादकारी एक्ट को मंजूरी न देने बारे गवर्नर जनरल को मांग पत्र भी भेजा। स्थिति को बिगड़ती हुई देखकर वायसराय ने अपना वीटो का अधिकार प्रयोग करते हुए नया आबादकारी बिल ही वापस नहीं लिया बल्कि नवंबर 1907 में दोनों नेताओं को भी रिहा कर दिया। पंजाब सरकार ने नहरी लगान बढ़ाए जाने का हुक्म भी वापस ले लिया। इस प्रकार यह आन्दोलन अपने उद्देश्य की पूर्ण प्राप्ति के उपरांत सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

आंदोलन की जीत का प्रभाव : इस किसान आंदोलन की जीत ने हिंदुस्तान के भावी राजनीतिक घटनाक्रम पर काफी प्रभाव डाला। इससे अब तक अंग्रेजी साम्राज्य के अजेय होने का बना हुआ भ्रम टूट गया। दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के दुख-दर्दो के निवारण हेतु संघर्ष कर रहे गांधीजी इससे बहुत प्रभावित हुए। यकीनन उनकी तरफ से भविष्य में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए अपनाए गए तौर-तरीकों की पृष्ठभूमि में इस आंदोलन के दौरान अपनाए गए पैंतरों का असर था। इस आंदोलन में हिंदू, सिख और मुसलमान संप्रदाय के लोगों ने पूरी एकजुटता से भागीदारी की। सरकारी रुतबा प्राप्त जैलदार, नंबरदार आदि बेखौफ होकर लोगों के कंधे से कंधा मिलाकर लड़े। इससे भी बड़ी बात यह आंदोलन कुछ भविष्य के नए नेताओं को आगे

लेकर आया। । इनमें से दो-भाई भगवान सिंह 'प्रीतम' और रामचंद्र पेशावरी बाद में गदर पार्टी में सक्रिय रहे और मेहता आनंद किशोर को तो 1915 में गदरी क्रांतिकारियों के खिलाफ दर्ज मुख्य मुकदमे में आरोपी नंबर एक बनाया गया। 'पगड़ी संभाल जट्टा' आंदोलन ने पंजाब में किसानों को एकजुट होकर संघर्ष करने का रास्ता दिखाया। जिस पर चलते अगले चार दशकों में किसानों ने कई बार अंग्रेज सरकार से लोहा लिया। निस्संदेह पंजाब के किसानों का वर्तमान संघर्ष भी देश की राजनीति पर दूरगामी प्रभाव डालेगा। इस आन्दोलन की खबरें पढ़कर देशभर के किसानों में जागृति आ रही है। पंजाब की जनता के विभिन्न वर्गो में आपसी भाईचारा व सहयोग बढ़ा है बेशक आंशिक तौर पर ही सही । लोगों की आशाओं की पूर्ति हेतु नए नेता उभर कर सामने आ रहे हैं जो राजनीतिक पृष्ठभूमि पर नासूर की भांति जड़ें जमा चुकी पैतृक राजनीति को मात देने का शुभ संकेत है।

नोट :- बार का अर्थ जंगली क्षेत्र, यहाँ कृषि हेतु सिंचाई आदि की बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं होती। संयुक्त पंजाब में नीली बार, सांदल बार, गंजी बार आदि बार के क्षेत्र थे। देश के बंटवारे के समय इनमे से अधिकतर क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया।

ए फलक तू भी बदल कि जमाना बदल गया

लालचंद 'फलक' पगड़ी संभाल जट्टा लहर का एक और मुख्य कवि था। उसको सरदार अजीत सिंह लाला लाजपत राय और बांके दयाल के साथ गिरफ्तार किया गया तो जज ने उसके बारे में लिखा था" सारे कवियों ने दुनिया की क्रांतियों में बड़ा योगदान दिया है। लालचंद 'फलक' पंजाब का प्रसिद्ध राजनैतिक कवि है। वह प्रसिद्ध क्रांतिकारी लाला हरदयाल और सूफी अंबा प्रसाद का प्रशंसक है। लाला लाजपत राय और अजीत सिंह का यह मित्र नौजवानों को विद्रोही गीतों और अपनी लेखनी से सरकार का तख्ता पलटने के लिए प्रेरणा दे रहा है। " उसके ऊपर 8 मुकदमे दायर हुए थे। उसकी नीचे लिखी कविता बहुत प्रसिद्ध हुईः

सूफी और अजीत ने तरक्की का राह लिया
महते ने अपना रंग बदल लिया
लाला लाजपत राय भी बदल गए
'फलक' तू भी बदल कि जमाना बदल गया
– *-लाल चंद 'फलक'*

गदर लहर समय उसने उसको लाहौर षड्यंत्र केस में शामिल करके उम्र कैद व निर्वासन की सजा दी गई। वे 1920 में हजारीबाग जेल से रिहा हुए।

पगड़ी संभाल जट्टा

पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए
लुट्ट लिया माल तेरा लुट्ट लिया माल ओए ।
फसलां नूं खा गए कीड़े ।
तन ते नहीं तेरे लीड़े ।
भुक्खां ने खूब नपीड़े ।
रोंदे ने बाल ओए ।
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।
बणदे ने तेरे लीडर
राजे ते खान बहादर ।
तैनू ते खावण खातर
विछदे ने जाल ओए ।
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।
हिंद है मंदिर तेरा, इसदा पुजारी ओए ।
झेलेंगा अजे कद तक होर खुआरी ओए ।
मरने दी कर लै हुण तूँ, छेती तियारी ओए ।
मरने तों जीणा भैड़ा, होके बेहाल ओए ।
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।
मन्नदी ना गल्ल साडी, भैड़ी सरकार ओए ।
असीं क्यों मन्नीऐ वीरो, एसदी कार ओए ।
होके इक्कट्ठे वीरो, मारो ललकार ओए ।
ताड़ी दोहथड़ वज्जे, छातियां नूं तोड़ ओए ।
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।
लिख लिख चिट्ठियां, ऐवें नूं घल्लियां ,
मुड़ हो गईआं लोको सभ तरथलियां।
जिहड़ी कीती सी पिछों हाल ओ हाल ओए।
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।
साडियां गल्लां भोह दे मुल्ल ओए,
जाता ना सानूं साडे लाट ने भुल्ल ओए
कीता ना किसे साडे दुक्ख दा खियाल ओए
पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए ।

वायरस : एक डर पैदा करने वाला सूक्ष्म जीव।

–नवमीत

खासतौर पर आज के समय में। कोरोना महामारी के चलते माहौल ऐसा बन गया है कि वायरस नाम सुनते ही होश उड़ जाते हैं। हालांकि हम बहुत लंबे समय से वायरसों के साथ रहते आये हैं। यहां तक कि वायरसों ने हमारी जेनेटिक संरचना को भी आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यह ठीक है कि बहुत से वायरस बीमारियां करते हैं। लेकिन सभी वायरस हमें बीमार नहीं करते।

तो ?

तो क्या? अलग अलग वायरस अलग अलग जीव की अलग अलग कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं।

हाँ ये तो पता है। ये कोई नई चीज नहीं है। कुछ नया बताओ।

वायरस सजीव और निर्जीव के बीच का जीव है जो बिना होस्ट के निष्क्रिय रहता है लेकिन जैसे ही इसे खास होस्ट कोशिका मिलती है तो यह उस कोशिका को संक्रमित करके उस कोशिका के अंदर मौजूद पदार्थो की मदद से द्विगुणित होने लगता है और.....

अरे अरे रुको। यह सब पता है। लॉक डाऊन के दौरान ये सब पढ़ चुका हूँ। नई चीज बताओ।

अब नई चीज कैसे बनाऊं? ज्यादातर चीजें तो विज्ञान के जानकार और छात्र पहले ही जानते हैं। मैंने पढ़ा था कि कुछ वायरस बैक्टीरिया को भी संक्रमित कर देते हैं। ऐसा सम्भव है क्या? बैक्टीरिया तो खुद दूसरे जीवों को संक्रमित करते हैं।

तुमने सिंक्लेयर लुईस का उपन्यास ऐरोस्मिथ पढा है होगा? उस उपन्यास का नायक एक वायरस की खोज करता है जो प्लेग के बैक्टीरिया को मार सकता था। लेकिन फिर उसे पता चलता है कि यह खोज तो पहले ही हो चुकी थी।

यह एक बेहतरीन उपन्यास है। एक ईमानदार मेडिकल शोधकर्ता और डॉक्टर को अपना काम करने के लिए किन परेशानियों से रूबरू होना पड़ता है।

हाँ वही। तो जिस वायरस का इसमें जिक्र है, वह वही वायरस है। इसे हम बैक्टिरियोफेज कहते हैं। या फिर सिर्फ फेज। फेज वायरस का वह समूह होता है जो जीवित रहने के लिए अलग अलग बैक्टीरिया को इन्फेक्ट करता है।

लाखों करोड़ों साल से सूक्ष्म दुनिया में एक महायुद्ध चल रहा है जिसमें हर रोज अरबों खरबों जानें जाती हैं?

अरबों खरबों? ऐसा क्या युद्ध है?

एक कहानी सुनाता हूं।

... बहुत पुराने समय से धरती पर एक नन्हा सा जीव रह रहा है। बैक्टीरिया से भी नन्हा। लेकिन इसके छोटे होने का मतलब इसका मासूम होना बिलकुल भी नहीं है। यह जीव दुनिया का सबसे बड़ा हत्यारा है। महासागरों में मौजूद कुल बैक्टीरिया के 40 फीसदी को यह रोज मार डालता है।

बैक्टीरियोफेज ?

हां यही। यह एक बहुत छोटा सा जीव होता है। इसका एक सर होता है जिसकी 20 सतहें और 30 किनारे होते हैं। सर के अंदर इसका जेनेटिक पदार्थ (डीएनए या आरएनए) होता है। एक लंबी पूंछ होती है और पूंछ के अंत में धागे जैसी टांगें। धरती पर जितने भी सूक्ष्म और स्थूल जीव हैं उन सबकी कुल संख्या से ज्यादा बैक्टीरियोफेज की संख्या है। ये हर उस जगह मिलते हैं जहां उनका भोजन यानि बैक्टीरिया मिलता है। हमारे मुंह, फेफड़ों, आंतों, पलकों और त्वचा में भी।

फिर तो ये हमें नुकसान पहुंचाते होंगे?

नहीं। ये सिर्फ बैक्टीरिया को खाते हैं। विशेष तरह के फेज विशेष तरह के बैक्टीरिया या कभी कभी साथ में उस विशेष बैक्टीरिया के बहुत नजदीकी संबंधी किसी बैक्टीरिया को संक्रमित करते हैं।

तो क्या यह हमारे दुश्मनों के दुश्मन हैं?

मतलब थोड़ा कम्प्लिकेटेड रिलेशन है। लेकिन फिलहाल के लिए ऐसा ही समझ लो। तो जब कोई विशेष

प्रजाति के फेज को अपने विशेष शिकार यानि विशेष प्रजाति का बैक्टीरिया मिल जाता है तो यह अपनी धागे जैसी टांगों की मदद से उस बैक्टीरिया पर मौजूद रिसेप्टरों से चिपक जाता है और मिनटों में उस बैक्टीरिया की कार्यप्रणाली पर कब्जा कर लेता है। तब यह अपनी जेनेटिक सूचना उस बैक्टीरिया के शरीर में डाल देता है और उस बैक्टीरिया की मशीनरी और कच्चे माल की मदद से अपनी कॉपियां बनाना शुरू कर देता है।

यह तो किसी हॉरर फिल्म का सीन लग रहा है।

उस बैक्टीरिया के लिए तो यह साक्षात मृत्यु है। जब बैक्टीरिया की पूरी कोशिका फेज की कॉपियों से भर जाती है तो फेज एक एंजाइम एंडोलाइसिन उस कोशिका में छोड़ देता है जो उस कोशिका की दीवार में छेद कर देता है और बैक्टीरिया की यह कोशिका एक फूले हुए गुब्बारे की तरह फट जाती है। वायरस की बहुत सारी कॉपियां बिखर जाती और एक एक नया वायरस नए बैक्टीरिया पर टूट पड़ते हैं। फिर से यही कहानी दोहराई जाती है। ऐसा पिछले करोड़ों साल से हो रहा है।

फिर तो यह हमारे काम आ सकते हैं। बैक्टीरिया के इन्फेक्शन से लड़ने के लिए। नहीं?

हाँ! आ सकते हैं। लगभग 90 साल पहले 1928 में एलेग्जेंडर फ्लेमिंग ने पहली एंटीबायोटिक पेनिसिलिन की खोज की थी। उसके बाद से बैक्टीरिया के खिलाफ एंटीबायोटिक दवाएं हमारा ब्रह्मास्त्र रही हैं। लेकिन अब स्थिति बदलने लगी है। लगातार बढ़ रही एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति जीवाणुओं की प्रतिरोधक क्षमता एक चुनौती है। यह प्रतिरोध यानि रेजिस्टेंस इतना बढ़ रहा है कि एक अनुमान के अनुसार 2050 में रेजिस्टेंट बैक्टीरिया की वजह से मरने वालों की संख्या कैंसर की वजह से मरने वाले लोगों से ज्यादा हो जाएगी। फेज हमें इस तरह के बग से बचा सकते हैं।

अब ये सुपर बग क्या बला है?

सुपर बग वह बैक्टीरिया है जिस पर किसी भी एंटीबायटिक दवा कोईअसर नहीं होता।

ओह। यह तो बहुत खतरनाक है।

हाँ बहुत ज्यादा। तो कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर हम स्पेसिफिक फेज को अपने शरीर में डाल लें तो यह स्पेसिफिक बैक्टीरिया को खत्म कर सकता है।

यह तरीका सुरक्षित रहेगा? मतलब कोई खतरा तो नहीं। हम अपने शरीर में वायरस डाल रहे हैं।

फेज सिर्फ बैक्टीरिया को खाते हैं। इंसानी कोशिकाएं इनसे पूर्णतया इम्यून होती हैं। दूसरी बात ये कि एंटीबायोटिक दवाएं शरीर में मौजूद हर तरह के उन बैक्टीरिया को मार देती हैं जो उसकी मारक क्षमता के दायरे में आते हैं। भले ही वह बैक्टीरिया हानिकारक हो या लाभदायक।

लाभदायक बैक्टीरिया? ऐसा भी होता है क्या?

हाँ। उनकी कहानी फिर कभी। फिलहाल के लिए इतना ही। तो एंटीबायोटिक दवाएं लाभदायक बैक्टीरिया को भी नष्ट कर देती हैं। लेकिन फेज ऐसा नहीं करेगा। विशेष तरह का फेज विशेष तरह के बैक्टीरिया को ही नष्ट करेगा।

यह तो कमाल की बात है। कभी यह ट्राई भी किया गया है?

असल में एंटीबायोटिक दवाओं के पहले वैज्ञानिकों ने अपना ध्यान इसी दिशा में केंद्रित किया था। सोवियत संघ में 1923 में फेज थेरेपी शुरू की गई थी। लेकिन एंटीबायोटिक दवाओं के आने के बाद पश्चिमी और अन्य देशों में इसे लगभग भुला दिया गया। हालांकि पूर्वी यूरोप और पूर्व सोवियत संघ के देशों में आज भी फेज थेरेपी को मान्यता प्राप्त है। इसके समर्थकों का कहना है कि फेज थेरेपी से हम अधिकतर रेजिस्टेंट बैक्टीरिया को नष्ट कर सकते हैं। बहुत से वैज्ञानिक इससे अभी भी सहमत नहीं हैं। लेकिन पश्चिमी देशों में इसके ट्रायल शुरू हो चुके हैं जो अभी पहले चरण में चल रहे हैं। अभी तक के रिजल्ट अच्छे रहे हैं। बाकी देखते हैं कि भविष्य में ऊंट किस करवट बैठता है।

ऊंट के करवट बैठने का बैक्टीरियोफेज से क्या सम्बन्ध है?

कुछ नहीं। तुम ये बताओ कहानी कैसी लगी?

गतांक से आगे

बुवाबाजी (बाबागीरी)

–डॉ॰नरेन्द्र दाभोलकर

बुवाबाजी के विरुद्ध संघर्ष क्यों ?

ढकोसलों को जीवन में स्थान देने का मतलब अंधविश्वास के खतरे को मोल लेना है। जहां पर प्रत्यक्ष शोषण होता है, वहां पर लोग इस बात को मानते हैं। आज भी गांवों के लोग काला जादू, भानमती के विषय को लेकर एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं। खून खराबा होता है। हजारों रुपयों की क्षति भी होती है। इसे रोकना जरूरी हो गया है। देश में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं की बहुत कमी है। इसके विरुद्ध आवाज उठाने की बजाय लोग दैवी इलाजों के जरिए अपना शारीरिक और मानसिक नुकसान तो कर ही लेते हैं, साथ ही समाज में एक गलत संदेश भी पहुंचाते हैं। मानसिक बीमारियों के कारण तो और भी गंभीर हालात पैदा होते हैं। 'मन बीमार होता है' की बात देश के लोग हजम नहीं कर पाते और व्यक्ति के 'विचित्र व्यवहार' को 'बाहर की पीड़ा' समझा जाता है। स्वाभाविक रूप से इस पीड़ा का इलाज बाबा, बुवा और गुरु के पास ही किया जाता है। अमूल्य समय, बुद्धि, पैसा एवं स्वास्थ्य तक की बरबादी हो जाती है। मरीज ठीक होने की बजाय और बीमार हो जाता है। जीवन की निरर्थकता की भावना से पीड़ित महिलाएं बाबा के भुलावे में आ जाती हैं। परिणाम स्वरूप उनके चरित्र पर आंच आ जाती है। ढकोसले के कारण पहले ही अंधिविश्वासी बना मन और भी बौरा जाता है। प्रारब्ध, नियति, दैवी दंड जैसी कल्पनाओं का प्रभाव सामाजिक जीवन पर गहराई से पड़ता है।

'गुनाहों का देवता' बने बाबा की व्यवस्था में संचित धन, सत्ता जनसंचार माध्यम एवं गुंडों को आतंक स्वस्थ सामाजिक जीवन को हानि पहुंचाता है। राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिनिधि जब बाबा को साष्टांग नमस्कार करते है। तब जनतंत्र ही धोखे में आ जाता है। यह यथार्थ है और इससे जो मनसिक गुलामी फैलती है, वह अधिक गंभीर समस्या बनती है। प्रत्येक बाबा, गुरु, स्वामी अपने अनुयायी को आश्वस्त करते हैं कि 'तुम्हारी भलाई किस बात में है, यह तुम नहीं, मैं जानता हूं। बिन आशंका के मेरी शरण में आ जाओ। मुझ पर श्रद्धा रखो, सब कुछ ठीक हो जाएगा।' ऐसा आश्वासन हर व्यक्ति को अपने बचपन में माता-पिता से मिलता है क्योंकि सभी स्तरों पर वह उन पर ही निर्भर होता हैं जैसे वह बड़ा होने लगता है, वैसे आत्मनिर्भर बनने लगता है। व्यस्क होने पर भी अगर वह जीवन के फैसले दूसरों के विचारों से लेने लगे तो फिर यही मानना पड़ेगा कि उसकी अब तक की परवरिश में कुछ कमी रह गई है। इस तर्क के आधार पर कह सकते हैं कि जो गुरु भक्त अपने शिष्य को दृष्टि देता है उसे अपने पैरों पर खड़ा करता है। जीवन में संकटों का सामना करने की हिम्मत देता है, वह सच्चा निःस्वाथ गुरु होता है। लेकिन जो गुरु भक्त के जीवन की सार्वकालिक जिम्मेदारियां लेने का दावा करता है वह भक्तों को कमजोर बना देता है। उसे मानसिक पंगु बना देता है। इसका एक कारण गुरु-महिमा का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी हैं 'गुरु शिष्य की आशंकाओं को मूल से ही नष्ट कर देता है। उसके भय को दूर भगा देता है। उसे जीवन-मृत्यु के चक्र से मुक्त करता है। ऐसे गुरु के दर्शनमात्र से ही वासना एवं विकार छूट जाते हैं और अक्षय आनंद मिलता है।' लेकिन यह सब गुरु करता कैसे है ? इस प्रश्न के उत्तर में तीन मार्ग बताएजाते हेंः (1) ध्यान, प्राणायाम, मंत्र जैसे आध्यात्मिक मार्ग, (2) बौद्धिक स्तर पर सत्संग, (3) गुरु की इच्छाशक्ति एवं उसके आस-पास का वलय, गुरु के निमित होने वाले दैवी सपंदन आदि। इसमें सच क्या है ? व्यक्ति हर रोज, हर पल आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक शोषण का सामना करता है। वहां पर योग, ध्यान और मंत्र कुछ काम नहीं आते। शायद उनसे मन को कुछ क्षणों तक शांति मिले लेकिन दुख का निवारण नहीं होता। कथित गुरु, स्वामी एवं बाबा के सत्संग के विचार असंगत एवं आशास्त्रीय होते हैं। उनके आस-पास कोई दैवी वलय, कोई स्पंदन नहीं होता

जो लोगों की बीमारियां ठीक कर सके। स्पष्टतः ऐसे निरर्थक विचारों को फैलाना साधुत्व का ढोंग है।

बुवा और बाबा के संदर्भ में अध्ययन करने पर कौनसा चित्र सामने आता है? इस देश में संत-महात्माओं ने धर्म के माध्यम से मानवता एवं करुणा का मार्ग बताया और कृति भी की। बुवा, बाबा, गुरु, संत साहित्य का उपयोग अपनी सुविधा के लिए करते हैं। मुंह से संतों की वाणाी का खुश्क उच्चारण करने वाले ये लोग बड़े मतलबी और आत्मकेंद्रित होते हैं। उनका रहन-सहन मानो व्यक्ति की महिमा बढ़ाने वाला तंत्र ही होता हैं बाबा के भक्त विशिष्ट रंगों के वस्त्र पहनते हैं। गले में मालाएं पहनते हें। सीने पर गुरु की छवि वाला बिल्ला लटकाकर घूमते हैं। जेब से लटकी कलम पर भी बाबा का फोटो होता हैं गुरु इन लोगों को जो छोटा-मोटा मंत्र देते हें, उन्हें वह जीवन का उद्धार करने वाले सांकेतिक वचन लगता है। यह माहौल लोगों में एकता का निर्माण करता हैं उसमें संतोष एवं सामर्थ्य होता है। धीरे-धीरे भक्त इस माहौल के आदी हो जाते हैं। एकाध इस माहौल से थोड़ा बाहर जाने की कोशिश करता है तो उसे चौखट से बाहर न झांकने की हिदायत दी जाती है। यह सब कुछ एक खुफिया माहौल तैयार करता हैं बाबा या साधु आश्रम में रहते हैं, आश्रम चाहे नरेंद्र महाराज का हो या स्वयं को भगवान मानने वाले ओशो का, प्रक्रिया समान ही होती है। इस प्रक्रिया में अटके लोगों को एकमात्र भक्ति ही जीवन का अंतिम कर्तव्य लगती है। गुरु का विरोध करना महापाप समझा जाता है। विरोधी दुर्जन लगते हैं और उनका सर्वनाश पुण्य का काम माना जाता है। उन के अनुग्रह से जीवन का कल्याण होगा और संसार रूपी भवसागर को पार किया जा सकेगा, ऐसे संदेश भक्तों के मन पर कुरेदे जाते हैं। तब भक्त एक कट्टर सैनिक बन जाता है। गुरुगीरी के ढकोसले मानो अभेद्य चक्रव्यूह बन जाते है। इसे मजबूत बनाने के लिए निरंतर ब्रेन वाशिंग एव कंडिशनिंग जारी रहती हैं भक्त सम्मोहित होते हैं। ऐसी अवस्था में उनकी चौकन्नी वृत्ति शिथिल हो जाती है। गुरु बाबा पर तीव्र भक्ति और प्रीति के कारण सम्मोहन की अवस्था में भक्त शीघ्र ही पहुंचते हैं। संवेदनाओं के भ्रम तैयार होते हैं। आस-पास कुछ न होते हुए भी चंदन की खुशबू आने लगती हैं देवताओं के मधुर स्वर कानों में गूंजने लगते हैं। भाग्यवान भक्तों को अपने महाराज के रूप में देवता के दर्शन होते हे। दैवी साक्षात्कार का गवाह बनने का पुण्य लाभ ही होता है। बाबा के शब्द मानो मोक्ष का मार्ग खोल देते हैं। मंत्रमुग्ध कर देने वाले वातावरण में तल्लीन हुए भक्तों से एक ही संदेश मिलता है, 'हमारे जीवन की पूरी जिम्मेदारी बाबा ने ली है, यह भाग्य खुल जाने के संकेत हैं। जीवन की सारी चिंताएं मिट गई है। सुख, शांति, संतोष, संपन्नता के महाद्वार खुलने वाले हैं। बाबा के आशीर्वाद से हमें एक ही समय में भैतिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, पारलौकिक अधिकार प्राप्त हो गए हैं।

अनिस चमत्कारों का विरोध करती है क्योंकि वे उपयुर्यक्त मानसिकता के निर्माण में कलियुग का नारद बनते हैं, ऐसे भक्तों को विवेकाकनंद का उदाहरण देना चाहिए। अमेरिकन अखबारों ने विवेकानंद से चमत्कार दिखाने की विनती की। उसका इनकार करते हुए विवेकानंद दहाड़े, 'मैं कोई चमत्कार दिखानेवाला जादूगर नहीं। पंचेद्रियों को अजब लगने वाली घटनाएं घटती रहती हैं जो प्रकृति के नियमानुसार होती हैं। मंत्रमुग्ध मन की समझ में ये खेल नहीं आते। लेकिन सुशील लोग ऐसे झमेंलों में न हीं पड़ते।'

ढकोसले और चमत्कारों का शिकार बना मन मानसिक गुलामी को जन्म देता है। भारतीय समाज की रचना अथवा व्यवस्था मूलतः दैववाद की बुनियाद पर खड़ी है। कोई भी छोटा-बड़ा संकट उनके लिए भाग्य का फेर होता है। लोग मानते हैं कि दैवी शक्ति को प्राप्त किए बाबा हमें संकटों से मुक्ति दिलाएंगे। समस्याओं का मुकाबला करने की बजाय चमत्कार के अंधविश्वासी लोग ढकोसले की और मुड़ते है। हमारा समाज ईश्वर, अनिष्ट रूढ़ियों , कर्मकांडों जैसे अंधविश्वास के चक्रव्यूह में फंसा हुआ है। इसीलिए वह संवेदनाशून्य एवं डरपोक बन गया है। आत्मविश्वास के साथ, प्रयत्नों के साथ एकाध समस्या का सामना करना अथवा साहस से किया कर्तव्य को पूरा करना इन लोगों के बस में नहीं होता। कठिन यथार्थ से डरकर लोग अपनी बुद्धि और स्वाभिमान को ओझा-गुनी या बाबा के पास गिरवी रख देते हैं। बाबा का प्रभावी हथियार, चमत्कार ही होता है। इसीलिए समाज को स्वाभिमानी, प्रयत्नवादी एवं निडर बनाने के लिए उनके चमत्कारों

का विरोध करना जरूरी है।

धर्म और परंपरा की मान्यता है कि यह चमत्कार सिद्धि के कारण संभव होते हैं। ऐसी सिद्धि बाबा को उनकी शक्ति से प्राप्त होती है, लेकिन हमारी धर्म परंपरा यह भी कहती है कि इन सिद्धियों के मोहजाल में नहीं फंसना चाहिए, उनकी उपासना नहीं करनाी चाहिए, क्योंकि यह बहत क्षुद्र होती है। संत-महात्माओं ने भी बहुत बार सचेत किया है कि सिद्धि-चमत्कार के मायाजाल में जो फंस जाएगा, उसकी अवनति होगी। जिनके मन में सच्चा धर्म भाव है, वे हमेशा से ही चमत्कार के विरोधी रहे हैं। संत साहित्य ने हमेशा ही ऐसे लोगों को दुत्कारा हैं जो चमत्कारों के जरिए शिष्यों की भीड़ जमा करते हैं, ऐसे चमत्कार करनेवाले गुरु से दूर रहने के लिए कहा गया है। पल भर के लिए मान लेते हैं कि हाथ से सोने की अंगूठी अथवा चेन निकालने वाले सत्या साईं बाबा के पास अद्‌भुत शक्ति थी तो यह प्रश्न हम पूछ सकते हैं कि आर्थिक समस्याओं से घिरे अपने देश के लिए उन्होंने क्या किया? एकाध वर्ष बारिश न होने के कारण अकाल पड़ जाता है। कभी अधिक बारिश होने से बाढ़ आती है, ऐसे समय बाबा अपना चमत्कार क्यों नहीं दिखाते? अकाल पड़ने पर बारिश लाना और बाढ़ आने पर उसे रोक देने का चमत्कार क्यों नहीं किया जाता है? अपनी इस दैवी शक्ति का उपयोग वे कभी लोककल्याण अथवा समाज हित के लिए नहीं करते; अर्थात् ऐसी कोई क्षमता इन बाबाओं में नहीं होती है। ऐसे लोगों से दूर रहना ही अक्लमंदी है क्योंकि धर्म के आचरण से इनका कोई संबंध नहीं।

चमत्कारों को माननेवाले लोग धर्म की ओर क्यों जाते हैं? वे वासना और स्वार्थ का त्याग करने के लिए नहीं जाते। उदात्त और पवित्र होने के लिए भी वे नहीं जाते; बल्कि उन्हें किसी लोभ की आवश्यकता होती है। किसी को नौकरी की इच्छा होती है, किसी को नौकरी से पदोन्नति की इच्छा होती है। कोई काले धन से निर्दोष छूटना चाहता है। अपने दुष्कृत्यों की टीस लोगों के मन में हमेशा बनी रहती है। पाप के कारण होने वाले लाभ का त्याग नहीं किया जाता, लेकिन विवेकबुद्धि की टीस से मुक्त होने के लिए लोगों को बाबा और बुवा के पास जाना आसान और सुरक्षित लगता है। अपनी दैवी शक्ति का करिश्मा दिखानेवाले बाबा तथा उच्च आध्यात्मिक उद्‌घोषणा करने वाले बाबा लोगों के अधिक समीप होते हैं। यह मानना गलत है कि धार्मिक प्रवृत्ति के लोग ढकोसले के पीछे चलते हैं। इसके विरुद्ध नैतिकता की दृष्टि से अधार्मिक भक्त अपनी भ्रष्टता को सुरक्षित रखने के लिए बाबा या साधुओं के पीछे पड़ते हैं। इस प्रकार भ्रष्ट मानसिकता का ढकोसले के माध्यम से पोषण होता है।

भारतीय संविधान में यह स्पष्ट किया गया है कि 'प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, शोध बुद्धि, सुधारवाद एवं मानवतावाद का प्रसार करे।' वैज्ञानिक दृष्टिकोण का यह विश्वास होता है कि समूचा विश्व कार्य-कारण भाव से बद्ध है। शोधक बुद्धि का अर्थ सजग दृष्टि से यथार्थ की ओर देखना है, अथवा उसके लिए प्रयत्न करना हैं सुधारवाद का अर्थ है, जो परंपरा से हो रहा है, उसके आधुनिक दृष्टि से जायजा लेकर उसमें निहित वैयक्तिक और सामाजिक हित जैसी बातों का चयन करना। मानवतावाद का अर्थ बंधुत्व की वैश्विक भावना है। भारती संविधान का बताया हुआ है कर्तव्य और ढकोसले के कारण पनपी मानसिकता एक-दूसरे असंगत है। इसका अर्थ यह है कि ढकोसले की शरण में जानेवाला मन अपने संवैधानिक कर्तव्य को टालता है

बाबा और बुवा के ढकोसलों के साध बने चमत्कारों का विरोध करने पर उनके समर्थकों को संत महात्माओं के किए चमत्कार याद आते हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व जो बातें हुई, उनका कोई प्रमाण आज उपलब्ध नहीं है, इसीलिए उनकी शास्त्रीय जांच-पड़ताल भी असंभव हैं ऐसे चमत्कारों के संदर्भ में उन्हें 'सत्य' समझकर महत्व देना असंगत है। ऐसा समझने वालों को निम्नलिखित विचारों पर गौर करना चाहिए।

आधुनिक काल के संत तुकडोजी महाराज ने चमत्कारों के दुष्परिणामों को बताने की कोशिश इन शब्दों में की हैः

चमत्कारों के पीछे पड़कर, अनेक हो गए हैं बरबाद,
हे सज्जनों,
अब न करो किसी चमत्कार का वर्णन। गांव में आकर,
भोले-भाले लोगों के पीछे पड़कर, ये ढोंगी इन्हें लूटते हैं
लोग प्रयत्नों का मार्ग छोड़ते हैं। थोड़े से लाभ चाहते हैं।

चमत्कारियों के भुलावे में आकर अनेक हो गए हैं बरबाद!

चमत्कारों पर विश्वास करना और उसे प्रेरित करने वाले बाबा एवं बुवा को सराहने में नुकसान यही है कि लोग प्रयत्न और पुरुषार्थ से विश्वास खो बैठते हैं। वे दूसरों की हाल भी ऐसी ही बनाते हैं। चमत्कारों के संदर्भ में यह पलायनवादी भूमिका बिलकुल स्पष्ट नज़र आती है। चमत्कारों से व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में केवल नुकसान ही होता है। ऐसी परिस्थिति में चमत्कारों को साबित करने की जिम्मेदारी, उसके दावेदार बुवा-बाबा पर ही सौंपनी चाहिए। तब भारतीय संविधान द्वारा बताया हुआ वैज्ञानिक दृष्टिकोण बिलकुल आसानी से सामान्य जनता समझ पाएगी। तभी यह समझ में आएगा कि कार्य-कारण भाव को छोड़कर कोई चमत्कार नहीं होता। चमत्कारों के जरिए साधुत्व का ढोंग करने वाले, गुरुगीरी रचाने वालों को भी झटका लगेगा। लोगों की वर्तमान ढकोसलों को माननेवाली प्रवृत्ति चिंताजनक है। विडंबना यह है कि आडंबर एवं ढकोसलों को चुनौती देने वाली महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति को ही अपराधियों के कठघरे में खड़ा किया जाता है। ऐसे में फिर अंधविश्वास उखाड़ने के लिए कानून बनाने की बात लोगों को नहीं जंचती।

मनुष्य का सबसे करारा शास्त्र उसकी बुद्धि है। मानवीय संस्कृति का विकास उसकी प्रज्ञा के विकास से संबद्ध रहा है। 'बुद्धि से जांच लूंगा और साबित होने पर ही मान लूंगा'- यह शास्त्रीय दृष्टिकोण की प्रतिज्ञा होती हैं उस प्रतिज्ञा को भुलाकर ही चमत्कारों पर विश्वास किया जा सकता है। चमत्कारों को स्वीकार करना मानसिक गुलामी की शुरुआत होती है। ढकोसले के कारण यह गुलामी और भी मजबूत होती है। एक उदाहरण के जरिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि ढकोसलों को माननेवाले लोगों के विचार कितने मजेदार हैंः

तरडगांव, जिला सतारा (महाराष्ट्र) में रहनेवाला विलासबाबा पानी से आग जलाकर यज्ञ करता था। सिक्कों से विभूति पैदा करता था। उसके इस चमत्कार को सरेआम घोषित करने के लिए हमने उसके विरोध में उसके ही गांव सभा का आयोजन किया। भारी भीड़ जमा हो गई। हमने चमत्कारों के प्रयोग शुरू किए। पानी से आग जलाई, सिक्कों से विभूति निकाली। अन्य चमत्कारों की ओर मुड़ने से पहले ही विलास बाबा के पचासों भक्तमंच पर दौड़ते आ गए और चिल्लाए, 'आप जो कर रहे हैं, वे मामूली प्रयोग है। रासायनिक पदार्थों का थोड़ा-सा ज्ञान रखने वाले स्कूल के बच्चे भी ये प्रयोग कर सकते हैं। विलासबाबा की बात अलग है, उनके चमत्कार दैवी शक्ति के कारण होते हैं।

ऐसा स्पष्टीकरण आगे की बात को अपने आप स्पष्ट करता है।

सत्य साई बाबा एवं अन्य ऐसे बाबों-महाराजों की अपेक्षा जादूगर सौ गुना प्रभावी चमत्कार दिखाते हैं, लेकिन इस वजह से कोई उन्हें महाराज समझकर उनके पैर नहीं छूता। जीवन के प्रश्नों का उत्तर उनसे कोई नही पूछता। जादूगर मनोरंजन करने वाला कलाकार होता है। उसके चमत्कार ही उसकी कला का आविष्कार होते हैं। लेकिन चमत्कार करने वाले बाबा एवं बुवा की बात ही अलग होती है। खाली हैट से जिंदा खरगोश निकालने वाले जादूगर के पापी पेट का सवाल होता है। लेकिन अपने ही खाली हाथ से थोड़ी विभूति निकालने वाला बाबा परम पूजनीय होता है। बाबा के दिए हुए चुटकी भर भस्म से जीवन की मनोकामनाएं पूरी हो जाएंगी, ऐसा भ्रम भक्त अपने मन में पालते हैं। कोर्ट में मुकदमे का सामना करते समय अपराधी के कठघरे में खड़ा भक्त बाबा की विभूति लेकर खड़ा रहता है। इधर-उधर देखकर चुपचाप पलक झपकते उस विभूति को फूंक देता है। उसका मन कहता है कि विभूति के दो कणों के फरियादी के गवाह तक पहुंचने से उसकी गवाही अपने पक्ष में आ जाएगी। दो कण वकील तक पहुंच जाएं तो उसका विरोध अथवा प्रतिवाद प्रभावी नहीं रहेगा और बाबा के पावन स्पर्श से प्राप्त उस विभूति का एक कण भी जज तक पहुंचेगा तब तो वह केस ही जीत जाएगा। लेकिन इन सभी ख्यालों का प्रमाण क्या है? एकाध व्यक्ति अच्छा भाषण देता है, इसका मतलब यह नहीं कि वह अच्छा गाना गाता है अथवा नृत्य करता है। ऐसा कहना जितना निरर्थक है, उतनी ही अर्थशून्यता भस्म को दैवी शक्ति का प्रतीक मानने में है। लेकिन इन प्रश्नों को पूछना मना है क्योंकि ढकोसलों के प्रभाव से बनी मानसिक गुलामी मनुष्य की बुद्धि को पंगु, कमजोर और अंधा बना देती है। इसकी गिरफ्त में आए मनुष्य का व्यक्तित्व टूट

जाता है। वह बुवा, बाबा, स्वामी और गुरु की अलौकिक शक्ति के हाथ में अपने आपको सौंप देता है। मनुष्य जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण बुद्धि-वैभव, निर्णय-क्षमता, विवेकी विचारों की क्षमता ढकोसले के पास गिरवी पड़ जाते हैं। व्यक्ति पराश्रित बन जाता है। आखिकार परिवतर्न की लड़ाई बहुत कठिन बन जाती है। कोई भी बाबा अथवा बुवा समाज-व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन की बात नहीं करता। स्वयं की शरण में भक्त आ जाए, ऐसा आदेश देता है। वह भक्तों के कल्याण का मार्ग बताता है। भक्तों के लिए बाबा का शब्द ब्रह्मवाक्य और नैतिक होता है। विरोध में बोलने वालों के लिए धमकी से लेकर मारपीट तक के मार्ग अपनाए जाते हैं। अपने आश्रितों को उनके कल्याण का आश्वासन दिया जाता है। उनके लिए सिर्फ एक शर्त रखी जाती है कि वे अपनी बुद्ध का इस्तेमाल न करें। इस प्रकार ढकोसले के सभी पंथ, उपपंथ फासीवाद के लिए अनुकूल आधार निर्मित करते हैं।

ढकोसले के विरुद्ध संघर्ष महाराष्ट्र में कोई नई बात नहीं है। सन् 1935 में महाराष्ट्र में किर्लोस्कर मासिक बहुत चर्चित हो गया था। उसके जरिए ढकोसले के विरुद्ध 'ढकोसले का सर्वनाश' संघ स्थापित किया गया। उस संघ के सदस्यों को दिए जाने वाले प्रवेश पत्र का नमूना ऐसा था-'मेरे समाज में बुवा एवं महाराज के पीछे दीवाने स्त्री-पुरुषों की संख्या बहुत है। ये बुवा जल्द ही बुवाशाही को पैदा करते हैं जो मनुष्य को निष्क्रिय बनाता है। लोग बुवा की कृपा से सब कुछ प्राप्त करने की होड़ में शामिल होते हैं, जबकि बुवाशाही समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में बाधा बन जाती हैं वह पूरी तरह से नष्ट हो जाए, ऐसा मेरा मनना है, इसीलिए मैं इस संघ का सदस्य बनने जा रहा हूं।'

मनुष्य और पशु में आहार, निद्रा, भय और मैथुन की प्रेरणाएं समान हैं। मनुष्य के पास पशु से अधिक बुद्धि नामक प्रकृतिक देन है, जिसे हम विवेक कहते हैं। यह मनुष्य को भले-बुरे का ज्ञान देता है। लेकिन ढकोसले में अटका व्यक्ति स्वयं ही अपनी बुद्धि की हत्या करता है, उसमें और पशु में कोई अंतर नहीं रह जाता। 'मुद्राराक्षस'नाटक में आर्य चाणक्य ने कहा है कि, 'मेरे सगे-संबंधी चले गए, लोभी बनकर आए लोग चले गए, सैनिक गए, धन गया, कोई परवाह नहीं, लेकिन मेरी बुद्धि मुझे धोखा न दे।' हमारे देश में धर्म और समाज के क्षेत्र में बौद्धिक गुलामी अधिक थी और आज भी उतनी ही है। परंपरा से चली आ रही चीज ठीक है, उसके संदर्भ में तथा अन्य बातों के संदर्भ में आशंका न हो फिर सुधार की बात क्या खाक की जा सकती है? कोई भी परिवर्तन ईश्वर के अवतार से ही होगा, ऐसी अवतारवाद की भावना समाज में दुढ़ है। इसीलिए अपनी करनी से ही कुछ प्राप्त करने की बजाय स्वतंत्र प्रज्ञा को त्याग कर किसी विभूति की शरण में जाने का ऐब समाज में व्याप्त है। ऐसी विभूतियां बुवा, स्वामी, गुरु के रूप में मौजूद हैं। लोग भी अपने परिवार एवं राष्ट्र को उपेक्षित रख कर अपना तन-मन बाबा के पास गिरवी रखते हैं। बाबा-बुवा और उनकी बिरादरी में बुद्धि-हत्या की ऐसी फैक्टरियां खुली हुई हैं उससे समाज में कैसे बचेगा, यह एक सामाजिक प्रश्न है। बहुसंख्य बाबा बताते हैं कि जग मिथ्या है, माया है, क्षणिक है, तो फिर समाज के प्रति जिज्ञासा रखकर क्या होगा? ऐसे में अपने आप निरर्थकता की मानसिकता बढ़ती है; साहस और उत्साह शेष नहीं रहता; दैववाद और अधंविश्वास का बोलबाला रहता है। अन्याय के प्रति चिढ़, प्रतिकार करने की तीव्र इच्छा, परिवर्तन की पुरुषार्थी वृत्ति ढकोसले में ही तल्लीन है।

साधुत्व के ढोंग से दूर रहने के लिए ऐसा संकल्प करना चाहिए कि मैं अपने आत्मविश्वास को खोने नहीं दूंगा। मेरे प्रश्नों को सुलझाने का मार्ग वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विवेकवाद ही दे सकता हैं सर्वसासमान्य नीति-संकेतों का पालन करने से आचरण निर्विवाद बनता है। अपनी ही मर्यादा में रहकर, इन्सानियत के आधार पर धीरज के साथ जीने में ही मनुष्य की प्रतिष्ठा है। स्वयं साधुत्व के ढकोसले से दूर रहने में ही जीवन की सार्थकता है। जो गुरू अथवा बाबा भक्तों के सभी प्रश्नों उत्तर देने की आजीवन जिम्मेदारी लेता है, वह उसे अज्ञान एवं अंधकार की खोह में धकेल देता है। सच्चा गुरु भक्त को आत्मनिर्भर बनाता है, संघर्ष में लड़ने की हिम्मत देता है। उसे सजग एवं मजबूत बनाता हैं अपनी विवेक-बुद्धि के रूप में ऐसा गुरु प्रत्येक मनुष्य के पास होता है, जो ढकोसले से और गुरुगीरी के आडंबर से हमें मुक्ति दिलाता है।

सफदर हाशमी की याद में

–मुनेश त्यागी

हमारे देश का एक प्रख्यात वामपंथी रंगकर्मी सफदर हाशमी यानि एक प्रख्यात निर्देशक, सशक्त लेखक, युवा कवि, सशक्त पेंटर, विद्वान युवा सिध्दांतकार, मजदूरों का चहेता, हमदर्द, एक बेहतर इंसान, 2 जनवरी 1989 को मजदूरों के लिए न्यूनतम वेतन की मांग को लेकर गाजियाबाद के साहिबाबाद में नुक्कड़ नाटक 'हल्ला बोल' खेल रहा था, को मार डाला गया।

12 अप्रैल 1954 को एक कम्युनिस्ट परिवार में जन्मे सफदर छोटी सी उम्र में ही साम्यवादी विश्व दृष्टि और मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारधारा से परिचित हो चुके थे। सफदर ने वर्ष 1973 में जन नाट्य मंच की स्थापना की, कई विश्वविद्यालय में पढ़ाया, पश्चिमी बंगाल सरकार में सूचना केंद्र में सूचना अधिकारी रहे। वर्ष 83 में वहां से इस्तीफा देकर कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए और थोड़ी सी अवधि में ही जन नाट्य मंच को सांस्कृतिक आंदोलन की ऊंचाइयों पर बुलंद कर दिया .

उन्होंने नाटक यानी नुक्कड़ नाटक को सामाजिक और राजनीतिक बदलाव का माध्यम माना, इसलिए वे नाटक को सभा ग्रहों से निकाल कर सड़क पर ले गए। सफदर के लिए कला लोगों के लिए बेहतर जिंदगी के लिए लड़ने का चाक था। उनका नारा था 'बेहतर विचारधारा बेहतर नाटक'।

उन्होंने रोजमर्रा की ज़िंदगी में आने वाली समस्याओं पर नाटक लिखे और खेले व्यक्तिगत प्रतिभा को विकसित करने के लिए प्रोत्साहन दिया । उन्होंने कहा 'सीखने की प्रक्रिया को हमेशा जारी रखो'। सफदर फूहड और बेढंगे नाटकों के एकदम खिलाफ थे ।

शासक वर्ग पहले भी और आज भी दूसरों को अपनी बात जनता तक पहुंचाने से रोक रहा है। सफदर ठीक यही काम जन जागृति के लिए नुक्कड़ नाटक के माध्यम से कर रहे थे। उनकी हत्या कर दी गई। उन्होंने बोलने की आजादी पर अंकुश स्वीकार नहीं किया। जनता के दुख, पीड़ा, उम्मीद और आकांक्षा को उठाने के लिए सीधे जनता से संवाद किया।

सफदर कहा करते थे कि एक कलाकार की रक्षा जागरुक, सचेत और चेतनाबध्द जनता ही कर सकती है, अतः जनता को सचेत जागरूक और चेतनाबद्ध बनाया जाए। 2 जनवरी 1989 को ठीक यही काम करते हुए यानि नुक्कड़ नाटक खेलते हुए, अपनी कार्यशैली से शहीदों की पांतों में शामिल हो गए।

सफदर के सहयोग से जनम के नाटकों, 'मशीन', 'औरत', 'गांव से शहर तक', 'राजा का बाजा', 'हत्यारे', 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' ,'अपहरण भाईचारे का', ने पूरी राजधानी तथा देश के कई हिस्सों में धूम मचा दी। मजदूरों के लिए ' हल्ला बोल' लिखा और सांप्रदायिक तत्ववादी और फूटपरस्त ताकतों के खिलाफ सांप्रदायिक सद्भाव समिति का गठन किया और 'अपहरण भाईचारे का' नाटक लिख कर सांप्रदायिक ताकतों के प्रश्नों का जवाब दिया और इसका जवाब देने के लिए जनता का आह्वान किया ।

सफदर ने टेलिफिल्म की स्क्रिप्ट लिखी, गीत गाए, कविता और गीत लिखे, संस्कृति रंगमंच और फिल्मों पर लेख लिखे, क्रांतिकारी कविताओं और नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया। जनता की मुक्ति के कार्यक्रम से प्रतिबद्ध होकर जनता की बेहतरी का ख्वाब देखा और काम किया। जनवादी क्रांति के लिए लिखा, पढा, गाया और संघर्षरत रहे और सदैव आंदोलनरत रहे ।

आज भी उनके ख्वाब, काम और आदर्श अधूरे हैं, जनता की बेहतरी मंजिल से दूर है, जनता को अभी मुक्त होना है। आइए इस अभियान में शामिल हो और कहेंः

क्या जुल्मतों के दौर में भी गीत गाए जायेंगे ?
हां, जुल्मतों के दौर के ही गीत गाए जायेंगे।

शहीद भगतसिंह के शहादत दिवस पर विशेष

भीमराव या भगतसिंह ? बुद्ध या कार्ल मार्क्स ?

-का. श्याम सुंदर

मो. 9812132302

डाक्टर भीमराव आम्बेडकर एक उच्च कोटि के विद्वान पुरुष थे। उनका जन्म 14 अप्रैल सन् 1891 में हुआ था और उनके दादा मालो जी ब्रिटिश सेना में हवलदार थे। भीमराव को प्राथमिक स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए भी उनके दादा को काफी कठिनाइयों से गुजरना पड़ा, क्योंकि उस जमाने में अछूत जातियों के बच्चों के लिए तथाकथित उच्च जाति के बच्चों के साथ पाठशालाओं में प्रवेश पर मनाही थी। लेकिन फिर जिस स्कूल में उन्हें प्रवेश मिला, वहांएक ब्राह्मण अध्यापक का, बालक भीमराव के साथ इतना स्नेह हो गया कि उन्होंने अपना कुलनाम भी भीमराव के नाम के साथ लगा दिया और फिर तभी से बालक भीमराव, भीमराव आम्बेडकर हो गया। उक्त ब्राह्मण शिक्षक भीमराव को अपने साथ दोपहर को खाना भी खिलाते थे और अपने ऐसे शिक्षक के स्नेह को भीमराव भी जिंदगीभर भुला नहीं सके। दसवीं कक्षा पास करने के बाद भीमराव को बड़ौदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ की ओर से 20 रुपए प्रति माह की छात्रवृति मंजूर की गई और उन्होंने उसके बाद कालेज में प्रवेश लिया और बी.ए. पास करने के बाद बड़ौदा रियासत की सेना में लेफ्टीनेंट हो गए। लेकिन इस नौकरी से वे संतुष्ट नहीं थे, वे आगे पढ़ना चाहते थे। भीमराव को बड़ौदा नरेश की मदद से उच्च शिक्षा हेतु अमेरिका जाने का अवसर प्राप्त हुआ और फिर उन्होंने एमए, पीएचडी, डीएससी, एलएलडी, डीलिट, बैरिस्टर एट लॉ आदि उच्च डिग्रियां हासिल की। शिक्षा क्षेत्र में इतनी डिग्रियां उस वक्त तक शायद ही भारत के किसी नेता या व्यक्ति ने हासिल की होंगी। अछूत और दलित जातियों पर उस समय में कितना अत्याचार था, डा. भीमराव उसके भुगतभोगी थे। दलितों के प्रति उस घोर असमानता को समूल नष्ट कर डालने के लिए उनके हृदय में आग धधक उठी थी, लेकिन असमानता और अभाव के विरुद्ध दिल में आग का धधक उठना एक बात है और उसके खात्मे के लिए अनिवार्य तौर पर वांछित वैज्ञानिक समझ दूसरी बात है, जिसके अभाव में महज दिल में जली आग संघर्ष को अंजाम तक नहीं पहुंचा सकती। शोषणविहीन, समता-मूलक समाज की स्थापना डा. आम्बेडकर के जीवन का सबसे बड़ा सपना था। लेकिन ऐसे समाज की स्थापना के लिए उन्होंने कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक चिंतन को ठुकराकर महात्मा बुद्ध के गैर-वैज्ञानिक, धार्मिक मार्ग को अपनाया, यही उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी थी। वे महात्मा बुद्ध को साम्यवाद का जनक मान बैठे थे। बुद्ध द्वारा स्थापित किए गए भिक्षु-संघ ही उनके लिए साम्यवाद का आदर्श नमूना थे। उन्होंने भिक्षु-संघों को ही समाज व्यवस्था समझ लिया था, जबकि बुद्ध द्वारा स्थापित किए गए तमाम भिक्षु-संघ, भिक्षा-वृत्ति पर आधारित भिक्षुओं के मठ थे। भीख अथवा दान से संग्रह की गयी संघ की सम्पत्ति का यह नियम था कि वह संपत्ति सामूहिक रूप से समूचे संघ की संपत्ति होगी। उस पर किसी एक भिक्षु का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होगा, लेकिन जिसे समाज-व्यवस्था कहा जाता है, उसका भीख पर आधारित होना असंभव है, क्योंकि समाज-व्यवस्थाएं, उत्पादन के आधार पर निर्मित होती हैं, भीख के आधार नहीं। यदि उत्पादन पर आधारित समाज-व्यवस्था न हो तो उसमें न तो कोई भिखारी हो सकता, न भिक्षु और न ही किसी प्रकार का भिक्षु-संघ। बुद्ध के भिक्षु-संघों में रहने वाले भिक्षुओं के बीच कोई उत्पादन संबंध नहीं थे। न तो संघ में कोई मजदूर था, न किसान, न स्वामी, न दास और न ही जीवन-निर्वाह के साधनों का उत्पादन। इसलिए भिक्षु-संघों के भीतर किसी प्रकार के शोषण अथवा असमानता को गायब कर देना पूर्णतः संभव था। जबकि भिक्षु-संघों के बाहर विद्यमान समाज-व्यवस्था पूर्णतः राजा-प्रजा, स्वामी-दास, साहूकार और कर्जदार एवं शोषक-शोषित आदि संबंधों से पटी पड़ी थी।

बुद्ध का धर्म तत्कालीन समाज-व्यवस्था में विद्यमान शासकों-शोषकों के विरुद्ध किसी विद्रोह का हथियार नहीं था, बल्कि शोषक-शोषितों की उस व्यवस्था को कायम रखने के लिए ही एक उपाय साबित हुआ। तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी और गुलामी के खिलाफ बुद्ध का कोई कार्यक्रम नहीं था।

बुद्ध के समय में साहूकारों को यहां तक अधिकार प्राप्त था कि यदि कर्जदार अपने कर्ज को चुकाने में असमर्थ हों तो वेउनके शरीर को खरीद लें। ऐसी स्थिति में यदि कोई कर्जदार अपने साहूकार से बचने के लिए भिक्षु-संघ में प्रवेश पाने के लिए आता था तो साहूकारों के विरोध के बचने के लिए बुद्ध ने नियम बना दिया था कि कर्जदार का संघ में प्रवेश वर्जित होगा। इसी प्रकार यदि कोई दास अपने स्वामी के अत्याचारों से बचने के लिए भागकर बुद्ध-संघ की शरण में आता तो उसके लिए भी यह नियम बना दिया गया था कि किसी भी दास का उसके स्वामी की आज्ञा के बिना संघ में प्रवेश वर्जित होगा। मगध के राजा बिंबिसार भी बुद्ध के अनुयायी थे और बिंबिसार के सैनिक जब युद्ध से भागकर बुद्ध की शरण में आने के लिए प्रार्थना करते तो ऐसे सैनिकों के लिए भी नियम बना दिया गया था कि राजा की अनुमति के बिना संघ में उनका प्रवेश वर्जित होगा। अतः स्पष्ट है कि बुद्ध का धर्म दासों, कर्जदारों और प्रजा के हितों का पोषक नहीं बल्कि साहूकारों, स्वामियों, सामंतों औ राजाओं के हितों का पोषक था। मार्क्स ने तो अपनी खोजों से दिखाया था कि गरीबी और विषमता, सम्पति के निजी स्वामित्व के जरिए, सम्पति से वंचित कर दिए लोगों यानी दासों, मजदूरों और अन्य मेहनतकशों के आर्थिक शोषण का परिणाम हैं तथा अन्य सभी असमानताएं इसी का परिणाम हैं लेकिन बुद्ध ने समाज को शोषक और शोषित दो विपरीत वर्गों के रूप में नहीं देखा था, बल्कि कहा था कि संसार में दुख ही दुख है और दुख का कारण है। लेकिन उन्होंने इस दुख के कारण की खोज, व्यक्तियों के अपने-अपने कर्मों अथवा कार्यों की श्रृंखला के नतीजे के तौर पर ही देखा। किसी एक दास के दुखों अथवा उसके दासत्व का कारण उन्होंने दासों के स्वामियों को नहीं माना। यदि वे ऐसा मानते तो अवश्य ही दास-स्वामियों, साहूकारों, सामंतों और राजाओं आदि के खिलाफ कोई कार्यक्रम बनाते। बुद्ध के अपने काल में और उनके बाद में भी अशोक और हर्षवर्धन जैसे अनेक राजाओं, सेठों, साहूकारों और सामंतों ने बौद्ध धर्म को अपनाया और विश्वभर में अपने दूतों-प्रचारकों को भेजकर उसकी वृद्धि का बीड़ा उठाया था। खुद डा. भीमराव जी भी क्योंकि बचपन से ही बौद्ध धर्म के आकर्षण में आ चुके थे। इसलिए उनको पढ़ाने-लिखाने और उच्च कोटि के विद्वान बनाने में, बड़ौदा रियासत के राजा गायकवाड़ ने भी उन्हें भरपूर आर्थिक सहायता प्रदान की थी। क्या कार्ल मार्क्स के किसी सच्चे अनुयायी को भी कोई राजा अथवा सेठ-साहूकार ऐसी ही मदद देने को तैयार होता?

बौद्ध धर्म अथवा बौद्ध दर्शन यदि समानता स्थापित करने का दर्शन होता तो जन्मजात बौद्ध, माओ त्सेतुंग को मार्क्सवादी दर्शन को अपनाने की कोई आवश्यकता न पड़ती। और चीन एक बौद्ध देश होने के नाते यदि समानता और साम्यवाद पर आधारित होता तो वहां मार्क्सवाद के आधार पर कोई क्रांति करने की भी जरूरत न होती। लेकिन माओ त्सेतुंग ने मार्क्सवाद का मार्ग अपनाया। उन्होंने चीन के मजदूरों-किसानों को बौद्ध धर्म के आधार पर संगठित होने का नारा नहीं दिया। चीन में किसानों का शोषण करने वाले सामंत भी तो खुद बौद्ध थे और चीन पर हमला करने वाला जापान भी तो एक बौद्ध देश था। भारत में भी यदि तमाम मजदूर-किसान अथवा दलित बौद्ध बन जाएं तब भी तो वर्तमान पूंजीवादी शोषण उत्पीड़न से मुक्ति संभव नहीं है। बौद्ध होने के बाद भी उन्हीं भौतिक परिस्थितियों में यदि जीवन गुजारना पड़े तो फिर बौद्ध होने या न होने से क्या फर्क पड़ता है? खेद की बात है कि मजदूरों और दलितों की मुक्ति के हथियार मार्क्सवाद के प्रति बाबा साहेब ने वही रुख अपनाया जो गांधीजी ने अपनाया था। पूंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि महात्मा गांधी को मार्क्सवाद में वर्ग-संघर्ष के कारण हिंसा दिखाई देती थी और मार्क्सवाद में उसी हिंसा और वर्ग-संघर्ष को अनुचित बताते हुए तथा वर्ग-संघर्ष के बिना ही साम्यवाद की स्थापना का सपना लेकर बाबा साहेब भी बौद्ध बन गए थे और उन्होंने दलितों को वर्ग-संघर्ष की बजाए संदेश दिया, 'शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो।' परंतु प्रश्न यह है कि शिक्षा कैसी हो? संगठन का स्वरूप और संघर्ष की विचारधारा कैसी हो? संगठित कौन-कौन हों और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष किस वर्ग या किन-किन वर्गों के विरुद्ध

हो ?

इन तमाम बुनियादी प्रश्नों के उत्तर में डा. आम्बेडकर का कहना है कि 'उनके द्वारा' बनाए गए संविधान के तहत यदि दलित और पिछड़े तबकों के लोग अपनी एक सही पार्टी बनाकर, चुनाव में बहुमत हासिल करते हुए सत्ता पर काबिज हो जाएं तो फिर शोषण को मिटाना तथा समता-मूलक समाज की स्थापना संभव है। उनका कहना था कि सरकार, सत्ता की कुंजी होती है और सत्ता की शक्ति से ही तमाम किस्म के अत्याचार व शोषण खत्म किए जा सकते हैं। डा. भीमराव ने 'अपने द्वारा' रचित संविधान के विषय में संविधान सभा के समक्ष प्रस्तुत करते हुए सन् 1948 में कहा था कि,'. ...यदि संविधान का सही प्रकार से अनुसरण नहीं हो पाया तो यही कहना होगा कि दोष संविधान का नहीं है, अपितु इंसान में बसे अवगुणों का माना जाएगा।' प्रश्न है कि ऐसे किसी संविधान का शोषित-पीड़ित और दबे-कुचले लोगों के लिए मूल्य ही क्या है, जिसके उनके हित में लागू किए जाने के लिए कोई गारंटी ही न हो? डा. आम्बेडकर का यह दावा नितांत खोखला है कि संविधान तो देश की आम जनता के लिये सही है पर सवाल उसके लागू करने या न करने का है। सवाल है कि क्या यह संविधान जिन 'साम्यवादी' भिक्षु-संघों के भीतर लागू होने वाले नियमों की बात डा. भीमराव करते हैं, उन्हीं नियमों के आधार पर बनाया गया है? भिक्षु-संघों में तो व्यक्तिगत संपत्ति सामूहिक संपत्ति पर आधारित थे। क्या डा. आम्बेडकर का बनाया हुआ यह संविधान सामूहिक सम्पत्ति पर आधारित है? क्या यह संविधान व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आधारित नहीं है? भिक्षु-संघों में लागू होने वाला व्यक्तिगत सम्पति रहित, समता-मूलक बुद्ध के साम्यवाद का वह आधारभूत सिद्धांत बाबा साहेब ने 'अपने' संविधान से गायब क्यों कर दिया? क्या ऐसे मजदूरों, दलितों और मेहनतकशों के हित में किया गया अथवा शोषक पूंजीपति वर्ग के हित में? क्या यह डा. आम्बेडकर की कथनी और करनी का अंतर नहीं है कि बात तो करें बुद्ध के व्यक्तिगत सम्पति रहित साम्यवादी भिक्षु-संघ की और आचरण करें व्यक्तिगत सम्पत्ति पर आधारित पूंजीपति वर्ग के हितपूर्ति के संविधान निर्माण का? स्पष्ट है कि डा. भीमराव आम्बेडकर का बनाया हुआ संविधान न तो कार्ल मार्क्स के साम्यवाद पर आधारित है और न ही बुद्ध के। ऐसे में बाबा साहेब द्वारा बुद्ध और कार्ल मार्क्स के विकल्प में से बुद्ध को चुन लेने का क्या अर्थ रह जाता है? असलियत यह है कि भारत के शोषक पूंजीपति वर्ग ने अपने शोषण और शासन का संविधान बनाने के लिए दलितों और मजदूरों के मसीहा कहे जाने वाले डा. आम्बेडकर का इस्तेमाल भर किया, ताकि इस देश के दलितों, मजदूरों और मेहनतकशों को एक लंबे समय तक पूंजी के खिलाफ विद्रोह से दूर रखा जा सके। बाबा साहेब के तथाकथित समता के संविधान की पोल तो उन्हीं के जीवनकाल में खुल चुकी थी। तिथि 11 अक्तूबर 1951 में पटियाला में दिए गए भाषण में उन्होंने खुद स्वीकार किया था किः'...मैंने गांधी जी के सामने एक साधारण सा प्रश्न रखा था। मैंने उनसे कहा था कि हम अपने देश को मिलने वाली आजादी के खिलाफ हरगिज नहीं हैं परन्तु हम उनसे इतना जरूर जानना चाहते हैं कि उस 'स्वराज' में अनुसूचित जाति के लोगों की हालत और हैसियत क्या होगी? न तो गांधी जी ने मेरे इस प्रश्न का कोई उत्तर दियाथा और न किसी अन्य व्यक्ति ने। मैं उसी प्रश्न को आज सारे सवर्णो के सामने रख रहा हूं। वर्तमान 'स्वराज' तो उन्हीं का राज या स्वराज है, हम लोग तो अभी भी उन्हीं के गुलाम हैं। हमारी गुलामी कोई हमारी अपनी इजाद नहीं है बल्कि उन्हीं की गढ़ी हुई करतूत है। यह हमारे दोष का परिणाम तो कतई नहीं है। अगर हम इज्जत के साथ इन्सानों की तरह जीना चाहते हैं तो जरूरी है कि हम अपने ही पैरों पर खड़े हों।'

यानी बाबा साहेब के संविधान के लागू होने के बाद भी न तो दलित अपने पैरों पर खड़े हो सके और न ही उन्हें स्वराज मिला और न ही उनकी गुलामी के बंधन टूटे। तो फिर उन्होंने ऐसा संविधान बनवाने में पूंजीपति वर्ग के हाथों अपना इस्तेमाल क्यों होने दिया? 25 नवम्बर 1949 को संविधान सभा में, जब वे संविधान के तीसरे पठन की चर्चा पर उठे सवालों का जवाब दे रहे थे तो उन्होंने जोर देकर कहा थाः'तीसरी अहम बात है कि हमें केवल राजनैतिक प्रजातंत्र से ही संतोष नहीं कर लेना चाहिए। हमें यह कोशिश लगातार करनी चाहिए कि यह प्रजातंत्र हमारे सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में पूरी तरह समा जाए। अर्थात् प्रजातंत्र केवल राजनैतिक ही नहीं, आर्थिक और सामाजिक भी होना चाहिए।' (वसंत मून डा. बाबा

साहेब आम्बेदकर, अध्याय 49)

लेकिन हमारा भारतीय प्रजातंत्र जो बाबा साहेब के संविधान पर आधारित है, महज एक राजनैतिक जनतंत्र बन कर ही रह गया क्योंकि यह जनतंत्र ऐसे संविधान और सत्ता द्वारा रक्षित है जिस में पूंजीपति वर्ग को, श्रमिकों के श्रम को लूटने की छूट है। क्योंकि यह संविधान राष्ट्रीय संपदा पर निजी स्वामित्व की रक्षा करता है। निजी संपत्ति पर आधारित संविधान और सत्ता के होते हुए समाज के आर्थिक जीवन में प्रजातंत्र का प्रवेश असंभव होता है; जब तक कि मजदूर वर्ग खुद अपनी सत्ता कायम न कर ले और जब तक वह तमाम राष्ट्रीय संपदा को समाज के सामूहिक स्वामित्व की परिधि में न ले आए। 29 जनवरी 1944 को दलित फैडरेशन के दूसरे सालाना जलसे को संबोधित करते हुए डा. बाबा साहेब ने दलित नौजवानों का इस संदेश से आह्वान किया था किः'...दलित नौजवानों को अपनी सारी शक्ति फैडरेशन को सहारा देने में लगानी चाहिए। इससे अंग्रेजी हुकूमत को भी अस्पृश्यों के न्यायोचित अधिकारों को नजरअंदाज करना संभव नहीं हो सकेगा। दलितों को दूसरे दर्जे की नागरिकता अस्वीकार कर देनी चहिए। उन्हें दास की तरह जीना और व्यवहार करना त्याग देना चाहिए और मालिक की तरह जीना चाहिए।' (वही, अध्याय 42)

प्रश्न है कि आज आजाद भारत में जिसका संविधान खुद बाबा साहेब ने बनाया है क्या दलित समुदाय मालिकों की तरह जीवन जी रहा है? यदि ऐसा नहीं हुआ तो क्या बाबा साहेब का व्यक्तिगत मालिकाने का रक्षक और पक्षधर संविधान ही इसके लिए प्रधान कारण नहीं है, क्या राष्ट्रीय सम्पत्ति में सहभागी होने से वंचित कर दिए तमाम मेहनतकश लोगों का मालिकों की तरह जीवन जीना संभव है? 'मालिक' होने का मायने ही होता है साधनों का मालिक अथवा नियंत्रक। आज देश के मजदूर महज इस कारण से मालिकों की तरह नहीं जी सकते कि देश का संविधान, देश की सम्पदा और साधनों के सामूहिक स्वामित्व पर आधारित नहीं हैं सामाजिक असमानता का आधार आर्थिक होता है। इस बात को बाबा साहेब असल में समझ ही नहीं पाए। सामाजिक असमानता वाले धर्म ब्राह्मणवाद का जन्म आर्थिक परिस्थितियों के विकास के एक स्तर में हुआ था जब खून-खराबे के जरिए इस प्रकार के ब्राह्मणवादी श्रम-विभाजन ने अपनी सत्ता कायम की थी जिसके अवशेष आज तक कायम हैं। आज भी दलित जातियों के लोगों को तथाकथित ऊंची जातियों के लोगों द्वारा तरह-तरह की प्रताड़नाएं दी जाती हैं, उन्हें अपमानित किया जाता है। अभी पिछले कुछ समय में ही ऐसी दो बड़ी घटनाएं अखबारों में आ चुकी हैं। हरियाणा के जिला भिवानी के एक गांव में एक दलित युवक को 'दबंगों' द्वारा उसकी शादी में हाथी की पीठ पर चढ़ने से जबरन रोक दिया। उत्तर प्रदेश जहां बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो, दलित की बेटी सुश्री मायावती, मुख्यमंत्री थीं, एक दलित युवक की इस कारण से हत्या कर दी गई कि उसने अपने नाम के पीठे 'ऊंची जाति' की पहचान वाला उपनाम लगाया हुआ था। दलित की बेटी यदि देश की प्रधानमंत्री भी बन जाए, तो भी दलितों पर इस प्रकार के अत्याचार की घटनाएं रुकने वाली नहीं हैं। डा. बाबा साहेब ने अनेक जगह दोहराया है कि दलित वर्ग को राजसत्ता पर कब्जा करना चाहिए, लेकिन उनका इससे मतलब वर्तमान पूंजीवादी राजसत्ता के होते हुए सिर्फ सरकार बनाने अथवा उनमें हिस्सेदारी करने का है। जबकि दलितों और मजदूरों की सत्ता केवल तभी कायम हो सकती है, जब दलित, मजदूर और गरीब किसान संगठित होकर खुद अपने अंदर से ताकत पैदा करते हुए देश के तमाम साधनों और शासन-व्यवस्था को अपने हाथ में ले लें। लेकिन बाबा साहेब यह नहीं चाहते थे कि ऐसा हो, क्योंकि यह पूंजीपति वर्ग के खिलाफ बिना बल-प्रयोग के संभव नहीं। और बाबा साहेब शोषित वर्ग द्वारा अपने शोषण से मुक्ति के लिए बल-प्रयोग के विरोधी थे, क्योंकि यह बुद्ध के सिद्धांतों के खिलाफ हो जाता और कम्युनिज़्म का स्वीकार करना हो जाता। जुलाई 1951 में डा. आम्बेडकर ने इंडियन बुद्धिस्ट सोसाइटी की स्थापना की और उसके थोड़े दिन बाद लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामने हिंदुओं को सचेत करते हुए डा. आम्बेडकर ने कहा थाः'यदि देश कम्युनिस्ट हो जाता है तो फिर इस देश का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा। यदि हम सारे कश्मीर को नहीं बचा सकते तो कम से कम अपने बंधुओंको तो बचा लें।' (वसंत मून की पुस्तक, अध्याय 52 से)

साभार-'शहीद भगत सिंह लक्ष्य और विचारधारा' में से

23 मार्च पुण्य तिथि पर विशेष

धार्मिक समाधि

पाश

शहीद 'पाश' को जन-मानस में ज्यादातर एक जुझारू कवि के रूप में जाना जाता हैं। परन्तु उन्होंने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का कितना गम्भीर अध्ययन किया हुआ था, उनका यह पक्ष जनमानस के सामने बहुत कम आया है। कविता जिन्दगी में जहां भावुक पक्ष को प्रस्तुत करती है, वहीं विज्ञान जिन्दगी में तार्किक पक्ष को पेश करता है। पाश की कविता ने जहां बुंलदियों को छुआ है उनका गद्य पक्ष भी विश्लेषण करने की उनकी सामर्थ्य का बेजोड़ नमूना है। 'पाश' को इस बात का अहसास था कि वैज्ञानिक चिन्तन का हमारे समाज में बेहद अभाव है, अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उन्होंने हरदयाल स्टडी सेंटर बनाया, अध्ययन के लिए पुस्तकें इकट्ठी कीं और आपस में गहन विचार विमर्श किए और इस आधार पर जो विचार बने उन्हें 'पाश' ने गद्य के रूप में लिखकर 1980 से 1985 तक 'हाक' नाम के अखबार में छापकर लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया, जिसे 1988 में उनकी शहादत के पश्चात तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा अपनी पत्रिका के माध्यम से लोगों के सामने दोबारा लायी गयी। यह रचना उन्हें स्मरण करते हुए तर्कशील के पाठकों के लिए 'पाश' की पुण्यतिथि पर विशेषतौर पर अनुवाद करके प्रकाशित की जा रही है। *–**संपादक मण्डल***

समाधि के धार्मिक संकल्प के बारे में :-

धार्मिक लोगों से आपने समाधि लगाना, धार्मिक लोगों के लिए भी यह गोरखधंधा ही है, प्राचीन ऋषियों ने इस की खोज जंगलों की एकान्त पहाड़ी गुफाओं में की थी। उस समय विज्ञान एवं मनोविज्ञान नही था। भाषा की सामर्थ्य बहुत ही कम थी, प्रत्येक मानसिक अनुभव को भाषा के द्वारा ब्यान करना असम्भव था, इसलिए समाधि वाली मनोस्थिति को अलग किस्म का होने के कारण ऋषियों को काफी असमंजस की स्थिति में डाले रखा । मध्यकाल के प्रारम्भ में पातंजलि ऋषि के योग मत पर भारतीय समाज के एक चिन्तक वर्ग ने फिर काफी अभ्यास किया तथा गोरखनाथ, मछंदरनाथ, चौरंगीनाथ आदि ने रुहानी अभ्यास के शिक्षण संस्थान शुरू किए ।

हिन्दु फिलासफी अपने विकास के अन्तर्गत जिन छः दर्शन प्रबन्धो में से निकली है, सभी रुहानी मत थे, परन्तु पहले तीन मतों में तपस्या, ध्यान, समाधि का काफी जोर रहा है आत्मा एवं मन के बारे में इन दर्शनों में विभिन्न प्रक़ार के विचार हैं, जैसे सांख्यमत के अनुसार मन एवं उसके विचार या संकल्प के बनने की व्याख्या इस प्रकार है :-

''संसार में दो चीजों का स्वतन्त्र अस्तित्व है - प्रकृति (पदार्थ) तथा पुरश्य (आत्मा) प्रकृति में सत्योत्मा के तीन गुण पैदा होते हैं प्रकृति एवं पुरश्य के मेल में बुद्धि पैदा होती है। बुद्धि से अंहकार पैदा होता है, अंहकार में पांच इन्द्रियाँ, पांच क्रियाएँ और एक (अनुभव-क्रिया का यौगिक) मन कुल ग्यारह चीजें पैदा होती हैं और कुल 24 नियम है, जिन कारण चीजें पैदा होती है और कुल इन 24 नियमों का ज्ञान होने तक बार-बार जन्म होता रहता है।'' सारा ब्रह्मण्ड मनुष्य के अंदर ही मानकर'' स्वयं को जानने का दर्शन है और स्वयं को जानने के आठ रास्ते हैंः

(1) संयम (2) अनुशासन (3) आसन (4) प्राणायाम (5) इन्द्रियों के अनुभव को इकट्ठा करना (6) मन की जड़ता (7) ध्यान की एकाग्रता (8) समाधि ।''

सांख्यमत संसार प्रक्रिया की सोच संरचना बारे धर्म का पहला विचार प्रबन्ध था और योग (हठ योग) मत का मानस मन को मुक्त दशा तक पहुंचाने का एक मात्र प्रबन्ध । आज भी कई लोगों

के मन में वे ही पुराने धार्मिक अभ्यासों के संकल्प और विधियां बैठी छुपी हैं .... (प्राप्त पाण्डूलिपि में कुछ शब्द मिटे हुए हैं-संपादक) क्रिया प्रणाली और मानसिक रोग की संरचना के बारे में जानकारी प्राप्त करना मनोविज्ञान का क्षेत्र था, और उसने ही जीव-विज्ञान का आधार बनाकर इस का पता लगाया । इस लेख में विज्ञान एवं मनोविज्ञान द्वारा की गयी खोजों पर आधारित व्याख्या ही की जायेगी ।

अनुभव की संरचना :- भक्ति एवं रुहानी अभ्यास के बारे में समझने के लिए अनुभव की संरचना को समझ लेना अत्यावश्यक है। जीव विज्ञान के विद्यार्थी यह जानते है कि हमारे दिमाग में लगभग दस बिलियन नर्व सेल (कोशिकाएं) और सौ बिलियन सपं सैल एक छोटी से बायोलोजीकल बैटरी के रूप में है और कुछ मात्रा में बिजली की धारा पैदा करने योग्य हैं। पांच ही प्रकार के अनुभव दिमागी नाड़ियों के अन्दर विद्युतीय तंरगों के द्वारा संचारित होते है, इन तरंगों की गति लगभग 100 मीटर प्रति सैकिण्ड होती है, परन्तु बिजली के इलैक्ट्रॉनो का बिजली की तार में चलना अलग तरह से है और इन्द्रीय प्रभावों का दिमागी नाड़ियों में चलना थोड़ा अलग और जटिल है। इलैक्ट्रान तार के अन्दर पदार्थ के एटमों के रूप में मौजूद होते है, जबकि इन्द्रीय अनुभव शरीर से बाहर पकड़े जाते हैं। तार में विद्युतीय एक दूसरे को धक्का देते हुए जगह बनाते रहते हैं, परन्तु मस्तिष्क की नाड़ियाँ तार की तरह साधारण एवं एकसार नहीं है, प्रत्येक नाड़ी विभिन्न प्रकार के तंतुओं से निर्मित है, एक नर्व सैल के समाप्त होने से पहले और दूसरे के प्रारम्भ होने में 0.0000005 सैंटीमीटर का फासला होता है, यह फासला सिनैपसिज और नर्व सिरों का न्यूरोनज कहा जाता है, जब इन्द्रीय प्रभाव संदेश न्यरोनों के जोड़ो वाली जगह तक एक आवेश के रूप में प्रवेश करता है, उससे आगे जाने की आवश्यकता नहीं होती। दिमागी संदेश के द्वारा उस सिरे से सिनेपासिज में एक खास तरल रसायन टपकाया जाता है, जो अगले नाड़ी कोष में जाता है और उस नाड़ी सैल में से भी आवेश संचारित होकर अगले न्यूरीन तक जाता है, वहां से फिर उसकी ग्रन्थि से रसायन टपक कर आगे फिर बिजली तरंग पैदा करता है, इस संदेश की यह यात्रा एक मिली सैकंड में पूरी हो जाती है, इस तरह हमारे शरीर में एक अनुभव संचारित होता है, बिजली रसायन यात्रा की ''समाधि'' आदि में कैसे और क्या भूमिका बनती है, इसे आगे प्रस्तुत किया गया है।

समाधि की मनोस्थितिः

योग मत का पांचवा, छठा, सातवां पड़ाव एकाग्रता से संबंधित है। एकाग्रता मन में तनाव की एक स्थिति को कहते है अर्थात एक भावना या विचार को समक्ष रखके समस्त मानसिक क्रियाएं केन्द्रित कर लेना । यह एक किस्म का तनाव ही एकाग्रता कहलाता है, जिससे आगे तनाव मुक्त स्थिति या त्मसंगंजपवद में जाया जा सकता है, यह तनाव मुक्त अवस्था आनन्दपूर्ण एवं रहस्यमयी प्रतीत होती है, इसी अवस्था को धार्मिक लोग मोक्ष की प्रथम स्थिति, मंजिल आदि समझते हैं (और इसी प्रकार की मनोस्थिति बनाने हेतू नाम दान आदि की दुकाने चलती रहती है। -सं0)

इस अवस्था तक पहुंचने के लिए भक्तजन आत्म सम्मोहन (ैमसf भ्लचीवजपेउ) करते हैं, यह एक तकनीक है जिसके कि योग मत की तरह आठ पड़ाव है, ध्यान-लगाने (Meditation) के लिए सब से पहले योग वाले चार ढंग ही शारीरिक तैयारी के लिए किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं, फिर आगामी तीन पड़ावों में आत्म सम्मोहन का अभ्यास किया जाता है और इन पड़ावों में होते मानसिक भ्रम अलौकिक कहे जाते हैं। अनुभव की संरचनाः-

मानवीय अनुभव दो तरह के हैं एक बाह्यमुखी (Subjective) दूसरे अन्तर्मुखी , बाहयमुखी अनुभव तथ्यों पर आधारित होते हैं, यानि एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त अनुभवों का निरीक्षण किया जा सकता है अन्तर्मुखी अनुभव तथ्यपूर्ण नहीं होते, इनकी अन्य व्यक्ति पुष्टि नहीं कर सकता, इनकी गवाही सिर्फ अनुभव किया व्यक्ति ही देता है। जैसे अगर एक बच्चा, जिसे बिस्तर पर पेशाब करने की आदत है, गहरी नींद में सपना देखता है कि वह बिस्तर से उठा, और बाथरूम में जाकर पेशाब कर आया, अब अगर उसका बिस्तर तत्काल बदल दिया जाए तो वह यह बात मानने को तैयार नहीं होगा कि उसने

बिस्तर गीला किया है, परन्तु उसका सच तथ्यों पर आधारित नहीं है, यह उसका अन्तर्मुखी अनुभव है, निरीक्षण करने पर सचाई सामने आ जाएगी । इसी तरह समाधि की अवस्था में बने अनुभव भ्रम कहलाते हैं, उसको विश्वास की कसौटी पर नही परखा जा सकता ।

अन्तर्मुखी अनुभवों में भ्रमों की किस्में :-

मानसिक भ्रमों के तीन रूप हैं, जो भक्ति, रुहानी अभ्यास, समाधि के समय पैदा होते हैं।

1. इलूजन (Illusion) यह ऐसा भ्रम है जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा गलत प्रभाव लेकर दिमाग को गलत सूचना प्रेषित कर देता है, पांच ज्ञानेन्द्रियों के अनुभव भी पांच किस्म के हैं जैसे गर्मी के मौसम में सड़क पर पानी का भ्रम होना । Indian Goose Berry खाने के पश्चात साधारण पानी भी मीठा लगना, सिनेमा पर्दे पर तस्वीरों का चलते फिरतेदिखना।जादूगरों, धर्मगुरूओं द्वारा हवा में से चीजें पैदा करके दिखाना भी एक प्रकार का इलूजन है। जहां कहीं भी डा. काव्वूर जैसे साहसी वैज्ञानिकों ने निरीक्षण किया है, सब जगह धोखा ही पाया है। इसी प्रकार सूंघने स्पर्श करने के भी कई बार भ्रामक अनुभव प्राप्त होते हैं।

2-हेलिऊसीनेशन (Hallucination) यह मनोभ्रम ज्यादातर भक्तजनों को होता है, मनोविज्ञान में यह नाम उस नकली अनुभव को दिया गया है जो शारीरिक रसायनिक-जीव-विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक कारणों से दिमागी क्रियाओं में आए बेढंगेपन के कारण पैदा होते हैं, जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि इन्द्रीय के कारण पैदा होते है, और इन्द्रीय आवेश प्रत्येक नाड़ी तंत्र के सिरे (न्यूरीन) से सिनैपसिज में टपकने वाले एक विशेष रसायनी तरल के रुप में तंतु से तंतु तक जाने की क्रिया है। इस प्रकार मस्तिष्क में प्रत्येक संवेदना एक अलग किस्म के ग्रन्थि रस के साथ हुई रासायनिक क्रिया का ही परिणाम होती है। डर, उदासी, नींद, भूख विषाद, आनन्द, काम, वेग, चिंता, उत्तेजना, घृणा, अपनत्व आदि प्रत्येक मनोदशा को पैदा करने वाली विद्युतीय तरंग के लिए अपना अलग तरह का ग्रन्थिरस एवं रसायनिक अमल है। हिलुसेनिएशन दिमाग का वह बेढंगापन है जिस में बाह्यमुखी सच्चे अनुभव के बिना किसी-बात-विशेष के साथ संबंधित ग्रन्थि रस को संचारित कर लिया जाता है। स्वीटरजरलैण्ड के डाक्टर वाल्टर हैस, येल विश्वविद्यालय के डा. जे. डेलगडो, मिशीगन विश्वविद्यालय के जेम्स ओल्डन आदि अनेक विज्ञानी लगभग प्रत्येक प्रकार की संवेदना नकली ढंग से पैदा कर चुके हैं। यह अनुभव बिल्कुल वास्तविक अनुभव जैसा ही होता है। हिप्नोटिज्म इसी विधि से खोजा गया है। हिलोसुनिएशन संबंधी नकली संदेश को संचारित करने के चार मुख्य ढंग हैं।

(a) Rhythmical Sensory Stimulation :- यह ढंग नियमित ताल के द्वारा शरीर को एक स्थिति में लाकर विशेष ग्रन्थि रस संचारित करने का है। ढोलक बजाने, तालियां बजाने, मंत्र का उच्चारण, ऊँची आवाज़ में जय बोलना, नाचना, थोड़े अन्तराल के पश्चात रोशनी को पैदा करके आंखों पर फैंकना, काले धब्बे को एक टक निगाह टिका कर देखना आदि तकनीकें हेलीसुनेटरी अनुभव पैदा करती हैं। कई बार जगराते या अन्य धार्मिक समागमों में कुछ लोग जोर-जोर से सिर हिलाने लग जाते हैं उसका कारण-कारण ये ही हेलिसुनेटरी अनुभव है। जोकि ढोलक बजने, तालियां बजाने, चिमटे-छैने बजाने, सुरबद्ध गाने के सम्मिलित तरीके का परिणाम होता है। गुरुद्वारों मंदिरों, सत्संगों में एक आनन्दमयी अनुभव की प्राप्ति होती है, यह भी ''ताल'' क्रिया द्वारा पैदा हेलिसुनेशन ही हैं। एक मंत्र या गुरू द्वारा दिए पैदा हेलिसुनेशन ही है। एक मंत्र या गुरू द्वारा दिए नाम का जाप करने से भी भक्तों को यह नकली अनुभव ही प्राप्त होता है जिसे अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति कहकर मन को भ्रम में रखा जाता है। जबकि ऐसे ज्ञान को प्राप्त भक्त जन भी अन्य लोगों की तरह जीवन में सुख व दुख के शिकार होते हैं। आम आदमी से ज्यादा उनको कुछ प्राप्त नहीं होता लेकिन मनोभ्रम के कारण वे अपने को अलग समझते रहते है।

(B) Chemical Stimulation :- इसका भाव रसायनों की सहायता से आवेश पैदा करना है। रासयनिक क्रियाओं द्वारा मनुष्य हेलिसुनेशन सदियों से प्राप्त करता आया है। भांग, सुल्फा, गांजा, चरस, अफीम आदि रसायनों द्वारा उत्पन्न क्रियाओं

से नकली अनुभव से ग्रन्थि रस संचारित हो जाता है। मद्रास का बालाजी मन्दिर भारतीय हिन्दुओं का प्रसिद्ध पूजा केन्द्र रहा है। यह प्रसिद्ध था कि भक्तजन इस मंदिर में अलौकिक अनुभव को प्राप्त करते थे । परन्तु इसकी असलियत शीघ्र ही खुल गयी, 7 मई 1963 को मन्दिर के मुख्य पुजारी के पास से पुलिस ने काफी मात्रा में गांजा बरामद किया । जांच-पड़ताल के समय उसने बतलाया कि वह प्रसाद में गांजे की कुछ मात्रा मिला देता था, जिसे हेलीसुनेशन के कारण भक्तजन अलौकिक आनन्द अनुभव करते थे । इसी तरह धार्मिक स्थानों में ध ूप-अगरबती आदि की सुगन्धियों से यही प्रभाव पैदा किया किया जाता है। अब तो ''भक्ति गोली'' भी तैयार हो चुकी है यह गोलियां दिमागी बूस्टर का काम देती हैं । लाईसरजिक, ऐसिड मानजुआना, हेराइन, मैसकालीन, एल.एस.डी., डिथालामाइड नामक दवाईयां दिमाग को उत्तेजित कर देती हैं जबकि :Legerctip, Librium, Valium, Mlilton, Amital, Lodium आदि दवाइयाँ मन को शांत, एकाग्र और गहरे आनन्द की अवस्था में ले जाती है। डा. अलबिट हॉफ मैन ने स्वयं एल.एस. डी. की थोड़ी सी मात्रा सेवन करने पर अपना अनुभव इस प्रकार प्रकट किया है - ''मैनें अपनी आत्मा को शरीर में से बाहर निकलते देखा । मेरी आत्मा प्रकाश में तैर रही थी और मैं अपना मुर्दा जिस्म देखकर चीखें मार रहा था।'' एल.एस.डी. के एक कण का केवल दस लाखवा भाग भी मानवीय दिमाग में एक रहस्यमयी हेलिसुनेशन पैदा कर सकता है। इसी प्रकार के मनोभ्रम को ही भक्त लोग रुहानी आनन्द कहते हैं और एक भ्रम की छाया में जीते रहते हैं।

(C) Biological Stimuli - शरीर के अन्दर बायोलोजिकल संतुलन में गड़बड़ी के कारण दिमाग में कई बार विशेष अनुभव महसूस होने लग जाते हैं। कैनेडा के प्रो. अरलैडो मिल्लर और ऐलिन फिशर ने खोज की है कि मानवीय व्यवहार में कुछ विशेष बेढंगे रूप शरीर में क्रोमोसोमल के कारण वजूद में आ जाते हैं। उन्होंने पता लगाया कि जिन व्यक्तियों में सदा उदासी, विषाद, वैराग आदि होते हैं उनमें 22 जोड़े XX क्रोमोसोम के और 23वां XYZ क्रोमोसोम का होता है। जबकि साध ारणत्या स्वस्थ व्यक्ति में 22 जोड़े 'XX' एवं 23वां 'XY' का होता है। इसी तरह विटामिनों एवं ऐन्जाइमों की कमी के मनुष्य में मानसिक भटकन, अशान्ति का कारण बन जाती है। विटामिन BI की कमी से बेरी-बेरी रोग पैदा हो जाता है, कई अवस्थाओं में ऐसे व्यक्ति फक्कड़, मनमौजी या उलजलूल इलहाम आने के कारण जाने जाते हैं । Pellagra के रोगी भी रुहानी शान्ति के लिए भटकते रहते हैं, जबकि असल में उन्हें विटामिनों एवं नाइटोनिको की जरुरत होती है। इसी तरह विटामिनों एवं इन्जाइमों की कमी से हरमोन्स असंतुलित हो जाते हैं और आत्माओं, जिन्नो, के दर्शन हो जाते है। ऐसे व्यक्तियों में पैराथराइड गलैंड में निकलने वाले हार्मोन्स Parath Yroxine की सप्लाई कम हो जाती है, ऐसे व्यक्ति गुरुओं, देवताओं, पीरों के दर्शनों के शिकार होते रहते हैं कई तो उनसे वार्तालाप करने के दावे करते भी देखे जाते हैं।

(a) Rhythmical Sensor Stinulation- मनोविज्ञान का आम तथ्य है कि मानवीय मन सुझावों के प्रति बड़ा संवेदनशील एवं ग्रहणशील है। सुझाव एवं प्रेरणा स्वयं के द्वारा भी हो सकते हैं और दूसरों के द्वारा भी । बहुत सारे मानसिक विकार हिप्नोटिक सुझावों द्वारा मन में भरे जा सकते हैं। धार्मिक शिक्षा और जादू, चमत्कारों आदि वाला सामाजिक वातावरण स्वयं ही धीमी एवं लगातार प्रक्रिया है। आत्मा-प्रेतात्मा के बारे में बचपन से ही रोचक कहानियां सुनते रहने के कारण लगातार ब्रेन वाशिंग होती है। अच्छे पढ़े-लिखे व्यक्ति भी, भक्ति या समाधि के संकल्प के कारण, जो भी देवी देवताओं के चित्र भक्तजनों ने समक्ष उजागर करते हैं। उनके दिमागों में बैठ जाते हैं। हिलुसिनेशन वाली मानसिक स्थिति में उसे सभी चीजें दिखनी शुरू हो जाएंगी । प्रेरणा के माध्यम से हिलुसिनेशन का दायरा बेहद विशाल है। पूजा-पाठ में ताड़ी लग जाना (गुमसुम होना), चेलों के बोलों पर खेलने लग जाना, अरदासों-मन्नतों, तीर्थयात्राओं, धागे टोने के द्वारा बीमारियों से मुक्त हो जाना और कुछ नहीं केवल आटो या हीटरो हिप्नोटिज्म का ही प्रभाव है यह सब सुझावों के प्रति मन की ग्रहणशीलता उत्तेजना से उत्पन्न हिलुसिनेशन को ही

सबसे बड़ी जमा पूँजी समझते रहते हैं और खुश होते हैं।

(3) Delusion - यह नकली अनुभवों की तीसरी किस्म है डिलूजन मानसिक भ्रमों की सबसे खतरनाक एवं व्यापाक श्रेणी है। इस की जड़ें हमारी सभ्यता के जंगली जीवन समय से जुड़ी है, यह झूठे विश्वासों का ताना बाना है। भूत-प्रेत, बलि देना, तीर्थ यात्रा, जाप, भक्ति, स्वर्ग-नरक, मोक्ष, और यहां तक की परमात्मा के बारे में पैदा किए हुए पीढ़ी दर पीढ़ी विचार, सभ्यता के अंग बन चुके है। इन बे-सिर पैर की धारणाओं का प्रभाव किसी न किसी तरह प्रत्येक प्राणी में अचेत मन में होश संभालते ही बिठा दिया जाता है। अचेत मन की वह छाप व्यवहार और सोच में डिलूजन के रुप में क्रियाशील रहती है। डिलूजन में रुहानी शान्ति, सहज आनन्द, मुक्त अवस्था आदि दिमागी बेढंगेपन (Abnormality) का जन्म होता है। डिलूजन के वजूद के कारण ही लोग हिलुसीनेशन में ऊंट-पटांग अनुभव प्राप्त करते हैं। तात्पर्य है कि डिलुसन के कारण अंदर की यात्रा का संकल्प पैदा होता है और आगे हिलुसिनेशन लोगों को उस यात्रा के नकली अनुभव कराता है। डिलूजन के कारण ही कई बार बड़े सच्चे व्यक्ति भी ''अन्दर का द्वार खोलने'' का अनुभव ब्यान करते हुए मिल जाते हैं। असल में झूठ तो वे बोल नहीं रहे होते, क्योंकि अन्तर्मुखी अनुभव तो उन्होनें महसूस किया है। बस ये लोग यह नहीं जानते की ये अनुभव मन की एक bc खास स्थिति के कारण पैदा हुए हैं। इनके पीछे कोई दिव्य शक्ति नहीं हैं। वे सिर्फ डिलूजन की सवारी करके हिलुसिनिशेन में प्रवेश करके आए होते है नाड़ी तंत्र में असाधारण बेढंगेपन के कारण संदेश वाहक रसायनों की अबनार्मल क्रिया से मन में भ्रामक अनुभव जन्म लेते रहते हैं।

समय की मांग :- ध्यान लगाते समय सांसो में सुस्ती, परिणाम खून में आक्सीजन का कम होना, कार्बनडाय आक्साईड का बढ़ना-और कार्बनडायअक्साईड के बढ़ने से हेलीसुनेटरी प्रभाव में बढ़ोतरी। इस प्रकार के अनुभव के लिए चाहे मैंडरेक्श या हेरोइन की गोली खाई जाए या समाधि लगा कर बैठा जाए । मतलब एक ही है। आज हमारे देश में नशों के प्रयोग की मात्रा बढ़ रही है। दूसरे लोगों के साथ धार्मिक लोग भी नशों के विरुद्ध बोल रहे हैं। (लतीफा) काश ! हमारे देश की जीवन तर्ज भी वैज्ञानिक चिन्तन पर आधारित होती, प्रशासन, राजनीतिक पार्टियों, प्रैस यह जान सकते कि भक्ति या समाधि दूसरे नशों से भी ज्यादा खतरनाक, दुष्प्रभावी, और विकास की विरोधी है, इसलिए नशों पर पाबंदी से पहले धार्मिक समाधियों पर पाबंदी लगानी आवश्यक है।

(अनुवाद : गुरमीत सिंह, अम्बाला)

कॉमन कोल्ड, फ्लू और कोरोना संक्रमण के अंतर को समझें

कोरोना वायरस का डर लोगों को इतना परेशान कर रहा है कि लोगों के बीच छींक भी आ जाए तो लोग दूरी बनाना शुरू कर देते हैं। सर्दी का मौसम शुरू हो रहा है और मौसम में बदलाव की वजह से सर्दी, खांसी और छींकें आ जाती हैं, लेकिन कोरोना काल में ये मौसमी बीमारियां सिर दर्द साबित हो रही हैं।

कुछ लोगों पर वहम इस कदर सवार है कि वो हल्की सर्दी होने पर ही कोरोना का टेस्ट कराने पर आमादा हो जाते हैं।

हम सभी जान चुके हैं कि कोरोना के लक्षण तेज बुखार, खांसी, गले में खराश, नाक बहना है। हालांकि कोरोना के लक्षणों में भी दिनों दिन इज़ाफ़ा हो रहा है। परेशान करने वाली बात ये है कि आखिर कॉमन कोल्ड, फ्लू और कोरोना वायरस में भेद कैसे किया जाए।

फ्लू और कॉमन कोल्ड के लक्षण

कॉमन कोल्ड, फ्लू और कोरोना वायरस संक्रमण तीनों में ही मरीज को बुखार आता है। लेकिन बुखार में शरीर का तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस या इससे ज्यादा है तो इसका मतलब शरीर किसी संक्रमण से लड़ रहा है। लेकिन बॉडी का टेम्प्रेचर 37.8 डिग्री से बहुत ज्यादा है तो एहतियात बरतने की जरूरत है क्योंकि कॉमन कोल्ड में इतना तेज बुखार नहीं आता।

‘भारत के प्रख्यात नास्तिक

किशन पटनायक

–सुनील और अरविंद मोहन

किशनजी से जब मैं पहली बार मिला, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था। किशनजी और उनके जैसे कुछ व्यक्तियों से मिलनेके बाद राजनीति के बारे में मेरे विचार बदल गए। इसके पहले आम लोगों की तरह मैं भी समझता था कि राजनीति गंदी चीज है। दुष्ट और बेईमान लोगों का क्षेत्र है। मुझे इससे क्या लेना-देना। लेकिन किशन पटनायक, सच्चिदानंद सिंन्हा, राम इकबाल वरसी, जसवीर सिंह, चेंगल रेड्डी जैसे लोगों के संपर्क में आने के बाद राजनीति के प्रति मेरा नज़रिया ही बदल गया। तब समझ में आया कि राजनीति एक मिशन भी हो सकती है। राजनीति एक सपना भी हो सकती है-देश व दुनिया को बदलने और बेहतर बनाने का। बल्कि समाज में सामूहिक रूप से किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप अनिवार्य रूप से राजनीतिक होगा। मुझे पता चला कि राजनीति के साथ एक पूरा विचार एवं विचारधारा के साथ जोड़ भी हो सकता है। राजनीति में वैचारिक लोग भी हैं। समाज के लिए कुछ करने वालों के लिए राजनीति एक अनिवार्य चुनौती है। धीरे-धीरे इसका नशा मुझे चढ़ता गया और पता नहीं कब मेरे जीवन का ध्येय और रस ही बदल गया। मेरे इस रूपांतरण में किशन पटनायक का एक महत्वपूर्ण योगदान था

किशन पटनायक ने पता नहीं ऐसे कितने नौजवानों का प्रभावित या प्रेरित किया होगा। एक ऐसे समय में, जब राजनीति में आदर्शों और मूल्यों का तेजी से लोप होता जा रहा था, किशन पटनायक जैसे नेता व विचारक बहुत बड़े संबल व प्रेरणास्रोत थे।

बहूत कम उम्र में संसद के नौजवान सदस्य बन जाने वाले किशन पटनायक के जीवन का उत्तरकाल इस देश में समाजवादी आंदोलन का पराभव का काल था। समाजवादी आंदोलन, समाजवादी पार्टी, समाजवादी नेताओं और कार्यकर्ताओं की गिरावट को किशन पटनायक ने बहुत नजदीक से देखा, समझा, महसूस किया और व्यथित हुए। इस गिरावट में शामिल होना उन्हें मंजूर नहीं था। इससे व्यथित होकर चुप बैठ जाना व निष्क्रय हो जाना भी उन्हें कबूल नहीं था। समाजवादी आंदोलन और समाजवादी विचार को बचाने तथा पुनः स्थापित करने के लिए किशनजी ने लगातार अथक संघर्ष किया। अकेले पड़ जाने की जोखिम उठाकर भी उन्होंने गिरावट की इन प्रवृत्तियों का विरोध किया और चेतावनी दी। उनकी चेतावनियां बाद में सच साबित हुईं। यदि उनके साथी उन चेतावनियों पर ध्यान देते, तो शायद इतिहास आज दूसरा होता। 1977 में जनता पार्टी से बाहर रहने वाले वे शायद अकेले समाजवादी नेता थे। लेकिन जनता पार्टी का जो हश्र हुआ उसने किशन पटनायक को सही साबित किया। इस मामले में किशन पटनायक दूरद्रष्टा और निर्मोही थे। वे पहले ही ताड़ लेते थे और मोह छोड़कर पतन की प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष में लग जाते थे। लोहिया विचार मंच, छात्र-युवा संघर्ष समिति, समता संगठन, जनांदोलन समन्वय समिति, समाजवादी जन परिषद्, जनंदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय, लोक राजनीतिक मंच, चौरंगी वार्ता, सामयिक वार्ता-ये सब उनके लगातार, अथक, आजीवन संघर्ष के प्रमाण हैं। कैसे मृत्युपर्यंत, शरीर जर्जर हो जाने के बाद भी, अपने मूल्यों और लक्ष्यों के लिए प्रयास किया जा सकता है, हम उनसे सीख सकते हैं। आम तौर पर उम्र बढ़ने के साथ आदमी की नयी पहल करने की क्षमता चुक जाती है। पुराने के साथ उसका मोह हो जाता है। बुढ़ापे में वह कुछ नया कदम उठाने में स्वयं को असमर्थ पाता है। किशन पटनायक इसके एक जबरदस्त अपवाद थे।

समाजवादियों की गिरावट पर किशन पटनायक निर्मम प्रहार करते थे। इस मामले में वर्ष 1980 या 1981 का एक प्रसंग मुझे याद है। इंदौर में समता युवजन सभा का प्रादेशिक शिविर हुआ था, जिसमेंमैं भी दिल्ली से आकर शरीक हुआ था। उन दिनों समाजवादियों को फिर से एक करने की बात

बहुत चलती थी। कई भोले समाजवादी कार्यकर्ता सोचते थे कि ऐसा हो गया तो चमत्कार हो जाएगाऔर समाजवादी आंदोलन के सुनहरे दिन लौट आएंगे। शिविर में किसी ने इस विषय में प्रश्न किया। किशनजी ने जो जवाब दिया, वह मेरे दिमाग पर अंकित हो गया, जिसे मैं बाद में दोहराता रहा। किशनजी ने एक रूपक पेश करते हुए कहा कि जिस प्रकार से जाति का निर्धारण जन्म से हो जाता है, उस व्यक्ति का कर्म, चरित्र, आचरण या विचार कुछ भी हो, उसकी जाति वही बनी रहती है, उसी प्रकार से समाजवादी होना भी एक जाति बन गया है। जो कभी सोशलिस्ट पार्टी में था, जिसका राजनीतिक जन्म कभी इस पार्टी में हुआ, वह आज चाहे किसी पार्टी में हो, उसका विचार, आचरण और कर्म आज चाहे समाजवादी हो या न हो, वो सारे लोग फिर भी 'समाजवादी' कहलाते हैं। ऐसे 'समाजवादी' न तो एक जगह आ सकते हैं और न उनको एक जगह लाने से कुछ हासिल होगा। किशनजी का यह निष्कर्ष भी सही साबित हुआ। समाजवादियों की गिरावट को बहुत पहले पहचानकर किशनजी अपने कुछ थोड़े से साथियों के साथ समाजवादी आंदोलन को नए सिरे से खड़ा करने में जुट गये थे। समाजवादी विचार और समाजवादी धारा को इस कठिन समय में जिन्दा रखने का काम किशन पटनायक, सच्चिदानंद सिन्हा, केशवराव जाधव जैसे लोगों ने किया।

अस्सी के दशक के शुरूआती वर्षों में किशन पटनायक ने 'सामयिक वार्ता' में लोहियावादियों पर एक लेख लिखा। अंग्रेजी में यह लेख 'जनता' में 'आउटगोइंग राममनोहर लोहिया' शीर्ष से प्रकाशित हुआ था। हिन्दी लेख का शीर्षक मुझे अभी याद नहीं है। उस लेख में उन्होंने लोहियावादियों को काफी लताड़ा था। उन्होंने कहा कि लोहिया के अनुयायी आज भी 20 वर्ष पुराने लोहिया के नारों व मुहावरों को दोहराते हैं। इसका मतलब कि उन्होंने लोहिया के विचारों का आत्मसात् नही किया है। यदि करते, तो अपनी भाषा और अपने मुहावरों में उनको अभिव्यक्त करते। किशनजी के समव्यस्क समता संगठन के कुछ नेताओं ने भी टिप्पणी की कि किशन स्वयं को लोहिया से बड़ा समझने लगा है। लेकिन किशन पटनायक की यह चेतावनी भी सोलह आने सच साबित हुई। लोहिया के ज्यादातर अनुयायी समाजवादी विचार और राजनीति को पूरी तरह छोड़े चले गए। लोहियावादियों और समाजवादियों का यह पतन क्यों हुआ, यह एक अनुसंधान का विषय है। लेकिन किशन पटनायक जैसे चंद नेताओं ने इस गिरावट को रोकने का जो अथक संघर्ष किया वह भी इतिहास में दर्ज हुआ।

लोहिया और किशन पटनायक में कई समानताएं थीं। लोहिया की भांति किशन पटनायक भी मूलतः एक विचारक थे और संगठन निर्माण तथा प्रचलित राजनीति में उन्हें बहुत सफलता नही मिली। लेकिन अपने विचारों को फैलाने और उनकी अलख जगाने में वे लगातार लगे रहते थे। इसलिए गोष्ठियों, सेमिनारों और शिविरों का आमंत्रण मिलने पर वे मना नहीं कर पाते थे। वे बहुत धीरे-धीरे बोलते थे, और आम सभाओं के लिए वे बहुत अच्छे वक्ता नहीं थे। यह वे खुद कहते थे। हालांकि सम्मेलनों और आम सभाओं के उनके कुछ जोशीले भाषण सुनने वालों को आज भी याद हैं।

किशन पटनायक के विचार मूलतः गांधी और लोहिया से प्रेरित थे, लेकिन नए संदर्भो में नए ढंग से नए रूपकों व उदाहरणों के साथ अपने विचारों को रखने का काम वे बखूबी करते थे। लोहिया उनके गुरु थे, लेकिन अपने लेखों वे भाषणों में लोहिया का नाम वे कभी नहीं लेते थे और न लोहिया को उद्धृत करते थे। अलबत्ता गांधी का जिक्र उनके लेखों में आता है और गांधी पर उन्होंने बोला व लिखा भी है। 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की प्रवृत्ति के वे सख्त खिलाफ थे। पर्यावरण और विकास के प्रश्न लोहिया के समय उतने उभर कर नहीं आये थे, लेकिन किशन पटनायक ने इन प्रश्नों पर बार-बार बोला व लिखा और इन्हें समाजवादी विचार का एक केंद्रीय हिस्सा बनाया। उनका सबसे अच्छा लेखन विकास व टेक्नालॉजी के मुद्दों पर ही है। वैश्वीकरण के खिलाफ चेतावनी देने वाले सर्वप्रथम लोगों में वे भी एक थे। उनमें एक गज़ब की अंतर्दृष्टि थी और कई घटनाओं वे प्रवृत्तियों को वे पहले ही देख लेते थे। वैश्वीकरण के सम्पूर्ण विरोध का बार-बार आह्वान उन्होंने किया तथा इस बात पर भी जोर दिया कि वैश्वीकरण के विकल्प की बात किस बगैर यह लड़ाई अधूरी और एकांगी रहेगी।

किशन पटनायक मार्क्स के पूरे विरोधी नहीं थे और मार्क्स के विचारों का कुछ असर उनके ऊपर

दिखाई देता था। 1977 में 'सामयिक वार्ता' में जयप्रकाश नारायण का साक्षात्कार प्रकाशित किया गया था, जिसमें इस बात कों प्रमुखता दी गई थी कि जे पी ने 'वर्ग-संघर्ष' की अनिवार्यता को स्वीकार किया। लेकिन मार्क्सवादियों से बहस चलाना और भारतीय कम्युनिस्टों पर वैचारिक प्रहार करना उनका प्रिय शुगल था, हालांकि कमयुनिस्ट पार्टी के संगठन कौशल और टिकाऊपन के कुछ पहलुओं की वे तारीफ करते थे और उनसे सीखने का आग्रह करते थे। मार्क्सवादियों के विचारों का खंडन उनके भाषणों में अनायास आता था, जो हमें कभी-कभी अटपटा और अप्रासंगिक लगता था। वे उस युग के थे, जब पूरी दुनिया में विचारधाराओं का द्वन्द्व चल रहा था और अब हम विचारहीनता के युग में जी रहे हैं, जब वैचारिक बहस उत्तरोत्तर कम होती जा रही है। यह भी एक बड़ी चुनौती है, जिसका मुकाबला करने में किशन पटनायक हमारे मददगार हैं।

किशन पटनायक किसान आंदोलनों में क्रांतिकारी संभावनाएं देखते थे। आगे बढ़ने के लिए इसे अनिवार्य रूप से व्यवस्था-परिवर्तन के लक्ष्य के साथ जुड़ना होगा, यह बार-बार कहते थे। संगठित मजदूर, कर्मचारी आदि के आंदोलन संकीर्ण व स्वार्थी हो सकते हैं, लेकिन किसान तो इतना बड़ा तबका है कि उसी के शोषण पर पूरी व्यवस्था टिकी है और पूरी व्यवस्था के आमूल बदलाव के बगैर इसकी मुक्ति संभवन नहीं। वैश्वीकरण विरोधी लड़ाई में भी किसान आंदोलन का एक महत्वपूर्ण स्थान होगा, वे मानते थे। शरदजोशी से उनका वैचारिक टकराव बहुत पहले ही हो गया था और इसी टकराव ने तभी स्पष्ट कर दिया था कि शरद जोशी जैसे नेताओं का असली चरित्र, सोच व इरादे क्या हैं? 16-17 वर्ष पहले नागपुर में किसान संगठनों को अंतर्राज्यीय समन्वय समिति की उस बैठक का मैं भी साक्षी हूं, जिसमें काफी बहस हुई थी। इस बैठक में किशनजी के किसान आंदोलन के एक वैचारिक आधार की जरूरत को प्रतिपादित किया था और कहा था कि किसान आंदोलन को अपनी उद्योग नीति, शिक्षा नीति, प्रशासन नीति आदि भी बनाना पड़ेगा। शेतकरी संघटना द्वारा यूकेलिप्टस खेती के समर्थन, गेहूं व कपास की खेती छोड़ने का आह्वान आदि पर भी बहस हुई थी। शरदजोशी के जीन्सधारी चेलों ने किशनजी की व हमारी बात नहीं चलने दी और कहा **कि कृषि उपज का लाभकारी मूल्य ही मुख्य चीज है। वह मिलने लगेगा, तो सब कुछ ठीक हो जायेगा।** इसके बाद ही दिल्ली में किसानों की यह ऐतिहासिक रैली हुई, जिसमें टिकैत और शरद जोशी का झगड़ा हो गया। शरद जोशी इसके बाद अलग-थलग पड़ते गए। वैश्वीकरण की जिन नीतियों का समर्थन शरद जोशी कर रहे थे, उनका नतीजा यह निकला कि देश के कई हिस्सों में किसान आत्महत्या के कगार पर पहुंच गए। इतिहास ने एक बार फिर किशन पटनायक को सही साबित किया।

वर्ष 1993 में दिल्ली में डंकल प्रस्ताव के खिलाफ किसानों की ऐतिहासिक रैली के आयोजन मे किशन पटनायक की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। चौधरी महेंन्द्र सिंह टिकैत के नेतृत्व वाले आंदोलन के साथ भी उन्होंने एक संबंध व संवाद बनाने की कोशिश की, लेकिन ज्यादा सफलता नहीं मिली। 'टिकैत और प्रोफेसर' शीर्षक लेख उन्हीं दिनों लिखा गया। कर्नाटक के रैयत संघ और प्रो. नंजुन्दास्वामी से तो उनका लगातार गहरा संबंध रहा। किशन पटनायक ने स्वयं किसी बड़े किसान आंदोलन का नेतृत्व नहीं किया, लेकिन बाद के वर्षो में स्वयं उनके क्षेत्र में लिंगराज, गौरवचन्द्र खमारी, अशोक प्रधान जैसे युवा कार्यकर्ताओं की टीम सक्रिय होने के बाद पश्चिम उड़ीसा का एक जोरदार किसान आंदोलन अंगड़ाई ले रहा है। उसके प्रेरणाम्रोत भी किशन पटनायक हैं।

आधुनिक पूंजीवादी विकास की विसंगतियों में उड़ीसा में और पूरे देश में पिछले तीन दशकों में अनेक स्वतः स्फूर्त जन-आंदोलन पैदा हुए, जिनमें किसान आंदोलन के अतिरिक्त आदिवासियों, दलितों, विस्थापितों, विद्यार्थियों, पिछड़े इलाकों आदि के अनेक2 आंदोलन उभरकर सामने आए। यह समय एक प्रकार से विचारधारा पर आधारित समाजवादी और कम्युनिस्ट धाराओं के पराभव का तथा इन छोटे-छोटे जनांदोलनों के उदय होने का समय था। नए आदर्शवादी नौजवान इन्हीं की ओर ज्यादा आकर्षित हुए। लेकिन वैचारिक-राजनीतिक दृष्टि की कमी और संपूर्णता तथा व्यापकता का अभाव इनका एक प्रमुख दांव रहा है, जिसके कारण वे ज्यादा स्थायी असर नहीं छोड़ पा रहे हैं। किशन

पटनायक ने समय के इस प्रवाह को पहचानकर इन जनांदोलनों के साथ आत्मीय रिश्ता बनाया और इनको व्यवस्था-परिवर्तन की सोच, राजनीति व रणनीति से जोड़ने की काफी कोशिश की।

अपने वैचारिक अभियान के तहत ही किशन पटनायक ने इस युग के एक और प्रमुख प्रश्न पर अपने विचार प्रखरता व मजबूती से रखे। साम्प्रदायिकता व धार्मिक कट्टरता का विरोध करते हुए 'सेक्युलरवाद' पर भी उन्होंने प्रहार किए। साम्प्रदायिकता का जवाब आधुनिक पश्चिमी धर्म-विरोधी दृष्टि में खोजने के बजाय हमारी परंपरा, संस्कृति और राष्ट्रीयता में खेजने का आह्वान उन्होंने किया। आम वामपंथियों से उनके इस मामले में गहरे मतभेद थे। स्वयं नास्तिक होते हुए भी वे न तो धर्म का पूरी तरह विरोध करते थे, न राष्ट्रीयता की भावना को गलत मानते थे और न ही भारत राष्ट्रकल्पना को प्रगतिगामी मानते थे। बल्कि साम्प्रदायिकता, साम्राज्यवाद और वैश्वीयकरण के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रीयता और देशप्रेम एक महत्वपूर्ण औजार होंगे, ऐसा वे मानते थे। साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ाई शून्य में अमूर्त इस से नहीं हो सकती । यह अनिवार्य रूप से राष्ट्र मुक्ति के संघर्ष का रूप लेती है, यह इतिहास काभी अनुभव है।

लेकिन राष्ट्रवादी होते हुए भी अंधराष्ट्रवाद या उग्र राष्ट्रवाद उन पर हावी नहीं हो पाया। असम आंदोलन, उत्तर-पूर्व, उत्तर-बंग, कश्मीर और पंजाब के मामले जब सामने आये , तो देश दो हिस्सों में बंट गया। एक बड़ा हिस्सा मानता था कि ये आंदोलन देश को तोड़ने वाले हैं, विदेशी साम्राज्यवादी साजिश का हिस्सा हैं और इनका सख्ती से दमन कर देना चाहिए। इन इलाकों में फौजी बलों द्वारा ज्यादतियों और मानव अधिकारों के हनन को भी ऐसे लोग बिल्कुल अनदेखा कर देते थे लेकिन किशन पटनायक, सच्चिदानन्द सिन्हा और जसवीर सिंह जैसे लोगों ने पूरे मामले को अलग दृष्टि से देखने में मदद की। उन्होंने बताया कि कैसे पूंजीवादी विकास के कारण उपजी क्षेत्रीय विषमता, पिछड़ापन, सत्ता का अहंकार और क्षुद्र राजनीति ने इन इलाकों की जनता में तीव्र असंतोष को जन्म दिया और बढ़ाया। बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता ने भी उसमें मदद की। इन क्षेत्रीय आंदोलनों तथा उग्रवाद को विदेशी मदद हो सकती है, लेकिन यह इसका मूल कारण नहीं है। फौजी दमन से ये समस्याएं सुलझेंगी नहीं, बल्कि और गंभीर होती जायेंगी। समता संगठन के अंदर भी इस मुद्दे पर बहस हुई और एक दृष्टि बनी। इस दृष्टि के कारण ही उत्तर-बंग जैसे आंदोलन को देश के अंदर समर्थन मिल पाया और वे समता संगठन तथा समाजवादी जनपरिषद् के साथ जुड़े। असम आंदोलन के समर्थन में दिल्ली से गुवाहाटी तक की साइकिल यात्रा और पंजाब के प्रश्न पर दिल्ली से अमृतसर तक पैदल मार्च का आयोजन भी क्रमशः 1983 एवं 1984 में किया गया। बाद में कश्मीर की स्थिति गंभीर होने पर अशोक सेकसरिया ने 'सामयिक वार्ता' में एक लंबा शोधपरक लेख लिखा, जो कश्मीर की गुत्थी को समझने में काफी मदद करता हैं जनांदोलन के राष्ट्रीय समन्वय की बैठक थी या समाजवादी जनपरिषद् की, मुझे याद नहीं, उसमें एक बार किशनजी ने भी कश्मीर समस्या का बहुत अच्छा विश्लेषण रखा। इन मसलों पर बाकी वामपंथियों से मतभेद भी सामने आए। मुझे याद है कि मधु लिमये और गणेश मंत्री जैसे समाजवादी विचारक मानते थे कि वे सारे क्षेत्रीय आंदोलन क्षेत्रीयवादी, पृथकतावादी, विदेशी शक्तियों से प्रेरित तथा राष्ट्रीय एकता के लिए घातक हैं। बंगाल की सत्ता पर काबिज कम्युनिस्ट पार्टियां तो असम और उत्तर बंगाल के आंदोलन को विच्छिनातावादी और 'शाविनिस्ट' मानती ही थीं, ताकि वे स्वयं बंगालियों की संकीर्ण भावनाओं का लाभ वोटों में ले सकें।

अस्सी के दशक के शूरू में सच्चिदानंद सिन्हा ने 'आंतरिक उपनिवेश' की अवधारणा पर एक लंबा परचा लिखा। देश के विभिन्न आंदोलनों समझने और एक सूत्र में जोड़ने की वैचारिक दृष्टि इससे मिलती है। किशन पटनायक की भी यही दृष्टि थी। किशनजी और सच्चिदानंदजी में काफी वैचारिक साम्य रहा। विकेंद्रीयकरण, विकास, तकनालोजी, साम्प्रदायिकता, निःशस्त्रीकरण, वैश्वीकरण, आरक्षण, जातिवाद, देश की राजनीति आदि पर दोनों ने मामूली मतभेदों को छोड़कर, एक ढंग से चीजों को देखा। उनकी दृष्टि मूलतः गांधी व लोहिया की दृष्टि है, लेकिन मार्क्स और अम्बेडकर का भी कुछ असर दिखाई देता है। समाजवादी विचार को आगे बढ़ाने में दोनों का योगदान महत्वपूर्ण माना जाएगा।

किशन पटनायक ने अपने लेखन और भाषणों में देश के बुद्धिजीवियों को बार-बार

संबोधित किया। उन्हें लताड़ा भी, आह्वान भी किया। 'प्रोफेसर से तमाशगीर' उनका जबरदस्त लेख हैं भारतीय बुद्धिजीवियों के 'गुलाम दिमाग में छेद' तो एक मुहावरा बन गया था। शास्त्रों और सामाजिक विज्ञान को नए ढंग से लिखने, गुलामी की विरासत से मुक्त कराने और हमारी मुक्ति के संघर्ष में सहायक बनाने का आह्वान उन्होंने किया। मीडिया को भी लताड़ते थे। उन्होंने मीडिया को खुश करने की कोशिश कभी नहीं की और न ही आधुनिक नेताओं व एक्टीविस्टों जैसा मीडिया प्रबंध किया। दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, गरीबों तक राजनीति को ले जाने, उन्हें संगठित करने, उनका नेतृत्व उभारने की जरूरत उन्होंने प्रतिपादित की। उनके नेतृत्व में 1980 में समता संगठन के साथियों ने जमीन राजनीति करने और सघन क्षेत्र बनाने का निश्चय किया, जो जनता पार्टी की शिखर व हवाई राजनीति के अनुभव का एक जवाब था। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में मध्यम वर्ग के कार्यकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, यह भी वे मानते थे। इसलिए माध्यम वर्ग को संबोधित करने और उद्वेलित करने में भी वे लगे रहते थे।

विचारों में किशन पटनायक जितने कट्टर थे, राजनीतिक व्यवहार और संगठन के मामलों में काफी दक्ष और उदार थे। संगठन की कमेटियों की बैठकों और शिविरों में वे कम मगर सारगर्भित बोलते थे और उन्हें उत्तेजित या क्रोधित होते हुए बहुत कम देखा जाता था। अन्य समाजवादियों तथा बड़े राजनीतिक दलों के प्रति वे काफी आलोचक रहे। लेकिन जीवन के उत्तर काल में वे अन्य समाजवादी समूहों, जन-संगठनों और जन-आंदोलन के साथ ज्यादा मेलजोल हो तथा देश में कोई बड़ा आंदोलन खड़ा हो, कोई बड़ा माहौल बने, बड़ी राजनीतिक धारा बने- इसके समर्थ थे। अन्य समूहों व संगठनों की गलत बातों को वे नजरअंदाज कर रहे हैं, ऐसा मेरे जैसे कुछ साथियों को कभी-कभी लगता था और झुंझलाहट होती थी। जून 2004 में उनके भोपाल प्रवास के दौरान उनसे इस विषय पर चर्चा हुई। बाद में उन्होंने एक लंबा पत्र मुझे लिखा।

सांसारिक पैमानों पर नापें, तो किशन पटनायक एक असफल व्यक्ति थे। देश में कोई बड़ा जन-आंदोलन वे नहीं खड़ा कर पाए, देश को हिला नहीं पाए, बड़ी वैचारिक हलचल भी वे पैदा नहीं कर पाए। जिस राजनीतिक दल 'समाजवादी जन परिषद्' की स्थापना उन्होंने अन्य साथियों के साथ मिलकर की, उसे भी अपेक्षित सफॅलता नहीं मिल पाई। उनके कई अनुयायी और साथी उन्हें छोड़कर चले गये, कई तो मुख्य धारा की राजनीति में चलेगए। शिवानन्द तिवारी, नीतिश कुमार, भक्त चरण जैसों की एक सूची है। लेकिन किशनजी की खूबी यह थी कि वे निराश नहीं हुए, अपने रास्ते से डिगे नहीं, 'एकला चलो' की हिम्मत उनमें थी और वे नए व युवा साथी खोजते हुए 'चरैवेति-चरैवेति' के सूत्र का पालन करते रहे।

फिर सफलता-असफलता का पैमाना क्या है, यह भी सोचना पड़ेगा। किशन पटनायक तो उन महान् व्यक्तियों में से हैं, जिनके कृतित्व, व्यक्तित्व और विचारों का असर उनकी मृत्यु के बाद भी रहता है। उनके योगदान का फैसला सिर्फ उनके जीवनकाल से नहीं हो सकता। वैसे देखें, तो मार्क्स, गांधी, लोहिया और जयप्रकाश को भी असफल माना जा सकता है। इन सबने अपना कर्तव्य पूरा किया और इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी है। किशन पटनायक भी मृत्युपर्यन्त अपने मिशन और लक्ष्य में लगे रहे। अपना काम उन्होंने बखूबी व मुस्तैदी से किया। यह अब उनके बाकी साथियों, बाकी समाज, देश और दुनिया के ऊपर है कि वे उनके जैसे महापुरुष का कितना उपयोग कर पाते हैं और उनके मागदर्शन व विचारों की विरासत का कितना लाभ उठा पाते हैं।

किशन पटनायक क्यों मुख्य धारा की राजनीति में नहीं चल पाए और मीडिया में लोकप्रिय क्यों नहीं हो पाए? किशन पटनायक तो मुख्य धारा से बगावत करने वाले और उसे मोड़ने का हौसला रखने वाले योद्धा थे। वे उस वैद्य की तरह थे जो बीमार समाज को स्वस्थ बनाने के लिए कड़वी दवा देना चाहते थे। यह दवा बहुतों को पसंद नहीं आती थी, लेकिन आज या कल इस कड़वी दवा को पीने से ही समाज स्वस्थ हो पायेगा।

प्रश्न को पलटकर राजनीति और मीडिया से भी पूछना पड़ेगा कि तुम किशन पटनायक जैसे मनीषी, कर्मयोगी, विचारक, योद्धा और महात्मा के लायक क्यों नहीं बन पाए और उनको अपने अंदर स्थान क्यों नहीं दे पाए। यह प्रश्न बार-बार पूछेंगे और इसका जवाब खोजेंगे, तो ही शायद दुनिया को बदलने का रास्ता खुलेगा और किशन पटनायक जैसे मनीषियों की मेहनत सफल हो सकेगी।

कहीं आपकी पर्सनैलिटि या व्यक्तित्व में कोई विकार तो नहीं

डॉ. दिव्य मंगला
मनोविकित्सक

यह व्यक्तित्व का ही कमाल है कि एक इंसान औसत बुद्धि होते हुए भी कई तेज बुद्धि वाले लोगों पर शासन करता है। हमारे देश के कुछ लीडर इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

एक इंसान कैसे बातचीत करता है, कैसे सोचता है, कैसा अनुभव करता है, किस प्रकार औरों सेव्यवहार करता है, कैसा स्वभाव रखता है, किस तरह से काम करता है, कैसा चरित्र धारण करता है, ये सब बातें उसके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती हैं। यहीगुण एक इंसान को दूसरे से अलग करते हैं। कोई वहमी है तो कोई बिल्कुल दब्बू। कोई लापरवाह किस्म का है तो कोई बेहद अनुशासित। यह पर्सनैलिटि (व्यक्तित्व) का ही अंतर है कि एक व्यक्ति अपने लोगों के बीच भी बातचीत करता हुआ घबराहट व झिझक महसूस करता है और वहीं दूसरा व्यक्ति मंच पर जाकर हजारों लोगों को एकसाथ संबोधित करने में जरा भी संकोच नपहीं करता।

हर सफल काम के लिए बौद्धिक क्षमता आवश्यक है, परंतु इसके साथ एक ऐसा व्यक्तित्व भी होना जरूरी है जो कि मुश्किल परिस्थितियों मेंइंसान को सामान्य बनाए रखे।

यह व्यक्तित्व का ही कमाल है कि एक इंसान औसत बुद्धि होते हुए भी कई तेज बुद्धि वाले लोगों पर शासन करता है। हमारे देश के कुछ लीडर इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

इंसान का व्यक्तित्व उसके अनुवांशिक गुणों (जींस), जो उसे माता-पिता से मिलते हैं, पालन-पोषण, घर स्कूल का माहौल आदि परिस्थितियों के आपसी तालमेल से बनता है।

अच्छेघरों व स्कूलों से संबंध रखने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में दोष मिलने की संभावना औरों की अपेक्षा थोड़ी कम होती है।

व्यक्तित्व विकार से जूझ रहे ज्यादातर लोगों को पता नहीं होता कि वे भी इसके शिकार हैं। व्यक्तित्व विकार से ग्रस्त ज्यादातर लोगों को जब इस समस्या से अवगत कराया जाता है तो वे इस बात को स्वीकार नहीं करते। लगभग 5-10 प्रतिशत लोग व्यक्तित्व के विकारों से ग्रस्त हैं।

हर इंसान का व्यक्तित्व दूसरे से भिन्न हैं एक सामान्य व्यक्तित्व वाला व्यक्ति अपने जीवन को कभी भी बिखरने नहीं देता। वह अपने आपसी संबंधी, क्रिया-कलापों, व्यवहार, भावनाओं आदि को एक नियंत्रण में रखता है। परंतु कुछ इंसान ऐसा करने में असफल रहते हैं। उनके व्यक्तित्व में कुछ गंभीर खामियां व दोष होते हैं। जिनके चलते ये लोग अपने जीवन के साथ-साथ दूसरों की जिंदगी को भी कष्टमय बना देते हैं। इस स्थिति को मनोविज्ञान की भाषा में 'व्यक्तित्व विकार' कहा जाता है।

जानिए, तरह-तरह के व्यक्तित्व विकारों को। हो सकता है आप या आपका कोई निकट संबंधी ऐसे विकार से ग्रस्त हो।

पैरानायड व्यक्तित्व विकार (शक्की किस्म के इंसान)

(Paranoid Personality Disorder)

इस विकार से ग्रस्त लोगों में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैं-

★ किसी दूसरे व्यक्ति से दो टूक जवाब मिलने या फिर कोई काम न बनने पर जरूरत से ज्यादा संवेदनशील हो जाना।

★ दूसरे लोगों की मंशा व काम करने के तरीकों पर हमेशा शक करना। (उदाहरण के लिए व्यक्ति जब भी घर के बाहर निकलता है तो उसे हमेशा यह लगता है कि दूसरे लोग उसकी चुगली कर रहे हैं)

★दूसरे लोगों पर बेमतलब इल्जाम लगाने की

आदत।
★अपनी पत्नी/महिला मित्र के चरित्र पर बेवजह शक करना।
★ ऐसा महसूस करना जैसे कोई इनके खिलाफ साजिश रच रहा है।
★ दूसरों की छोटी-छोटी गलतियों को भी नजरअंदाज न कर पाना व जरूरत से ज्यादा नाराज हो जाना।
★ अपने अधिकारों को जरूरत से ज्यादा अहमियत देना।

इस प्रकार के विकार से ग्रस्त लोगों का पारिवारिक जीवन कष्टों से भरा रहता है, क्योंकि ये जल्दी से किसी पर विश्वास नहीं कर पाते। इसी कारण दूसरे लोग इनसे कटना शुरू कर देते हैं। अपने सहकर्मचारियों के साथ भी इनका बर्ताव सामान्य नहीं रह पाता।

स्कीजॉयड व्यक्तित्व विकार (उदासीन व्यक्तित्व)
(Schizoid Personality Disorder)

इस विकार से ग्रस्त व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते हैंः
★ व्यक्तिको जीवन में किसी भी प्रकार की गति विधि आनंद प्रदान नहीं करती।
★ भावनात्मक रूप से उदासीन ये लोग सुख व दुख दोनों किस्म की भावनाओं से दूर प्रतीत होते हैं।
★ किसी भी किस्म की तारीफ या बुराई के प्रति बहुत कम प्रतिक्रिया पैदा होना।
★ दूसरों के प्रति अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने में जैसे, गुस्सा, प्यार, नफरत आदि से असक्षम होना।
★ यौन संबंधों में बहुत कम रुचि होना।
★ ज्यादातर अकेले रहना पसंद करना व दुनियादारी से कम से कम मतलब रखना।
★ अपने आप में खोये रहना।
★ ऐसे लोगों के बहुत कम दोस्त होते हैं, क्योंकि ये दोस्ती करना पसंद ही नहीं करते।
★ समाज में क्या चल रहा है, क्या हो रहा है आदि के प्रति उदासीनता।

ऐसे लोग समाज से कटे हुए रहकर भी कई बार रचनात्मक कार्य करने में कामयाब हो जाते हैं। जहा पर लोक व्यवहार की आवश्यकता न हो वहां पर ये व्यक्ति बिना परेशानी कार्य कर सकते हैं।

असामाजिक व्यक्तित्व विकार
(Antisocial Personality Disorder)

ऐसे लोगों के मुख्य लक्षण हैंः
★दूसरों की भावनाओं की कद्र न करना।
★समाज में चले आ रहे कानून के खिलाफ जाना व समाज के प्रति गैर जिम्मेदाराना रवैया अपनाना।
★आपसी संबंध बनाये रखने की क्षमता के बावजूद दूसरों से अच्छेसंबंध न बना पाना।
★थोड़ी-सी भी कुंठा सहन न कर पाना व छोटी-छोटी बात पर लड़ने-मरने को तैयार रहना।
★अपराध बोध महसूस न कर पाना।
★दूसरों पर इल्जाम लगाना, अपने दोषों व कमियों को समाज पर लादना (उदाहरण के लिए एक असामाजिक व्यक्ति ने कुछ इस प्रकार से कहा, 'नहीं, मैं लड़ाकू नहीं हूं, इस गली के लोग ही बड़े झगड़ालू किस्म के हैं)'

झुठबोलना, धोखा देना, अपराध की तरफ रुख, नशाखोरी, घर से बिना बताए भागना आदि इस विकार के अन्य लक्षण हो सकते हैं। इस विकार से ग्रस्त लोग विश्वास के काबिल नहीं होते। अपने आप को सही साबित करने के लिए ये लोग तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने में माहिर होते हैं। गुंडा किस्म के लोग अक्सर इस प्रकार के विकार से ग्रस्त पास जाते हैं।

भावनात्मक रूप से अस्थिर व्यक्तित्व विकार
(Elmotionally Unstable Perslonality Disorder)

इन लोगों के मुख्य लक्षण हैंः
★ अपने भावनात्मक संवेगों पर नियंत्रण न रख पाने के कारण अचानक लड़ने-मरने को तैयार हो जाना या फिर बिना सोचे-समझे निर्णय ले लेना।
★ अपने खिलाफ छोटी-सी भी बात पर गुस्सा हो जाना। ये लोग किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा कही गई छोटी-सी बात पर भी अचानक झगड़ा शुरू कर सकते हैं।
★ बिना सोचे समझे जरूरत से ज्यादा पैसे खर्च डालना, अनजान लोगों से दोस्ती कर लेना।
★ भावनात्मक तौर पर खालीपन व उदास महसूस

करना।

★ अपने बारे में, कि वो क्या है ? अपने आप से क्या चाहते हैं ? जिंदगी के लक्ष्य क्या है ? आदि केबारे में भ्रमित रहना।

★ मूढ में अचानक व बार-बार बदलाव आना। (एक पल में खुश तो दूसरे ही पल चिड़चिड़ा हो जाना।

★ ये लोग अगले पल में क्या करने जा रहे हैं ? इसका अंदाजा लगाना मुश्किल होता है।

★ अपनी जिद पूरी करने या बात मनवाने के लिए मरने की धमकी देना या फिर अपने ही हाथ को चाकू से काटने लगना। कई बार दूसरों पर अपना गुस्सा व्यक्त करने के लिए ये लोग अपने शरीर को ही चोट पहुंचाने लगते हैं, जैसे कि दीवार में सिर मारना।

★ एक पल में गहरी दोस्ती करना तो दूसरे पल अचानक तोड़ देना।

★ बड़ी तेज रफ्तार व खतरनाक तरीके से गाड़ी/स्कूटर आदि का चलाना।

★ अकेलेपन से घबराना।

इस प्रकार के लोगों को डिप्रेशन नामक बीमारी होने का खतरा हमेशा बना रहता है। ये व्यक्ति अपने परिवार वालों के लिए अकसर हर दूसरे या तीसरे दिन कष्टकारी व झगड़े वाली परिस्थितियां पैदा करते रहते हैं।

दिखावटी व्यक्तित्व विकारः

(HISTORIC Personality Disorder)

यह व्यक्तित्व विकार पुरुषों की अपेक्षा औरतों में ज्यादा पाया जाता है। मुख्य लक्षण इस प्रकार हैंः

★ दूसरों के साथ अचानक किसी छोटी-मोटी दुख की घटना पर आंसू निकाल देना। नाटकीय ढंग से पेश आना जैसे पड़ोस की सहेली से ऐसे मिलना जैसे पता नहीं कितने वालों बाद मिले हों।

★ दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए नए-नए तरीके अपनाना।

★ अपने अहं की संतुष्टि में लगे रहना।

★ अपनी बातों, भावनाओं व अनुभवों को दूसरों के सामने बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना।

★ दूसरे की बातों में जल्दी आ जाना।

★ भावनात्मक रूप से कमजोर होना।

★ छोटी-छोटी बातों के लिए दूसरों से सराहना प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहना।

★ भड़कीले कपड़ों व आभूषणों आदि का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करना।

उम्र के साथ इनका दिखावटीपन कम होता जाता है। फिल्मों में काम करने वाले बहुत से कलाकार (खासकर नायिकाएं) इस विकार से ग्रस्त होते हैं।

आमतौर पर सभी व्यक्तित्व विकारों में उम्र के साथ-साथ (खासकर 40 वर्ष बाद) सुधार आने लगता हैं परंतु जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण वर्षो में ये विकार व्यक्त के असफल जीन का कारण बन जाते हैं।

सनकी (मनोग्रस्त) व्यक्तित्व विकारः

(Obsessive&Compulsive Personality Disorder)

इस प्रकार के ग्रस्त व्यक्ति को आम लोक अकसर सनकी या वहमी के रूप में पहचानने लगते हैं। इस विकार के मुख्य लक्षण हैंः

★ छोटी-छोटी बातों के प्रति जरूरत से ज्यादा सावधान रहना जैसे अलमारी में हर छोटी चीज तरतीब से लगाना, लिखते वक्त एक-एक अक्षर व मात्रा पर जरूरत से ज्यादा ध्यान देना आदि।

★ जरूरत से ज्यादा अनुशासित जीवन जीना।

★ हर काम को परफेक्ट करने की कोशिश में जरूरत से ज्यादा समय खराब कर देना।

★ अत्यधिक कर्तव्य निष्ठ व उच्च नैतिक मूल्यों के कारण, उपलब्धियों व सफलताओं से वंचित रहना।

★ दूसरों के हाथ में अपने काम न सौंप पाना (क्योंकि ऐसे व्यक्ति को डर लगा रहता है कि पता नहीं दूसरा इंसान दिए गए काम को ठीक ढंग से करेगा या नहीं)।

★ जीवन के प्रति परिवर्तनीय व हठी नज़रिया।

★कायदे-कानून की आवश्यकता से ज्यादा महत्त्व देना। इस विकार से ग्रस्त व्यक्तियों को एक काम पूरा करने में कई-कई दिन लग जाते हैं; क्योंकि यह हर काम पूरी तरह से सौ प्रतिशत ठीक करने के चक्कर में उलझे रहते हैं। ये लोग हंसी-मजाक भी कम करते हें और इनकी दोस्ती भी कम ही लोगों से हो पाती है।

चिंताग्रस्त व्यक्तित्व विकारः

इस विकार से ग्रस्त व्यक्तियों के ये मुख्य लक्षण हैंः

★ अपने आप को दूसरों से कम आंकना।

★ हर समय तनाव व घबराहट-सी महसूस करना।

★ 'अगर किसी ने बेइज्जत या नजरअंदाज कर दिया तो' जैसी भावनाओं से ग्रस्त होने के कारण दूसरे लोगों से मिलने से कतराना।

★ ये उन्हीं लोगों से खुलकर मिल पाते हैं, जिन पर इनको पूर्ण विश्वास होता है कि वो इन्हें कुछ उलटा-सीधा नहीं कहेंगे।

★ ये लोग खुलकर अपनी बात औरों के सामने नहीं रख पाते।

★ औरों से मिलते समय आत्मविश्वास में कमी महसूस करना।

★ दूसरों की कही आम बातों को भी मन से लगा लेना व परेशान हो जाना।

आमतौर पर ऐसे लोग उस प्रकार के व्यवसाय में जाना पसंद करते हैं, जहां दूसरो लोगों से कम से कम मिलना पड़े, जैसे पढ़ाई-लिखाई का काम या कंप्यूटर ऑपरेटर का काम आदि।

दूसरों पर आश्रित व्यक्तित्व विकारः

(Dependent Personality Disorder)

इस प्रकार के व्यक्तियों के मुख्य लक्षण हैंः

★ अपने निर्णय खुद न ले पाना व इसके लिए दूसरों पर निर्भर रहना।

★ अपने कार्यों के लिए ज्यादातर दूसरों के अधीन रहना।

★ दब्बू बने रहना।

★ जिन पर ये लोग आश्रित होते हैं, उनके लिए अपनी इच्छाओं का दमन करना और जरूरत से ज्यादा दयालू बने रहना।

★अपने छोटे-मोटे हर काम के लिए दूसरों से राय लेना।

★ अगर इन लोगों को अकेले रहना पड़ जाए तो ये काफी परेशान हो जाते हैं और अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। ?

★ हमेशा ही डर लगा रहना कि कहीं इनका निकट संबंधी दोस्त या रिश्तेदार इन्हें छोड़कर दूर न चला जाए।

इस विकार से ग्रस्त व्यक्ति को अकसर अन्य लोग 'चिपकू, दब्बू, डरपोक, भोला' आदि के नाम से पुकारने लगते हें।

गुण होने के बावजूद ये लोग जीवन में ज्यादा कुछ हासिल नहीं कर पाते और दूसरों की उपलब्धियों का बखान करने में अपनी उम्र बिता देते हैं।

मायूस व्यक्तित्व विकारः

(Depressive persoality Disorder)

इस विकार से ग्रस्त व्यक्ति के मुख्य लक्षण हैंः

★ जिंदगी के प्रति नकारात्मक नजरिया।

★ हमेशा अपने आप में वह परिस्थितियों में खामियां ढूंढने की आदत।

★ जीवन के हर पहलू में निराशावाद दृष्टिकोण।

★ निर्णय न ले पाना, झिझक महसूस करना, मन में भय होना कि कहीं दूसरे लोग इनकी उपेक्षा न कर दें।

★ जिंदगी में आम लोगों की तरह खुशी महसूस न कर पाना।

★ मन में हमेशा हलकी-हलकी उदासी-सी महसूस करना।

★ जीवन में कुछ नया करने की इच्छा का पैदा न होना।

★ अपने-आप को दूसरों से कम आंकना।

★ आत्मविश्वास में कमी।

ये लोग भविष्य में उदासी (डिप्रेशन) का शिकार भी होते देखे गए हैं।

'इन्सान के व्यक्तित्व में बदलाव निम्नलिखित स्थितियों में भी आ सकते हैंः

मिरगी का रोग	सिर पर गंभीर चोट
पक्षाघात	हारमोंस में गड़बड़
एड्स	मानसिक आघात

अन्य मानसिक रोगः

सम्राट अशोक, कलिंग के युद्ध के बाद गहरे मानसिक तनाव (अपराध बोध) से गुजरा था, जिसके कारण उसका पूरा व्यक्तित्व ही बदल गया और एक हिंसक राजा की जगह वह एक ऐसा सकारात्मक इंसान बन गया जिसने अपना सारा

जीवन समाज कल्याण के कार्य में लगा दिया।

घमंडी व्यक्तित्व विकारः

ऐसे व्यक्तियों के मुख्य लक्ष;ाण हेंः

★ अपने आप कोजरूरत से ज्यादा महत्वपूर्ण व खास समझना।

★ अपने खिलाफ मामूली-सी बात भी सहन न कर पाना।

★ नाम कमाने व पापुलर होने की जरूरत से ज्यादा लालसा।

दूसरों की बातों वे निर्णयों को तुच्छ समझना।

★ आपसी संबंधों में तनाव रहना, क्योंकि ऐसे लोग हमेशा अपनी ही बात ऊपर रखने की कोशिश करने में लगे रहते हैं और मधुर संबंध बनाने में नाकाम हो जाते हैं।

★ दूसरों के दुख को समझने की कोशिश न करनां

★ अहंकार की भावना ज्यादा होने के कारण इस प्रकार के लोग अकसर उदासीकी तरफ अग्रसर हो जाते हैं।

★ बुढ़ापे में इस विकार से ग्रस्त लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

इस विकार से ग्रस्त व्यक्ति की पत्नी व बच्चे या तो उसके साथ रहना पसंद नहीं करते या फिर सारा जीवन दब्बू बनकर गुजार देते हैं। (हिटलर इसी प्रकार के विकार से ग्रस्त होता प्रतीत होता है। बड़े-बड़े नेताओं, अभिनेताओं आदि में अकसर इस प्रकार के गुण मिलते हैं।)

अलग-अलग व्यक्तित्व विकारों मेंदिए गए लक्षण जरूरी नहीं कि एक साथ एक ही व्यक्ति में हों,कई बार एक ही इंसान में दो या दो से अधिक व्यक्तित्व विकारों के लक्षण भी मौजूद हो सकते हैं। उदाहरण के लिए एक इंसान घमंडी के साथ-साथ शक्की व्यक्तित्व विकार से भी ग्रस्त हो सकता है।

व्यक्तित्व विकार के उपचार

व्यक्तित्व विकार से ग्रस्त व्यक्ति में मानसिक उपचार द्वारा सुधार लाया जा सकता है, परंतु इसमें मनोचिकित्सकों/मनोवैज्ञानिकों को काफी मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकिः

अक्सर ये लोग अपने आपको किसी व्यक्तित्व विकार से ग्रस्त नहीं मानते। ये लोग खुद को ठीक व दूसरों को गलत बताते हैं।

उपचार में काफी समय लगता है और रोगी को लंबे समय तक अपने मनोचिकित्सक से लगातार मिलना पड़ता है। इलाज में अकसर सालों लग जाते हैंः

इलाज के तरीके (कैसे किया जाता है व्यक्तित्व विकार में सुधार)

★ बातचीत (साइकोथैरेपी) द्वाराः इसमें रोगी के नजरिए, दृष्टिकोण व सोचने-समझने के तरीकों आदि को धीरे-धीरे बदलने की प्रक्रिया शुरू की जाती है। व्यक्ति को उसके विकार से जुड़ी समस्याओं के बारे में अवगत कराया जाता है ताकि वह उन पर काबू पा सके।

★ ग्रुप थैरेपी द्वारा : इसमें एक ही प्रकार के व्यक्तितव विकार सेग्रस्त व्यक्तियों को एक साथ इकट्ठा कर मानसिक उपचार दिया जाता है जो कि काफी लाभदायक सिद्ध होता है।

★ दवाओं द्वाराः कुछ खास व्यक्तित्व विकारों जेसे भावनात्मक तौर पर अस्थिर, चिंताग्रस्त, सनकी व मायूस व्यक्तित्व विकारों आदि में दवाओं का इस्तेमाल भी लाभदयक सिद्ध हुआ है।

ध्यान देंः

★ हर आम इंसान के व्यक्तित्व में कुछ खामियां मौजूद रहती हें, परंतु जब ये खामियां जरूरत से ज्यादा हो जाएं तब ये व्यक्तित्व विकार की ओर इशारा करने लगती हैं।

★न जाने कितने लोग इन विकारों से ग्रस्त हैं, परंतु अज्ञानवश इलाज न हो पाने के कारण इनका व इनके साथ रहने वाले लोगों का पूरा जीवन कष्ट मे ंगुजरता है।

★ प्रत्येक व्यक्तित्व विकार के लिए अलग-अलग मानसिक उपचार की विधियां अपनाई जाती हैं।

★ इन विकारों के इलाज के दौरान जैसे-जैसे व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व की समस्याओं का पता चलता है वैसे-वैसे उसमें सुधार आना शुरू हो जाता है।

★ व्यक्तित्व विकार से ग्रस्त व्यक्ति का इलाज संभव है, परंतु ये काफी लंबा व जटिल होता है।

★ अकसर व्यक्तित्व विकार सेग्रस्त व्यक्ति के साथ रहने वाले लोगों को उससे ज्यादा कष्ट व परेशानी उठानी पड़ती है।

अगर आपका कोई अपना व्यक्तित्व विकार से ग्रस्त है तो उसे किसी न किसी बहाने अपने नजदीक मनोचिकित्सक से जरूर मिलवाएं।

(लेखक की पुस्तक 'हर दसवां भारतीय मन का रोगी' से)

तमिलनाडु के मंदिर कें अंदर एक विधवा के साथ सामूहिक बलात्कार

नागापट्टनमः एक 40 वर्षीय महिला जो नागापट्टनम में श्रमिक का काम करती है, के साथ एक स्थानीय मंदिर में सामूहिक ब्लात्कार किया गया, पुलिस ने यह शुक्रवार को जानकारी दी। इस संबंध में दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है।

वीरवार की रात को विधवा महिला का पीछा करके उसे वक्त दबोच लिया जब वहा अपनी बहन के घर जा रही थी तो आरोपियों ने उसे चाकू की नोक पर मंदिर के अंदर खींच लिया।

पुलिस ने बताया कि दोनों ने उसके साथ शुक्रवार सुबह तक सामूहिक बलात्कार किया और फिर वहां से फरार हो गये, महिला को चोटें आई और बेहोश हो गई। पास रह रहे लोगों ने उसे इस हालत में देखा तो उसे उठाकर नागापट्टनम जिला के सामान्य अस्पताल में दाखिल करवाया। पीड़िता ने बाद में बताया कि दोनों आरोपियों ने शराब पी रखी थी।

द टाइम्स ऑफ इंडिया, 9-01-2021

पुजारी ने व उसके साथियों ने एक महिला से सामूहिक बलात्कार कर हत्या कर दी

गाजियांबादः रविवार की रात को उत्तर प्रदेश के बदायूं क्षेत्र के गांव उगैटी में एक 50 वर्षीय आंगनवाड़ी में कार्य करने वाली महिला के साथ स्थानीय मंदिर के पुजारी व उसके दो साथियों ने उसके साथ सामूहिक बलात्कर करने के पश्चात् हत्या करने का अंजाम देने की सूचना मिली है। लेकिन एफआईआर वीरवार को दर्ज की गई जब पोस्टमार्टम में यह स्पष्ट हो गया। महिला के प्राइवेट हिस्सों पर चोटें मिली हैं। तीन में से दो आरोपी गिरफ्तार हो गये हैं जबकि मुख्य आरोपी अभी फरार है। मामले में लापरवाही बरतने के आरोप में एसएसपी द्वारा उगैटी के एसएचओ को बरखास्त कर दिया गया है।

पुलिस न कोई सहायता नहीं कीः

महिला के बेटे ने बताया कि उसकी मां गांव के मंदिर में अपने बीमार पति के स्वास्थ्य की मन्नत मानने के लिया मंदिर जाया करती थी। यह मंदिर एक आश्रम प्रकार का है।

उसने आगे बताया कि रात 11-30 बजे मंदिर के महंत और उसके दो साथी उसकी मां को घायल अवस्था में एक कार में लाद कर उनके घर छोड़ गये, यह कह कर वह वहां के एक सूखे कूएं में गिर गई थी जो कि आश्रम के परिसर में है। महिला के काफी खून बह रहा था ओर शीघ्र ही उसने प्राण त्याग दिये। उसने (बेटे ने) आरोप लगाया कि महन्त सत्यनाराण, 45, व उसके दो साथी जसपाल और वेदराम झूठ बोल रहे थे। अगर ऐसा होता तो उन्हें उसे अस्पताल लेकर जाना चाहिए था।

बेटे ने बताया कि उसकी मां के पास परिवार का एक मात्र मोबाइल फोन था जो टूटा हुआ मिला। फलस्वरूप परिवार के लोग पुलिस को फोन न कर पाये। बाद मेंज ब वे पुलिस स्टेशन पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि पुलिस किसी अन्य कार्य में व्यस्त है...

पुलिस को शव लेने में 18 घंटे से ज्यादा समय लगा। ..बदायूं के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि प्रथम दृष्टि में ही यह एक बलात्कार का मामला है। महिला के गुप्त अंगों पर घाव थे और उसकी पसली की हड्डी टूटी पायी गई।

- द हिन्दू, 7-01-2021

(इस बारे एनडीटीवी व अन्य कुछ चैनलों पर भी विस्तार से समाचार प्रसारित हुआ है)

अंधविश्वास के चलते

बच्ची की दुष्कर्म के बाद कर दी हत्या, फिर खाया कलेजा

(अंधविश्वास की हद)

संतानहीनता के इलाज के लिए अधेड़ ने कराया था अपहरण

संवाद सहयोगी, घाटमपुर (कानपुर) : संतानहीनता के इलाज के नाम पर अंधविश्वासी दंपती व दो दरिंदों ने मासूम बच्ची के साथ जो किया वह सुनकर ही किसी की भी रूह कांप उठे। भदरस गांव में अधेड़ परशुराम ने संतान प्राप्ति के लिए भतीजे और एक अन्य युवक को डेढ़ हजार रुपये थमाकर किसी बच्ची का कलेजा लाने को कहा। युवकों ने पटाखा दिलाने के नाम पर बच्ची को फुसलाकर अपहरण कि2या। जंगल में पहले उसके साथ दुष्कर्म किया, फिर गला दबाकर हत्या की। पेट फाड़कर अंदर के सारे अंग निकाल लिए और दंपती परशुराम व सुनैना को दिए। दंपती ने कलेजा (लिवर) खाकर बाकी अंग ठिकाने लगा दिए।

शुरू में यह घटना तंत्र-मंत्र में बलि देने को लेकर चर्चा में रही, लेकिन दोनों युवक अंकुल व वीरन कुरील गिरफ्तार हुए तो अंधविश्वास और दरिंदगी की दिल दहलाने वाली यह कहानी सामने आई जिसके बाद पुलिस ने परशुराम और सुनैना को भी गिरफ्तार कर लिया है। रविवार सुबह गांव के पश्चिमी छोर पर स्थित भद्रकाली देवी मंदिर के समीप गांव की एक बच्ची का शव क्षत-विक्षत पड़ा मिला। बच्ची के हाथ पैर में रंग, गला व पेट कटा देख किसी तांत्रिक के बलि देने की आशंका जताई जाने लगी। मौके पर खून फैला नहीं पाए जाने के चलते हत्या अन्यत्र करके शव यहां फेंके जाने की बात कही जा रही थी। कोतवाली, बिधनू, साढ़ व सजेतीथ ाना पुलिस मौके पर पहुंची।

डाग स्क्वायड व फारेंसिक टीम ने भी साक्ष्य जुटाए। शुरुआत में पुलिस आशंका जता रही थी कि हत्याकर फेंके गए शव को जानवरों ने खाया है। एसएसपी डॉ. प्रीतिंदर सिंह और एसपी ग्रामीण बृजेश श्रीवास्तव ने भी पड़ताल की। जांच में पता चला कि शनिवार शाम करीब छह बजे गांव के गोगा कुरील का पुत्र अंकुल उर्फ हुला पटाखा दिलाने के बहाने उसे घर से लेकर गया था। उधर, बच्ची के पिता ने हंकुल, वंशलाल, बाबूराम, सुरेश जमादार, साधूराम व कुछ अज्ञात लोगों के खिलाफ बच्ची की हत्या का मुकदमा दर्ज कराया।

तीन डॉक्टरों के पैनल ने शव का पोस्टमार्टम किया तो दिल, फेफड़ा, किडनी स्पलीन (तिल्ली), लिवर छोटी व बड़ी आंत गायब मिली। साथ ही दुष्कर्म की जांच के लिए स्लाइड बनाई गई। वहीं, देर शाम एसपी ग्रामीण बृजेश श्रीवास्तव ने राज फाश करते हुए बताया कि बच्ची की हत्या निःसंतान परशुराम ने कराई थी। उसने किसी किताब में बच्ची का कलेजा खाने से संतान प्राप्ति की बात पढ़ी थी।, जिसके बाद बच्ची की हत्या के लिए उसने भतीजे अंकुल को 500 और उसके साथी वीरन कुरील को एक हजार रुपये देकर तैयार किया था। गिरफ्तार दोनों युवकों ने स्वीकार किया है कि बच्ची का अपहरण करने बाद दोनों ने शराब पी। हत्या करने से पहले बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। चाकू से काटकर अंग निकाले थे। चाचा परशुराम और पत्नी सुनैना ने बांटकर लिवर कच्चा खा लिया था। कुछ अंग कुत्तों को खिला दिए तो कुछ फेंक दिए, जिसे पुलिस बरामद नहीं सकी। चाकू बरामद किया गया है। पुलिस ने अंकुल व वीरन को हत्या, शव छिपाने, दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट की धाराओं में जेल भेज दिया है।

मां-बाप का दावा

सतयुग का समय आने के अंधविश्वास में दो बेटियों को मार डाला। बेटियां फिर जिंदा होंगी

अमरावतीः आंध्र प्रदेश के चित्तूर गांव (Andhar Pradesh's Chittoor district) में अंधविश्वासी मां-बाप ने अपनी दो बेटियों की जान ले ली. उन्हें यकीन था कि कलयुग सतयुग में बदलने वाला है और दैवीय शक्ति (Divine Power) से कुछ घंटों में दोनों बेटियां वापस जिंदा हो जाएंगी. **लड़कियों का पिता एमएससी, पीएचडी, सरकारी कॉलेज में वाइस प्रिंसिपल है जबकि मां स्वर्ण पदक विजेता, और निजी स्कूल में प्रधानाचार्या**। उन्हें विश्वास था कि उनकी लड़कियां दैवीय शक्तियों से फिर जिंदा हो जायेंगी। पुलिस और पड़ोसियों को जब इस घटना की जानकारी मिली तो वे अवाक रह गए.

पुलिस के अनुसार, लड़कियों के पिता ने रविवार रात अपनी बेटियों की हत्या करने के बाद खुद अपने एक सहकर्मी को फोन कर इसका खुलासा किया.सहकर्मी ने तुरंत पुलिस को हत्याकांड की सूचना दी. पुलिस मौके पर पहुंची तो वहमी दंपति (superstitious) को बेहोशी की हालत में पाया. पुलिस को संदेह है कि परिवार कुछ समय से जादू-टोने की किसी रहस्यमय गतिविधियों में शामिल था.

मदनपल्ली के डीएसपी रवि मनोहरचारी के अनुसार, लड़कियों की मां ने दोनों की हत्या की. एक बेटी की हत्या से पहले उसका मुंडन भी किया गया था. पिता वहां खड़ा सब देख रहा था और मां ने ही उसे मार डाला. छोटी बेटी को पहले त्रिशूल से मारा गया और फिर बड़ी बेटी की डम्बल से हत्या की गई. पुलिस सूत्रों ने बताया कि दंपति की योजना खुद को मारने की भी थी लेकिन पुलिस कर्मी समय पर वहां पहुंच गए. पुलिस को संदेह है कि परिवार कुछ समय से किसी रहस्मय गतिविधियों में संलिप्त था। लड़की के पिता पुरुषोत्तम नायडू (एम.एससी, पीएचडी) मदनपल्ली में सरकारी महिला डिग्री कॉलेज में

धोखे से एक महिला से 85000 रूपया ऐंठने पर तांत्रिक गिरफ्तार

नई दिल्ली। मेरठ में रहने वाले एक 55 वर्षीय तांत्रिक को गिरफ्तार किया गया है जिसने एक महिला के घर घरेलू शांति रखने के नाम पर अनुष्ठान करने के लिये थे। अधिकारिक रूप से ये जानकारी मिली है।

पुलिस को एक शिकायत मिली जिसमें शिकायतकर्ता ने गत नंवबर 2019 में एक फोन के माध्यम से राहुल शास्त्री नाम के एक पंडित के सम्पर्क में आई । बउसने उसके घर में शांति के नाम पर पूजा करने के लिए उसे प्रेरित किया जिसके लिये 3500 रुपया खर्च आना बताया जिससे वह फोन पर कुछ अनुष्ठान करेगा। **पीड़िता ने 85,0020 रुपये दिये** : बातचीत के दौरान शिकायतकर्ता ने बताया कि उसे लुभाया गया और उसके चक्र में आकर वह अनुष्ठान करवाने के लिए तांत्रिक के बैंक खाते में पैसे डालती रही।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी ने अलग अलग राशि कुल 85000 रुपये उससे अपने खाते में डलवा लिये।

जब महिला को संदेह हुआ कि उसे धोखा दे दिया गया है तो उसने शिकायत दर्ज करवाई। उसने यह भी आरोप लगाया कि तांत्रिक उसे 55000 रुपया और भी जमा करवाने के लिए उस पर दबाव डाल रहा है।

'जांच करने पर पुलिस ने आरोपी की पहचान हरुन उॅर्फ मिंया शाह जी बंगाली के रूप में की गई है जो कि उत्तर प्रदेश में मेरठ की ज़ाकिर कालोनी का रहने वाला है जहां से उसे सोमवार को दबोच लिया गया है।' विजयंत आर्य, पुलिस उपायुक्त (नार्थ वैस्ट) ने जानकारी दी।

पुलिस के अनुसार पूछताछ के दौरान आरोपी ने बताया कि वह एक तांत्रिक का काम करता है और मिंयाशाह जी बंगाली के नाम पर यह काम करता है। वह अपने लड़के को भी तांत्रिक क्रिया करना सिखाता है जो कि इस मामले में सह अभियुक्त है।-द हिन्दु (24-12-2020)

(कोई नारी डायन नही)

पश्चिम बंगाल में डायन के शक में तीन महिलाओं को प्रताड़ना एक महिला की हत्या .

–डॉ. दिनेश मिश्र

पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में जादू-टोना करने के शक में तीन महिलाओं को लाठी- डंडों से मारा गया। उनमें से एक 60 वर्षीय महिला की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी इस घटना में दो अन्य महिलाएं घायल हो गईं. पश्चिम बंगाल में डायन प्रताड़ना विरोधी कानून बनाने की आवश्यकता है जिसके लिए मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा जा चुका है .

जलपाईगुड़ी जिले के नागरिकता स्थित मैनाखोला गांव में हाल ही में कुछ लोगों की मौत बीमारी से हो गई थी और स्थानीय लोगों का मानना है कि उनकी मौत जादू-टोना के कारण हुई. कुछ स्थानीय युवकों ने दो महिलाओं को काला जादू करने के शक में पीटना शुरू कर दिया. फिर 60 वर्षीय मोंगरा उरांव के नाम का जिक्र आया. मोंगरा उरांव को घर से बाहर घसीट कर लाया गया और उसे भी लाठी-डंडों से पीटा गया. **सूचना मिलने पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची, लेकिन तब तक उरांव की मौत हो चुकी थी**. 50 साल से अधिक उम्र की दो महिलाओं- चमेली उरांव और कोरियो केवार को बचाया गया. उन दोनों को गंभीर चोटें आई हैं और उन्हें मालबाजार अस्पताल में भर्ती कराया गया है पिछले कुछ महीनों से लोगों को संदेह था कि चमेली और कोरियो काला जादू का अभ्यास कर रही हैं, जिससे लोग बीमार पड़ रहे हैं. बुधवार रात को लोगों की एक भीड़ ने चमेली और कोरियो के घरों में जाकर उन्हें पकड़ लिया. उसके बाद पास में ही रहने वाली मोंगरा उराव को उन दोनों महिलाओं का गुरु होने का आरोप लगाया गया और घर से बाहर घसीटकर लाया गया. उसके बाद तीनों को बगल के गांव मैनाखोला में ले गए और लोहे की छड़ों तथा डंडों से उनकी पिटाई की. इसी बीच कुछ लोगों ने नागरकता पुलिस को सूचना दी. पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और महिलाओं को बचाया, हालांकि मोंगरा की मौत घटनास्थल पर ही हो गई थी.

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने बताया कि जादू टोने का कोई अस्तित्व नही होता तथा न ही कोई महिला डायन होती है। यह सिर्फ अंधविश्वास है, इस प्रकार किसी भी निर्दोष को प्रताड़ित करना, उसकी हत्या करना शर्मनाक तथा अपराध है .

उन्होंने प. बंगाल सरकार से मांग की है कि इस मामले में शामिल अन्य सभी दोषियों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए उन्हें कड़ी सजा मिले, तथा प्रताड़ितों के परिवार को न्याय, मुआवजा दिया जाये।

भूल सुधार

तर्कशील पथ के दिसंबर, 2020 के अंक के पृष्ठ 13 पर कविता 'चीखती रेल की पटड़ियां रह गयीं' के लेखक का नाम गलती से डा. रणजीत छप गया था। वास्तव में इस कविता के लेखक 'इमरान प्रताप गढ़ी' है। पाठक कृपया नोट कर लें।

सिरडी धाम सीनियर सै.स्कूल, फरीदाबाद में तर्कशील कार्यक्रम

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के साथियों द्वारा दिनांक 28-12-2020 को श्री सिरडी धाम सीनियर सै. स्कूल, सेक्टर 82, गुरुग्राम में चमत्कारों का पर्दा फाश करते हुए एक कार्यक्रम पेश किया गया। ईश्वर नास्तिक, जो कि हरियाणा विज्ञान मंच व तर्कशील सोसायटी हरियाणा के कार्यकर्ता हैं, ने जादू के खेल दिखाने का कार्यक्रम किया। जिसमें जीभ से त्रिशूल पार करना, आग खाना, चावलों से भरा लोटा बिना किसी वस्तु के सहारे से चाकू घुसा कर उठाना, नारियल में गंगा जल से आग लगा कर भूत भस्म करना आदि खेल दिखाये। ऐसे जादुओं की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए उन्होंने बच्चों को वास्तविकता बताई कि ये केवल ट्रिक हैं जिन्हें संत, बाबा अपने भक्तों को दिखाकर उनको गुमराह कर उन्हें लूटते हैं। इस कायक्रम में ईश्वर नास्तिक का सहयोग साथी योगेश व डार्विन ने किया। विद्यार्थी और अध्यापक कार्यक्रम में चमत्कारों की वास्तविकता को जानकार अत्यंत प्रभावित हुए।

इससे पूर्व दिनांक 26 दिसंबर को इन्हीं साथियों ने जी.पी.एस. सीनियर सैं स्कूल लुहारी, जिला झज्जर में चमत्कारों का पर्दाफाश करने का कार्यक्रम दिखलाया।

गांव बिघाना में तर्कशील

20 दिसंबर को गांव बिघाना में तर्कशील साथियों ने लोगों को समाज में फैली कुरीतियां जेसे अंधविश्वास, पाखंड, जादू टोना व दैवी शक्ति आदि का खंडन किया और चमत्कारों का पर्दाफाश किया और लोगों को तर्कशील विचारधारा के बारे जानकारी दी। ढोंगी पाखंडियों से न लगे जाने व उनके झांसे में न आने के लिए प्रेरित किया।

-रिपोर्ट : राजेश कुमार राजौद

सीडलिंग स्कूल, उदयपुर, राजस्थान में तर्कशील साथियों द्वारा चमत्कारों का पर्दाफाश का कार्यक्रम में अंधविश्वास से जुड़े मिथ दूर किए

दिनांक सताईस जनवरी 2021 को सिड्डलींग माडर्न स्कूल, उदयपुर, राजस्थान हरियाणा विज्ञान मंच व तर्कशील सोसायटी हरियाणा के सामाजिक कार्यकर्ता ईश्वर नास्तिक, द्वारा चमत्कारों का पर्दाफाश करने का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में जीभ से त्रिशूल पार करना, मंत्र द्वारा हवनकुण्ड में अग्नि प्रज्वलित करना, आग खाना, चक्कू से चावल भरा लोटा उठाना, आदि दिखाया गया। इसके साथ ही डार्विन व योगेश द्वारा विज्ञान के सरल प्रयोग करे दिखाये गये।

इस अवसर पर एक छात्रा द्वारा जिसकी फीडबैक की फोटो कॉपी है, ने प्रोग्राम देखकर लिखा है कि 'आज मैंने यह सीखा कि ब्रह्माण्ड में कोई आत्मा नहीं है।

इस कार्यक्रम आयोजन सृष्टि सेवा समिति एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से आयोजन किया गया था जिसमें अंधविश्वास को लेकर छात्रों को जागरूक करने को लेकर एक कार्यशाला हुई। कार्यशाला में अंधविश्वास, जादू-टोना, मंत्रत्र-टोना, मंत्र-तंत्र इत्यादि को न मानने और इनके पीछे वैज्ञानिक कारणों के बारे भी चर्चा की गई।

मुझे ईश्वर से डर नहीं लगता क्योंकि वह कहीं भी नहीं है....
मुझे ईश्वर के मानने वालों से डर लगता है।

–स्टीफन हॉकिंग

तर्कशीलों को चुनौती देने वाले व्यक्ति ने अपनी हार स्वीकारी करते हुए अपनी एक लाख रुपये की जमानत राशि छोड़ कर अपनी हार स्वीकार कर ली है।

उक्त जानकारी देते हुए रेशनेलिस्ट सोसायटी हरियाणा के संस्थापक डा. राजा राम हंडियाया ने बताया कि सोसायटी द्वारा दी गई 23 शर्तो वाली चुनौती में आगरा निवासी मुकेश कुमार ने अपनी हार स्वीकार की है। उन्होंने कहा कि मुकेश कुमार द्वारा एक करोड़ रुपये की ईनामी राशि जीतने के लिए एक लाख रुपए की राशि जमा करवाई गई थी। लेकिन मुकेश कुमार के गुरू पंडोखर सरकार (मध्य प्रदेश) ने तर्कशीलों के पास आकर अपनी कथित चमत्कारी शक्ति दिखाने से इंकार कर दिया है। इसलिए मुकेश कुमार एक लाख रुपए हार गया है। राजा राम ने बताया कि विश्व स्तर पर काम कर रही तर्कशील संस्थाओं ने और कथित चमत्कारों व वहम, भ्रम का पर्दाफाश करने के लिए करोड़ों रूपये के ईनाम रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि विश्व कोई भी व्यक्ति अपनी अलौकिक अथवा दिव्य शक्ति दिखाकर 23 शर्तों में कोई एक भी शर्त पूरी करके करोड़ों रुपये जीत सकता है।

आखिरकार सत्य की ही जीत हुई

सन् 2000 मे हरियाणा के जिला कुरूक्षेत्र मे तर्क और पाखंड का आमना सामना हुआ तो ढोंगी महाराज ने तर्कशीलों के आगे अपने घुटने टेक दिए थे। परंतु अपने अंधश्रद्धालुओं मे शामिल कुछ पुलिस अधिकारियों एवं न्यायिक अधिकारियों के दबाव में हम तर्कशीलों एवं पंचायत सदस्यों पर झूठे केस दर्ज करवा कर तब से लेकर अब तक हमें कोर्ट कचहरी के चक्कर में उलझाए रखा था। इन में हम चार तर्कशील साथी शामिल रहे थे –मैं बलवंत सिंह, बलजीत भारती, कर्मजीत सिंह कर्मा एवं सतीश आजाद। इन मुकदमों की पैरवी लोअर कोर्ट से लेकर हाईकोर्ट तक करने मे हमारे कई लाख रुपये खर्च हो गए। आज की तारीक मे अपने केस को हारता हुआ देखकर अंत मे हमारे वकील के सामने नतमस्तक हो कर उन्हें अपने केस को वापिस लेना पडा। अतः अंत मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जीत हो गई है।

मामला क्या था, इसके बारे में फिर विस्तार से जिक्र किया जाएगा।

–बलवंत सिंह लेक्चरार : संपादक, तर्कशील पथ

महाराष्ट्रः देवी देवताओं के नाम से टीवी पर यंत्र-तंत्र बेचने वाले विज्ञापनों पर रोक का आदेश

औरंगाबादः बॉम्बे हाई कोर्ट की औरंगाबाद बेंच ने टीवी चैनल और मीडिया में देवी-देवताओं के नाम पर बेचे जा रहे यंत्र-तंत्र की बिक्री के अंधविश्वास फैलाने वाले विज्ञापनों पर रोक लगा दी है। साथ ही कोर्ट ने इस प्रकार के यंत्रों का उत्पादन, बिक्री और प्रचार-प्रसार करने वालों के खिलाफ मानव बलि, अंधविश्वास और काला जादू विरोधी कानून के तहत गुनाह दर्ज करने के आदेश भी दिए हैं। कोर्ट ने इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी 30 दिनों में मांगी है। जस्टिस एमजी शेवालकर और टीवी नलवाडे ने राजेद्र गणपतराव अंभोरे की याचिका की सुनवाई के दौरान कहा कि टीवी और मीडिया में धर्म का भय दिखाकर यंत्र-तंत्र बेचे जा रहे हैं। धागा-ताबीज बिकने के विज्ञापन बड़ी संख्या में दिखाकर आम जनता को लूटा जा रहा है। जबकि 2013 के कानून के तहत ऐसे विज्ञापन मीडिया पर प्रसारित करने पर पाबंदी है। याचिकाकर्ता अंभोरे ने सुनवाई के दौरान याचिका वापस लेने का आग्रह किया, लेकिन समाज हित को देखते हुए हाईकोर्ट ने सुनवाई जारी रखी। कोर्ट ने अंधविश्वास फैलाने वाले विज्ञापनों का प्रसार रोकने की जरूरत को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र सरकार और केंद्र सरकार से एक सेल का कठन कर एक माह में अधिकारी नियुक्त करने का आदेश भी दिया - भास्कर (6-1-2021)

फिर पीर की कसर ठीक हो गई

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

प्रायः देखने में आता है कि लगभग सभी गांवों के आसपास किसी न किसी पीर की तुरबत बनी हुई मिल जाती है। बहुत से लोग ओझाओं व बाबाओं के कहने पर अपने खेतों में भी पीर का स्थान बना देते हैं। फिर इन तथाकथित पीरों के स्थानों पर प्रत्येक बृहस्पतिवार के दिन दीये जलाते हुए भी मिल जाते हैं। पीरों के इन स्थानों के बारे में बहुत सी दंतकथाएं भी प्रचलित हो जाती हैं। आमतौर पर माएं अपने बच्चों को पीरों की इन तुरबतों के आसपास खेलने से रोकती हैं। उन के मन में भय बना रहता है कि उनके बच्चे कहीं 'पीर की पकड़' में न आ जाएं। हमारे समाज के जनमानस में इन तथाकथित पीरों का भय इस हद तक व्याप्त रहता है कि ऐसे लोग किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व मंदिर, गुरुद्वारों में मन्नत मांगने के साथ-साथ पीरों की मज़ारों पर भी अपने नाक रगड़ कर मन्नते मानते हुए देखे जा सकते हैं।

परिवार में किसी प्रकार की समस्या के आ जाने पर उसका समाधान करने के लिए बुलाए गये ओझा अथवा स्याने लोग आमतौर पर उसे पीर की नाराजगी से जोड़ देते हैं। इसके साथ ही ऐसे ओझा लोग संबंधित परिवार को अपने घर के आसपास अथवा खेतों में किसी विशेष स्थान पर पीर की तुरबत के नाम कुछ ईंटों का ढांचा खड़ा करवा देते हैं। ओझा लोग खुद तो ईंटों के ढांचे में 'पीर की स्थापना' के नाम पर मोटी दान-दक्षिणा लेकर चलते बनते हैं परंतु संबंधित परिवार को हमेशा के लिए मानसिक गुलाम बना जाते हैं। ऐसे कथित पीरों के भय से मानसिक गुलाम बने लोगों को कैसी-कैसी मानसिक पड़ताड़नाओं में से गुज़रना पड़ता है? इस का उदाहरण एक ऐसे ही मामले से स्पष्ट होता है, जो मेरे सामने आया तथा जिसका मनोवैज्ञानिक ढंग से हल किया गया।

गुरविन्द्र सिंह की शादी को दो वर्ष हो चुके थे। इस दौरान एक पुत्र के रूप में उनके घर में संतान भी आ चुकी थी। वे पति-पत्नी अपने संयुक्त परिवार में प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। गुरविन्द्र उसका बड़ा भाई एवं उनका पिता तीनों ही अत्यधिक परिश्रमी थे। उनके पास पहले से ही काफी अच्छी पुश्तैनी जमीन थी। वे सभी सिख धर्म की मर्यादा के अनुसार चलने वाले थे। अतः वे सभी किसी भी प्रकार के नशे इत्यादि से कोसों दूर थे। गुरविन्द्र की शादी से पांच वर्ष पूर्व उन्होंने अपनी मेहनत के बल पर गांव से दूसरी ओर किसी किसान द्वारा बेची जा रही पांच एकड़ जमीन खरीद ली थी। गांव के सभी लोगों के साथ उनका बहुत अच्छा मेल मिलाप था। वे किसी भी प्रकार की राजनीति अथवा गांव की गुटबाजी में कभी शामिल नहीं होते थे। परंतु पिछले कुछ समय से गुरविन्द्र सिंह की पत्नी किरणजीत कौर मानसिक तौर पर परेशान रहने लग गई थी। शुरू-शुरू में किरणजीत को सपने में उनके गांव की एक मृत बुढ़िया सपने में दिखाई दी। उसके पश्चात् उसे सोते समय दबाव पड़ना शुरू हो गया। उसके बाद उसे कई बार कोई अनजान आदमी अथवा औरत सपने में पकड़ते हुए महसूस होने लग गये। फिर उसे नींद आना और भूख लगना भी बन्द हो गई। धीरे-धीरे उसकी मानसिक समस्या बढ़ती ही चली जा रही थी।

सिख धर्म के कट्टर अनुयायी एवं गुरमत रहत मर्यादा का पालन करने के कारण पहले पहल तो वे बाबाओं, ओझाओं एवं मुल्ला-मौलवियों के चक्कर में नहीं पड़े थे। वे उसे लेकर विभिन्न गुरुद्वारों में माथा रगड़ते रहे अथवा अनेक डाक्टरों से दवाई दिलवाते रहे । दवाई खाने से उसे भूख तो लगने लग गई थी परंतु उसे महसूस होता था कि खाया हुआ भोजन उसके कलेजे पर ही पड़ा हुआ है, वह हज़्म नहीं हो रहा। अब उसके शरीर में कई हिस्सों पर नीले निशान भी पड़ने लग गये थे। उसकी

सेहत बहुत कमजोर हो चुकी थी।

अब धीरे-धीरे उनके घर की समस्या और भी विकराल रूप धारण करती जा रही थी। एक दिन अचानक ही एक कमरे के अन्दर रखी हुई पेटी के ऊपर रखे कपड़ों में अपने आप ही आग लग गई। फिर एक दिन घर में रखे सोफासेट को आग लग गई । फिर हर दूसरे तीसरे दिन घर में कहीं न कहीं पर आग लग जाती। घर के ट्रंकों, पेटियों एवं अल्मारियों में रखे हुए महंगे सूट, कंबल, रजाइयां व अन्य कीमती सामान सारा अग्नि की भेंट चढ़ चुका था। अब पानी सिर से ऊपर निकलने लगा तो रिश्तेदारों के कहने पर वे बाबाओं की शरण में भी पहुंचे, परंतु समस्या का समाधान होने के बजाए बात और अधिक बिगड़ती चली गईं। लगभग सभी बाबाओं, ओझाओं एवं मुल्ला-मौलवियों ने उन के घर पर तथा किरणजीत पर पीर की क्रोपी बता कर अपने-अपने फार्मूले के द्वारा उनके घर का इलाज करने का ढोंग रचाया परंतु समस्या और भी गंभीर हो गई। जब किरणजीत को सपनों के साथ-साथ दिन में भी पीर के दिखाई देने का अहसास होने लग गया। कोई भी काम करते समय उसे महसूस होता कि जैसे पीर उसे पीछे से पकड़ना चाह रहा हो। अब उसकी नींद और भूख पूरी तरह से खत्म हो चुकी थी। परिवार वालों का बाबाओं एवं ओझाओं में विश्वास न होने के बावजूद उन्हें अपने घर की समस्या का समाधान की चाहत में बाबाओं का कहा मान कर कई उल्टे-पुल्टे कार्य भी करने पड़ रहे थे।

अंत में जब वे हर प्रकार से थक चुके थे तो उनके एक रिश्तेदार ने उनकी समस्या का पता चलने पर उन्हें मेरा पता बता कर मेरे पास रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केन्द्र में भेज दिया। उन दोनों पति-पत्नी के साथ विस्तार के साथ बातचीत करने पर उनकी समस्या की तह तक जाने में मुझे मदद मिल गई। फिर किरणजीत के साथ मनो वैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग करने पर उसके मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेतों एवं पीर के डर को दूर कर दिया गया। उसके बाद उन्हें दो-तीन बार परामर्श केन्द्र में बुला कर उसे सार्थक सुझाव दिये गये। उसके बाद उसे तथाकथित पीर की कभी कसर नहीं हुई और उनके घर में फिर कभी किसी सामान को आग भी नहीं लगी।

कारणः-

वास्तव में किरणजीत अत्यंत संवेदनशील महिला थी। वह किसी भी प्रकार के अत्याचार का विरोध नहीं कर पाती थी। घर में कभी कष्टप्रद परिस्थिति होने पर भी वह उसका विरोध करने के बजाय मन ही मन में कुढ़ती रहती थी। हालांकि उन पति-पत्नी का आपस में अत्यधिक प्यार था, फिर भी वह अपने साथ हो रहे अन्याय के बारे में अपने पति से कभी शिकायत नहीं कर पाती थी। उस की जेठानी उससे अत्यधिक ईर्ष्या करती थी। जेठानी बहुत चालाक थी और किरणजीत बिल्कुल भोली-भाली थी। उसकी जेठानी उनकी सास के किरणजीत के विरुद्ध हमेशा कान भरती रहती थी और सास बिना कोई जांच-पड़ताल किये ही किरणजीत को डांट-डपट दिया करती थी। उसे अपनी सास व जेठानी के रूखे व्यवहार के कारण क्रोध तो बहुत आता था परंतु वह इसे अपने मन ही मन में पी जाती थी। जब उसके क्रोध का गुबार उसके मन पर बहुत अधिक भारी हो गया तो उसकी सहनशक्ति जवाब दे गई और वह अवचेतन तौर पर एक दिन अपने ही कपड़ों को आग लगा बैठी। ऐसा करने से उसके मन को थोड़ा सा स्कून मिल गया। फिर अपने मन के गुबार वाले वजन को हल्का करने के लिए मौका मिलने पर कभी सास के तथा कभी जेठानी के कपड़ों व सामान को आग लगा देती। आग लगाने के बाद कभी-कभी उसे दौरा भी पड़ जाता और वह काफी देर तक गुमसुम सी पड़ी रहती। संवेदनशील एवं अंधविश्वासी माहौल में पली बढ़ी होने के कारण कथित भूत-प्रेतों के सपने तो उसे पहले से ही आते रहते थे। सास व जेठानी के द्वारा उसका लगातार मानसिक शोषण करने के कारण उसकी समस्या और विकट होती गई।

यहां पर यह सवाल भी उठता है कि सभी बाबाओं एवं ओझाओं ने किरणजीत पर 'पीर की कसर' होने का दावा क्यों किया? वास्तव में उनकी शादी से कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने जो जमीन खरीदी थी उस जमीन में पहले से ही एक पीर की तुरबत बनी हुई थीं एक प्रगतिशीलन सिक्ख परिवार एवं सिक्ख रहत मार्यादा के अनुसार चलने वाले हाने के कारण उन्होंने शहर के गुरुद्वारा के सेवादारों को कह कर वह तुरबत तुडवा दी थी तथा उस तुरबत के पास

लगा हुआ बड़ा सा पीपल का वृक्ष गुरुद्वारा के सेवादार काट कर गुरुद्वारा की रसोई में जलाने के लिए ले गये थे। बातों-बातों में जब बाबाओं एवं ओझाओं को 'पीर की तरुबत' के तोड़े जाने का पता चला तो उन सभी ने अपने 'दिव्य ज्ञान' के कारण उनके घर पर व किरणजीत पर कथित पीर की क्रोपी का होना बता दिया। वे परिवार वालों को कथित पीर का डर दिखा कर अपनी जेबें भर कर चले जाते रहे और किरणजीत के अवचेतन मन पर कथित पीर का डर और ज्यादा हावी होता चला गया।

अब किरणजीत की मानसिक समस्या के कारण तो स्पष्ट रूप में सामने आ चुके थे, परंतु समस्या के स्थाई समाधान के लिए किरणजीत का मनोबल बढ़ाने के साथ-साथ उसकी सास की काऊंसलिंग भी जरूरी थी। अतः मैंने अगली बार उन्हें उसकी सास को भी अपने साथ ले कर आने का निर्देश दे दिया। अगले सप्ताह जब वे आए तो किरण्जीत के चेहरे की मुस्कान उसके पूर्णतः स्वस्थ होने की गवाही दे रही थी। पहले तो मैंने किरणजीत का मनोवैज्ञानिक ढंग से मनोबल बढ़ाया और फिर उसकी सास को बुला कर मनोवैज्ञानिक प्रभाव के द्वारा उसे किरणजीत के साथ अपनी बेटी जैसा व्यवहार करने के स्पष्ट निर्देश दिये। साथ ही उसे स्पष्ट रूप से कह दिया कि यदि आगे से वह किरणजीत के साथ सौतेला व्यवहार करेगी तो अब परिणाम केवल उसी को ही भुगतने पड़ेंगे। मेरे द्वारा ऐसा कहने पर उसकी सास अन्दर ही अन्दर से पूरी तरह से भरयभीत हो गई और उसने वचन दिया कि आगे से वह अपनी दोनों बहुओं के साथ एकसमान व्यवहार करेगी। उसके बाद उनके घर में दोबारा ऐसे कोई समस्या नहीं आई।

नोटः*यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं।*

'ईश्वर एक रुग्ण विचार प्रणाली है, इससे मानवता का कोई कल्याण होने वाला नहीं है।'
– आचार्य चार्वाक

स्मृति-शेष

तर्कशील साथी मास्टर राजा राम हंडियाया के पिता जी का दिनांक 29-11-2020 को 95 साल की आयु प्राप्त कर देहांत हो गया।

तर्कशील साथ एवं तर्कशील पथ पत्रिका को प्रिटिंग आकार देने वाले बलदेव सिंह महरोक के छोटे भाई बलकार सिंह (62) का एक दिसंबर, 2020 को बीमारी के चलते निधन हो गया। बलकार सिंह जी पत्रिका के संपादक मा. बलवंत सिंह जी के बहनोई भी थे।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर, हिंदी के साहित्यकार व आलोचक प्रो. सुभाष चंद्र की जीवन संगिनी विपुला जी का 50 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 8-01-2021 बीमारी के चलते निधन हो गया।

तर्कशील साथी सुजय कुमार, अम्बाला की मात तृप्ति कुमार जी, आयु 83 वर्ष का दिनांक 22-12-2020 को निधन हो गया।

तर्कशील साथी जयदेव की माता श्रीमती बचनी देवी का निधन दिनांक 16 जनवरी, 2021 को हो गया।

तर्कशील सोसायटी हरिणाणा के उक्त सभी शोक संतप्त परिवारों के दुःख में सहभागी बनते हुए हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा।

फंडिंग

लघु-कथा

कार की सीट पर बैठी महिला सामने सड़क किनारे काले कानूनों का विरोध करते किसानों को देख कार चला रहे अपने पति से बोली- ये देखो किसानों के भेस में टुकड़े-टुकड़े गैंग जो अपने देश के टुकड़े करना चाहता है, अरे इनके ब्रेंडड कपड़े देखो, इनके मंहगे फोन देखो, ये कहीं से किसान लगते है ?

ये बात सुन उसका पति चुप रहा और हाइवे पर गाड़ी सरपट दौड़ाता आगे बढ़ गया। कुछ आगे चल कर किसान आंदोलन का सड़क किनारे लंगर लगा हुआ था। वे आने जाने वालों को भी लंगर का न्योता दे रहे थे। चल रही गाड़ियों में चाय, पकोड़े वितरित कर रहे थे ।

ये देख पिछली सीट पर बैठा उनका 10 वर्षीय बेटा बोल पड़ा-मम्मी, मम्मी, मैं भी पकौड़े खाऊँगा।

महिला बोली-कोई नहीं बेटा अभी किसान अंकल आ कर दे जाएंगे।

इतने में एक युवक आया और देखते ही देखते ब्रेड पकौड़े और चाय पकड़ा गया, बच्चा पकौड़े पा कर खुश था। तीनों गाड़ी साइड में लगा कर खाने लगे। इतने में पति गाड़ी से उतरा और लंगर में वितरित हो रहे गुलाब जामुन ले आया। अपनी पत्नी को गुलाब जामुन की डिस्पोजल कटोरी पकड़ा फिर से गाड़ी आगे बढ़ा दी

जैसे ही गाड़ी कुछ दूर गई महिला बोल पड़ी- अरे देखो, इनको सारी फंडिंग विदेशों से हो रही है। अरे किसानों की बस की थोड़ी है ब्रेड पकौड़े, गुलाब जामुन का लंगर लगाना, सुना है कैनडा के पैसे से दिल्ली में पिज्जा तक खा रहे है ।

अरे क्या बोली जा रही हो, ये सब तुमको बताता कौन है?, पति कुछ डांटते बोला।

'अरे तुम टीवी नहीं देखते, सारा दिन तो न्यूज वाले बताते रहते है। वैसे भी मैं मोहल्ले के व्हाट्सएप ग्रुप में ऐड हूं। ऐसी-ऐसी वीडियो और ऐसे संदेश सारा दिन आते है', महिला बोली

पति गुस्से में बोला- तुम्हारा दिमाग इस टीवी और व्हाट्सएप ने खराब कर रखा है, हम तो पहले से नोटबन्दी के मारे हुए दुकानदार हैं। हमारी दुकानदारी तो किसानों के भरोसे चलती है, अगर ये भी ना रहे तो दाने-दाने को मोहताज होना पड़ जाएगा, फिर देखते रहना टीवी। महिला बोली-अरे तुमको क्या पता देश में क्या हो रहा है, सारा दिन दुकान में लगे रहते हो, कभी टीवी या फोन खोलकर तो देखो क्या चल रहा है।

इसी बहस में हाईवे पर बना टोल प्लाजा आ गया तो पीछे बैठा उनका बेटा बोला- पापा पापा टोल आ गया, आज पिछली बार की तरह टोल अंकल से मत लड़ना कि फास्ट टैग नहीं लगा तो दुगने पैसे नहीं दूँगा आप पूरे पैसे दे देना, मुझे अच्छा नहीं लगता जब आप किसी से झगड़ते हो।

आदमी बोला- बेटा आज हमको तुम्हारे टोल अंकल से लड़ने की जरूरत नही है, अब तुम्हारे किसान अंकल ने अपने आंदोलन चलते टोल फ्री करवा रखा है।

बच्चा खुशी से बोला-पापा आज तो अपने पैसे बच गए, ये किसान अंकल कितने अच्छे है, हमको पकौड़े, गुलाब जामुन भी खिलाये और टोल अंकल को पैसे भी नहीं देने दिए।

इतने में गाड़ी टोल से क्रॉस करने लगी तो आदमी अपनी पत्नी से बोला-तुम कहो तो टोल के पैसे मैं पास बने टोल प्लाजा के दफ्तर में दे आऊ, आखिर तुम तो किसानों के विरोध में हो, किसानों ने हमारा टोल लगने नही दिया, अब मैं ही टोल के पैसे दे आता हूं ।

इतने में गाड़ी टोल से आगे निकल एक साइड में खड़ी हो गई तो महिला अपने पति पर चिल्लाई- तुम बिल्कुल निरे बुद्धू हो। जब टोल पर पैसे नहीं लगें तो जबर्दस्ती क्यों देना चाहते हो, पैसे क्या पेड़ पर उगते हैं?

पर तुम्हीं तो कह रही किसान नहीं, टुकड़े-टुकड़े गैंग है, फिर देश हित के लिए पैसे हम दे आते है।

ज्यादा दानवीर कर्ण बनने की जरूरत नहीं, अगर ज्यादा पैसे हो गए हो तो शाम को गुरु जी के आश्रम में चढ़ा आना ताकि तुमको कोई अकल आये गुरु जी के आशीर्वाद से, महिला बोली।

इतने में बेटा बोला - पापा, पापा आप टोल वाले पैसे में से आधे पैसे मुझें दे दो।

आदमी पीछे बच्चे की तरफ मुड़ा और प्यार से बोला- बेटा तुम इस आधे पैसे का क्या करोगे ?

वो बच्चा मासूमियत से बोला - मैं किसान अंकल को देकर आऊँगा ताकि वो बैठे रहे, जिस से किसी के पापा को टोल अंकल से नहीं लड़ना पड़ेगा ।

बच्चे की बात सुनकर आदमी गाड़ी से उतरा और अपने बेटे को गोदी में उठाये टोल प्लाजा पर बैठे किसानों को अपने बच्चे से फंडिंग करवाने उनकी तरफ चल पड़ा। ★★

मानव कर्तव्य

–आर.पी.गांधी

दुनिया भर के सभी धर्मो, मजहबों और सम्प्रदाओं में एक बात सांझी है कि मनुष्य जीवन ही ऐसा जीवन है जिसके पास बुद्धि है। अपने दुखों, कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए हमें ईश्वर की प्राप्ति करनी चाहिए परन्तु हर धर्म और मजहब को तरीका एक दूसरे से भिन्न है। जैसे कि ईसाई धर्म में कहा गया है कि हर रविवार के दिन चर्च जाना चाहिए। पादरी के प्रवचन सुनने चाहिए और बतिस्मा ग्रहण करना चाहिए। अपना ईमान हजरत ईसा पर लाना चाहिए। कारण हजरत ईसा आपके गुनाहों को अपने कंधों पर ले लेगा और आपके लिए ईश्वर से सिफारिश करेगा जिससे आपको स्वर्ग की प्राप्ति होगी औरस्वर्ग में आपको वे सभी सुख सुविधाएं मिलेगी जो आपधरती पर प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए क्रास वाली माला अपने गले में डालिए। ईसा के नाम की स्तुति कीजिए। गरीबों को दान दीजिए जिससे तुम्हारा कल्याण होगा। यही एक अकेला रास्ता है जिससे आप स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरे स्थान पर इस्लाम धर्म के मानने वाले लोगों की संख्या आती है। इस धर्म के अनुसार अल्लाह जो अकेला है जिसका पैगम्बर हजरत मोहम्मद है और इनकी पवित्र पुस्तक कुरान है। वे मानते है कि इन तीनों अल्लाह, पैगम्बर व कुरान पर ईमान लाईए। पांच वक्त की नमाज पढ़ें। सुन्नत पर अमल करें और जकात दे। बुत्त-परस्ती से दूर रहें। काफिरों कायकीन न करे। तसबी (माला) फेरें। जेहाद में यकीन रखें। अगर आप कुफर को खत्म करें तो अल्लाह आपका साथ देगा। मोमिनों को जन्न्त नसीब होगी। हदीस के मुताबिक जन्नत में आपको वह सभी सुख सुविधाएं मिलेंगी जो आपको धरती पर नसीब नहीं हुई। पानी की नहरें शराब की नहरें, हर तरह के फलदार वृक्ष, जाम पिलाने के लिए सुन्दर लड़कियां होगी।

हिन्दू-धर्म की अपनी अलग सोच है दोनों समय पूजा, यज्ञ-हवन, मन्दिरों में देवी-देवताओं के दर्शन, तीर्थो की यात्रा, पवित्र नदियों में स्नान को धर्म के कार्य माना गया है। ईश्वर को याद करने के लिए माला का सहारा लिया जाता है। सिख धर्म में भी सिमरन पर विशेष बल दिया गयाहै। धार्मिक पुस्तक श्री गुरू-ग्रन्थ साहिब को बहुत आदर दिया जाता है। उसको रूमाला में लपेटकर सुरक्षित रखा जाता है, उसको चंवर से हवा भी की जाती है। जहां जहां सिख धर्म के गुरूओं ने प्रचार किया है या आराम किया है वहां पर आलीशान गुरूद्वारों का निर्माण किया गया है वहीं पर चौबीसों घंटे लंगर चलता रहता है । पुण्य कमाने के लिए गरीबों पर दया और दान किया जाता है इन कार्य को करने से ईश्वर प्रसन्न होता है और स्वर्ग की प्राप्ति होती है। मोक्ष की प्राप्ति भी होती है जिससे असंख्य योनियों में जाने से मुक्ति मिल जाती है। अगर हम इसको सामाजिक रूप में सोचें तो ये सभी कार्य व्यक्तिगत तो है पर समाज के लिए नहीं। समाज जिससे हमारा जीवन चलता है वस्त्र, खाना-पीना घर आदि आवश्यकताएं समाज से ही पूरी होती हैं। उसके प्रति भी हमारा एक दायित्व बनता है। दान जिस पर विशेष बल दिया जाता है, पर प्रश्न यह है कि कोई इन्सान इतना असहाय क्यों हो कि उसको दूसरे इन्सान के आगे हाथ फैलाना पड़े। दूसरे व्यक्ति में दानी होने का अहंकार पैदा क्यों है ? घमंडी व्यक्ति बाकि लोगों पर दबाव बनाने का प्रयास करता है तथा बाकि लोगों को अपने अधीन दूसरे व्यक्ति में दानी होने का अहंकार पैदा क्यों हो ? एक लम्बे समय तक इन्हीं कारणों से दास प्रथा चली। दास प्रथा में दासों को इतना ही खाने को दिया जाता जिससे वह जिन्दा रह कर अपने स्वामी के काम करता रहे। इब्राहिम लिंकन जो अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति हुए उन्होंने दास प्रथा को समाप्त करने का कानून बनाया तो उन्हें गोली मार दी गई। अफ्रीका के जंगलों में कुत्तों द्वारा हबशियों का शिकार किया जाता रहा है। बन्द डिब्बों में उनका मांस बंद कर खाने के लिए बेचा जाता रहा है। राजा हरिश्चन्द्र की कहानी भी कुछ इसी तरह की है। उसको भरी मण्डी में स्वयं को बेचना पड़ा। उसकी पत्नी तारा और बेटा रोहताश भी बेचे गए। हिन्दुस्तान में दास प्रथा के अन्र्तगत पिता के मरने पर जब भाईयों में जायदाद को लेकर बंटवारा होता है तो दासों को भी चल अचल

सम्पत्ति की तरह आपस में बांट लिया जाता रहा है। एक लम्बे संघर्ष और बलिदानों के पश्चात् मानव समाज दास प्रथा से मुक्त हो पाया। भारत को बाहर से आए हमलावरों का दास बनकर जीना पड़ा। मुगलों ने भी पांच सौ वर्ष तक भारत में राज्य किया। अंग्रेजों ने भी लगभग दो सौ वर्षों तक भारत को गुलाम बनाकर रखा। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। 26 जनवरी 1950 को हम अपने विधान के मालिक बने। 1857 में भारत की पहली आजादी की लड़ाई के समय लगभग 25 लाख लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। 13 अप्रैल 1919 को भी जनरल डायर द्वारा निर्दोष लोगों को गोलियों का निशाना बनाया गया जिसका बदला शहीद उद्यम सिंह ने सन 1940 में इंग्लैंड में जाकर गवर्नर ओ डायर को गोली से मारकर लिया।

आज भी इस वैज्ञानिक युग में कर्जे के दबाव में दबे हुए आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में किसानों को आत्महत्या का शिकार होना पड़ रहा है। लम्बे समय से इस प्रकार से गले सड़े समाज को बदलना ही मानव कर्तव्य है। शहीदे आजम भगत सिंह के अनुसार हमें ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जिसमें आदमी को आदमी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। भगत सिंह ने अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए और नए समाज का निर्माण करने के लिए बलिदान दिया। हम सभी भारतवासियों को संगठित होकर परिवर्तन लाना होगा। यह सभी भारतवासियों का लक्ष्य होना चाहिए। जैसा कि इन दिनों अरविन्द केजरीवाल अपने मंच पर एक गीत का अलाप करते हैं। इन्सान से इन्सान का हो भाईचारा यही पैगाम हमारा।

गीत के शब्द बहुत अच्छे हैं लेकिन इस अवस्था तक पहुँचने के लिए व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता है। हमें हर व्यक्ति तक यह पैगाम पहुँचाना है ताकि अगली पीढ़ी नए विचारों से ओत प्रोत हो। व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। हर क्षेत्र में नीतिगत बदलाव लाकर समाज को एक नई दिशा देनी होगी। समाज के हर नागरिक को इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।

मैं अपने इस निबन्ध के आरम्भ में लिख चुका हूँ कि सभी धर्मो और मजहबों में दो बातें सांझी हैं। वे हैं ईश्वर प्राप्ति और दान देना। इस्लाम में जकात के नाम से सिक्खों में दसौंध के नाम से और हिन्दू-धर्म में कन्यादान को बहुत बड़ा महत्व दिया जाता है जबकि मानवता की दृष्टि से यह उचित कार्य नहीं है। मनुष्य को मनुष्य दान करने का अधिकार किसने दिया? जितनी आवश्यकता लड़के को लड़की की है उतनी ही आवश्यकता लड़की को लड़के की भी है। फिर ये दान कैसा? हम इस बात को प्रायः भूल जाते हैं कि हमारी इस दान देने की मनोवृति के कारण असंख्य कामचोर भिखारी पैदा हो गए हैं। इतना ही नहीं ये भिखारी अनेक लतों के शिकार भी हो जाते हैं और अपनी पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियों से पलायन करते हैं। कितने ही डेरे और आश्रम खुल गए हैं जो पूर्ण रूप से दान पर निर्भर करते हैं। धार्मिक स्थानों पर भी भिखारियों की लम्बी लम्बी कतारें देखी जा सकती हैं। कुरुक्षेत्र में भिन्न-भिन्न जातियों के नाम से धर्मशालाएं हैं जिनमें दानों वक्त लंगर पकता है। वहां इन भिखारियों को खाना लेते हुए लम्बी कतारों में देखा जा सकता है और नशे के लिए पैसे मांग लेते हैं और प्रायः नशें की हालत में स्टेशनों पर अथवा सरोवरों के किनारे पड़े रहते हैं। कुम्भ के अवसर पर साधुओं के पहले स्नान करने के पीछे झगड़े होते हैं जिसमें कई बार लोग मारे जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुम्भ जैसे मेलों में कई बार भगदड़ से अनेक मौतें हो जाती हैं। सफाई की समुचित व्यवस्था न होने से महामारियां भी फैल जाती हैं। जबकि मानव कर्तव्य यह है कि हम एक स्वच्छ,स्वस्थ समाज का निर्माण करें। हम एक बीमार समज में रहते हैं जिसमें गरीबी, भुखमरी, अनपढ़ता, बीमारी और अन्ध-विश्वास की भरमार है। हमें संगठित हो ऐसी सरकारों का निर्माण करना है जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार की गारंटी सरकार की हो। यह सपना शहीदे-आजम भगत सिंह का भी था। इस सपने को साकार करना देश के हर नागरिक का कर्तव्य बन जाता है। गली-सड़ी रूढ़ीवादी रस्मो रिवाज से जनता को सचेत कर नया समाज बनाने के लिए प्रेरित करना होगा। इसकी पूर्ति के लिए देश के हर नागरिक का कर्तव्य बन जाता है कि काल्पनिक स्वर्ग या नरक जो इस पृ्थ्वी से कहीं परे माना जाता है उसका प्रलोभन और भय दिखाकर दीर्घ काल से मानव को पथ-भ्रष्ट कियाजा रहा है। पूंजीवादी समाज की यह पूरी कोशिश रहती है कि जनता को भाग्यवादी बनाया जाए। भाग्यवादी बनाकर हर हाल में सन्तुष्ट रहने की शिक्षा दी जाए ताकि लोग अपनी दुर्दशा के कारणों को न जान सकें और शासन के विरूद्ध आवाज न उठाए। भाग्यवाद का प्रचार प्रसार करने के लिए मन्दिरों,

मस्जिदों, गुरूद्वारों और गिरिजाघरों का सहारा लिया जाता है। उनकी श्रद्धा और आस्था का दुरूपयोग कर उनके विकास में बाधा डाली जाती है। उनकी सोच को विकृत किया जाता है। गुरू-भक्ति और दान पर बल दिया जाता है जिससे इन डेरों, आश्रमों के अनेक अनुयायी बन जाते हैं जो दान द्वारा इन तथा कथित धार्मिक स्थानों को भव्य रूप दे देते हैं जो प्रायः विलासिता के केन्द्र बनकर रह जाते हैं। जनता को मानव कर्तव्य को समझना चाहिए। ठगी स्थलों से बचकर अपनी मेहनत की कमाई को अपने परिवार को आत्म-निर्भर बनाने के लिए खर्च किया जाए न कि इन तथा कथित धार्मिक स्थलों को सींचा जाए।

एक बात और जो सभी धर्मों में सांझी है वह है ईश्वर प्राप्ति परन्तु इसमें हर धर्म की अपनी अपनी विधियां हैं। वास्तविकता यह है कि मानव जीवन बहुत लम्बा नहीं होता। इसलिए वह मृत्यु के बाद एक दूसरे जीवने की कल्पना करता है, जिसमें नरक का डर और स्वर्ग का लालच दिया गया है। स्वर्ग में उन सभी प्रकार की सुखों का वर्णन है जो धरती पर प्राप्त नहीं हो सके। स्वर्ग में उन सभी सुख-सुविधाओं की प्राप्ति की बात कही जाती है। उसके लिए आपको ईश्वर को प्रसन्न करना पड़ेगा जिससे अधिकतर जनता अपना अधिकतर समय पूजा पाठ और कई प्रकार की भक्ति गोष्ठियों , धार्मिक समारोहों में बर्बाद करती रहती हैं साथ में धन की भी बर्बादी होती है। इसके कारण पाखण्डी लोगों को जनता का शोषण करने का मौका मिलता है लोग इन्हीं प्रकार के उद्देश्यों को लेकर बड़े-बड़े धार्मिक स्थलों की यात्रा करता हैं। इन धार्मिक स्थलों पर अत्यधिक भीड़ के कारण कई बार बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं घट जाती हैं। कई बार अचानक प्राकृतिक आपदाएं भी इन स्थानों पर एकत्रित जनसमूह को अपनी चपेट में ले लेती है जिससे अधिक मात्रा में इन्सान मारे जाते हैं। केदारनाथ, बद्रीनाथ में बाढ़ के कारण हजारों लोग जो तीर्थ यात्रा पर आए थे मौत का शिकार बन गए थे।

मनुष्य द्वारा निर्मित अन्तरिक्षयान खगोल को छान रहे हैं उन्हें अतरिक्ष में कहीं भी स्वर्ग या नरक दिखाई नहीं दिया। ऐसे ही दूर-दर्शी यन्त्र जो अन्तरिक्ष में वैज्ञानिकों ने छोड़ रखे हैं जैसे कि अमरीका ने हवल नाम का एक यन्त्र अन्तरिक्ष में छोड़ा हुआ है जो अन्तरिक्ष में दूर तक निरीक्षण कर पाता है मगर कहीं भी ऐसा कोई स्थान न मिला जिसे स्वर्ग या नरक का नाम दिया जाए जिससे धरती पर विद्यमान बुद्धिजीवी स्वर्ग नरक को कोरी कल्पना के सिवाय कुछ नहीं मानता। उसका तोयह मानना है कि अगर कहीं स्वर्ग है तो उतार ला जमीन पर जिसका भाव यह है कि जिस स्वर्ग को हमने अपनी कल्पनाओं में स्थान दिया है उसको अपनी मेहनत और लग्न से इसी धरती पर साकार किया जा सकता है। आवश्यकता है तो बस उस स्वर्ग प्राप्ति की सच्ची अभिलाषा और उसके लिए अनवरत संघर्ष की। वर्तमान में भी ऐसे अनेक अविष्कार औरसाधन हैं जिन्होनें हमारे जीवन में सुख और आनन्द का संचार किया है और जीवन को स्वर्ग समान बनाने में भरपूर योगदान दिया है। उदाहरण के लिए विद्युत, विद्युत बल्ब, इससे सम्बन्धित खोजें, टैलीविजन, कम्प्युटर, मोबाईल फोन, वायुयान, रेलगाड़ी, कार, ट्रक, मोटरसाईकिल समुद्री जहाज जैसे अनेक साधन हैं जिनको हमारे जीवन में सकारात्मक सुधार किए हैं और जीवन का स्तर किसी स्वर्ग के जीवन से कम नहीं है। जीवन में नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं जिनकी कल्पना स्वर्ग में भी न की होगी। संसार के किसी भी भाग में घटी घटना की जानकारी चन्द मिनटों में टैलीविजन के माध्यम से प्राप्त हो जाती है।

अतः मानव कर्तव्य यही बनता है कि विज्ञान की सहायता से हर सुख सुविधा पैदा करे जिसकी आज के मानव को आवश्यकता है। एक्सरे, अल्टरा सांउड जैसे खोजें मानव बीमारियों कापता लगाने में बहुत ही सहायक सिद्ध हुई हैं इन सभी बातों की प्राप्ति किसी भक्ति अथवा पूजा पाठ से नहीं हुई बल्कि मनुष्य मस्तिष्क की सोच एवं विश्लेषण का परिणाम है। मानव मस्तिष्क शुरू से ही खोजी रहा है। उसने प्रकृति के सिद्धांतों को समझने के पश्चात में सभी उपलब्धियां प्राप्त की हैं और भविष्य में भी बुद्धिजीवी इसी दिशा में काम करते रहेगें जिससे मानव जीवन को और आनन्ददायक बनाया जा सके मानव मानव में भाईचारा बढ़े। मानव के लिए विनाशकारी अस्त्रों-शस्त्रों पर रोक लगे और हर व्यक्ति मानव जाति को सुखी बनाने में अपना सहयोग दें हर मनुष्य को अपनी इच्छानुसार जीने का अधिकार हो और वह एक सम्माननीय जीवन जीने का अधिकारी बने। एक इन्सान दूसरे इन्सान का शोषण न करें बल्कि दूसरों के जीवन को श्रेष्ठ बनाने में सहयोग करे यही मानव जीवन का मूल कर्तव्य है।

8 मार्च महिला दिवस पर विशेष

सावित्रीबाई फुलेः भारत की पहली अध्यापिका

तीन जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के नायगांव नमक छोटे से गांव जन्मी व 10 मार्च 1897 को पुणे में परिनिवृत हुईं सावित्रीबाई फुले ने उन्नीसवीं सदी में महिला शिक्षा की शुरुआत के रूप में घोर ब्राह्मणवाद के वर्चस्व को सीधी चुनौती देने का काम किया था। उन्नीसवीं सदी में यह काम उन्होंने तब किया जब छुआ-छूत, सतीप्रथा, बाल-विवाह, तथा विधवा-विवाह व शुद्रतिशुद्रों व महिलाओं की शिक्षा निषेध जैसी सामाजिक बुराइयां किसी प्रदेश विशेष में ही सीमित न होकर संपूर्ण भारत में फैली हुई थीं। महाराष्ट्र के महान समाज सुधारक, विधवा पुनर्विवाह आंदोलन के तथा स्त्री शिक्षा समानता के अगुआ महात्मा ज्योतिबा फुले की धर्मपत्नी सावित्रीबाई ने अपने पति के सामाजिक कार्यों में न केवल हाथ बंटाया बल्कि अनेक बार उनका मार्ग-दर्शन भी किया।

दरअसल अशिक्षा को दलित, पिछड़ों और महिलाओं की गुलामी के प्रधान कारण के रूप में उपलब्ध्ि करनेवाले जोतीराव फुले ने वंचितों में शिक्षा प्रसार एवं शिक्षा को ‘ऊपर' से ‘नीचे' के विपरीत नीचे से ऊपर ले जाने की जो परिकल्पना की उसी क्रम में भारत की पहली अध्यापिका का उदय हुआ. स्मरण रहे अंग्रेजों ने अपनी सार्वजननिक शिक्षा नीति के शुद्रतिशूद्रों के लिए भी शिक्षा के दरवाजे जरुर मुक्त किये, पर उसमे एक दोष था जिसके लिए जिम्मेवार लार्ड मैकाले जैसे शिक्षा-मसीहा भी रहे मैकाले ने जो शिक्षा सम्बन्धी अपना ऐतिहासिक सिद्धांत प्रस्तुत किया था उसमे व्यवस्था यह थी कि शिक्षा पहले समाज के उच्च्य वर्ग को दी जानी चाहिए। समाज के उच्च्य वर्ग को शिक्षा मिलने के पश्चात वहां से झरते हुए निम्न वर्ग की ओर जाएगी. निम्न वर्ग को शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं. समाज के उच्च्य वर्ग को शिक्षा देने के पश्चात् अपने आप शिक्षा का प्रसार निम्न वर्ग की ओर हो जायेगा. पहाड़ से नीचे की ओर आते पानी की तरह शिक्षा का प्रसार होगा. ’फुले ने ऊपर से नीचे की शिक्षा के इस सिद्धांत को खारिज करते हुए शिक्षा प्रसार का अभियान अपने घर ही शुरू किया।

पहले प्रयास के रूप में महात्मा फुले ने अपने खेत में आम के वृक्ष के नीचे विद्यालय शुरु किया। यही स्त्री शिक्षा की सबसे पहली प्रयोगशाला भी थी, जिसमें उनके दूर के रिश्ते की विधवा बुआ सगुणाबाई क्षीरसागर व सावित्रीबाई विद्यार्थी थीं। उन्होंने खेत की मिटटी में टहनियों की कलम बनाकर शिक्षा लेना प्रारंभ किया। दोनों ने मराठी उत्तम ज्ञान प्राप्त कर लिया .उन दिनों पुणे में मिशेल नामक एक ब्रिटिश मिशनरी महिला नार्मल स्कूल चलती थीं. जोतीराव ने वहीं सावित्रीबाई और सगुणा को तीसरी कक्षा में दाखिल करवा दिया जहाँ से दोनों ने अध्यापन कार्य का भी प्रशिक्षण लिया. फिर तो शुरू हुआ हिन्दू-धर्म-संस्कृति के खिलाफ अभूतपूर्व विद्रोह. जिस हिन्दू धर्म संस्कृति का गौरव गान कर हिन्दू राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया चलाई जा रही है उसका एक अन्यतम वैशिष्ट्य ज्ञान-संकोचन रहा है, जिसका शिकार शुद्रातिशूद्र और नारी बने. इन्हें ज्ञान क्षेत्र से इसलिए दूर रखा गया था की ज्ञान हासिल करने के बाद ये दैविक-दासत्व (डिवाइन-स्लेवरी) से मुक्त हो जाते .और डिवाइन-स्लेवरी से मुक्त होने का मतलब उन मुट्ठी भर शोषकों के चंगुल से मुक्ति होना था जिन्होंने धार्मिक शिक्षा के जरिये सदियों से शक्ति के तमाम स्रोतों ‘आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक' पर एकाधिकार कायम कर रखा था. जोतीराव इस एकाधिकार को तोडना चाहते थे इसलिए उन्होंने एक जनवरी, 1848 को पुणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की, जो बौद्धोत्तर भारत में किसी भारतीय द्वारा स्थापित पहला विद्यालय था. सावित्रीबाई फुले इसी विद्यालय में शिक्षिका बन कर आधुनिक भारत की पहली अध्यापिका बनने का गौरव हासिल किया. इस विद्यालय की सफलता से उत्साहित हो कर फुले दंपत्ति ने 15 मई ,1848 को पुणे की अछूत बस्ती में अस्पृश्य लडके-लड़कियों के लिए भारत के इतिहास में पहली बार विद्यालय की स्थापना की.थोड़े ही अन्तराल में इन्होने पुणे उसके निकटवर्ती गाँव में 18 स्कूल स्थापित कर दिए. चूंकि शिक्षा के एकाधिकारी

ब्राह्मणोंने शुद्रतिशूद्रों और महिलाओं शिक्षा ग्रहण व दान धर्मविरोधी आचरण घोषित कर रखा था इसलिए इस शिक्षा रूपी धर्मविरोधी कार्य से फुले दंपति को दूर करने के लिए धर्म के ठेकेदारों ने जोरदार अभियान शुरू किया.

जब सावित्रीबाई फुले स्कूल के लिए निकलतीं ,वे लोग उन पर गोबर-पत्थर फेंकते और भद्दी-भद्दी गालियाँ देते. लेकिन लम्बे समय तक यह कार्य करके भी जब वे सफल नहीं हुए तो शिकायत फुले के के पिता तक पहुंचाए. पुणे के धर्माधिकारियों का विरोध इतना प्रबल था कि उनके पिता को कहना पड़ा, या तो अपना स्कूल चलाओ या मेरा घर छोडो. फुले दंपति ने गृह-निष्कासन वरण किया. इस निराश्रित दंपति को पनाह दिया उस्मान उस्मान शेख ने. फुले ने अपने कारवां में शेख साहब की पत्नी बीबी फातिमा शेख को भी शामिल कर अध्यापन का प्रशिक्षण दिलाया. फिर अछूतों के एक स्कूल में अध्यापन का दायित्व सौंप कर फातिमा शेख को उन्नीसवीं सदी की पहली मुस्लिम शिक्षिका बनने का अवसर मुहैया कराया.

भारत में जोतीराव तथा सावित्री बाई ने शुद्र एवं स्त्री शिक्षा का आंरभ करके नये युग की नींव रखी। इसलिये ये दोनों युगपुरुष और युगस्त्री का गौरव पाने के अधिकारी हुये । दोनों ने मिलकर 24 सितम्बर ,1873 को 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की. उनकी बनाई हुई संस्था 'सत्यशोधक समाज' ने शुद्रातिशूद्रों और महिलाओं में शिक्षा प्रसार सहित समाज सुधार के अन्य कामों में ऐतिहासिक योगदान किया. सत्यशोधक समाज की 'तीसरे वार्षिक समारोह 'की रपट 24 सितम्बर, 1876 को पेश की गयी जिसमे कहा गया था-'शुद्रातिशूद्रों में शिक्षा के प्रति रूचि नहीं है. उनमे शिक्षा के प्रति रूचि होनी चाहिए.उनके बच्चे बुरे बच्चों की संगत में पड़कर रास्तों पर तमाशा आदि देखने और खेलने में में अपना समय गंवाते हैं. उन्हें इस तरह की बुरी आदत से न लगे और वे प्रत्येक दिन समय पर पाठशाला में जायें तथा उनको समय पर घर वापस लाने के लिए सत्यशोधक समाज ने एक पट्टेवाला पांच रूपये प्रतिमाह पर 11 जनवरी से 11 मई तक रखा.

शूद्रों के जो बच्चे इंजीनियरिंग कालेज में जाते थे , उनमें गरीब बच्चों को मुफ्त प्रवेश मिले। इसके लिए वहां के प्रिंसिपल के समक्ष समाज की ओर से निवेदन प्रस्तुत किया गया था. परिणामस्वरूप कॉलेज के प्रिंसिपल साहब ने दो-तीन बच्चों को निरूशुल्क प्रवेश दिया था. जो गरीब मां-बाप अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते थे, उनके लिए प्रतिमाह पांच रूपये सत्यशोधक समाज ने खर्च करने का प्रस्ताव पास किया था. देहात के बच्चों को भी शिक्षा मिलनी चाहिए,इसके लिए समाज की ओर से पाठशालाओं की स्थापना की गयी.'

महात्मा जोतीराव फुले की मृत्यु सन् 1890 में हुई। तब सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज के जरिये उनके अधूरे कार्यो को आगे बढाया। सावित्रीबाई की मृत्यु 10 मार्च 1897 को प्लेग के मरीजों की देखभाल करने के दौरान हुयी।

उस दिन की बात है...

उस दिन एक औरत के साथ सन्निहित सरोवर पर पल्ला उतरवाने जाना हुआ। विधवा होने वाली महिला के लिए ये सामाजिक रिवाज है। वहां पर कई महिलाओं में एक ऐसी महिला को भी देखा जो बहु बूढी थी। उसके पति की मौत के बाद उसे भी पल्ला उतरवाने के लिए लाया गया था। दादी से चला नहीं जा रहा था। उसके परिवार के लोग उसे लगभग घसीटते हुए सरोवर की ओर लिए जा रहे थे। दादी अपने दिवंगत पति को याद करके रो रही थी और बोल रही थी इस उमर में रंडापा काटने को छोड़ गया। इस से अच्छा भगवान मुझे उठा लेता।

मैंने उसके साथ चल रहे उसके पोते को कहा कि क्या इस दादी को सरोवर में स्नान करवाना जरुरी है। इस को इतनी दूर लाए हो वापस लेकर जाओगे। क्या होगा ऐसा करने से। वह मेरी बात सुनकर सकपका गया। साथ आई औरतों ने मेरी बात तो सुनी पर कहा -क्या करें जी, ये रीति रिवाज तो मानने ही पडते हैं। मैंने कहा छोड देने की शुरुआत कहीं से तो करनी होगी।

विधवा होने वाली महिला को तालाब पर ले जाकर स्नान करवाना, वहीं पर मायके से आए हुए कपड़े पहनाना और कई तरह के लटोटर करवाना एक कुप्रथा है जिस को समाप्त करना होगा। हां, मुझे पहले नहीं पता था कि इस प्रथा में ऐसा किया जाता है अन्यथा मैं अपनी जानपहचान वाली महिला के साथ न जाती।

-**कमलेश चौधरी**
मो. 98134 46370

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

नीति होगी बेनकाब

–रामेश्वर 'गुप्त'

कैसा आया राज देश महं, हालत घणी खराब हो गी।
सेवक लोग नंगे हो गे, अब नीति बेनकाब हो गी।।

देश खड़्या-खड़्या देश रह्या, साहूकार घणे होगे,
सरकार दिवाला दे बैठी, अड़ै खातेदार घणे होगे,
कर्ज तारण नै कर्ज मांग रे, हम शर्मसार घणे होगे,
कहैं बहोंत तरक्की हो गी, बेरोजगार घणे हो गे,
बेहाल म्हं जीणा पड़ग्या, खुशहाल तो ख्वाब हो गी।

कर्ज मांग रे देश-देश तै, शर्म लिहाज नहीं रहगी,
आंख उठाकै बात कर सकैं, हालत आज नहीं रहगी,
चिड़िया के तो पंख टूटगे, वो परवाज नहीं रहगी,
सबके होंठ बंध कर राक्खे, ईब आवाज नहीं रहगी,
बंधुआ मजदूरों जैसी या, हालत मेरी जनाब होगी।

वोटों की सै गड़ी तराजू, इन्सानों के तोल लग रे,
आंख मीच कै चाल र्ये, भेड़ों आले गोल लग रे,
'रामेश्वर' नगल पै, असली सोने जैसे झौल लग रे,
ऐसा आया बख्त देश म्हं, माणस के भी मोल लग रे,
गंगा जल का ख्याल छोड़ कै, अमृत ईब शराब हो गी।

आर्थिक सहयोग

1. तर्कशील साथी मास्टर फकीर चंद जिला कैथल (हरियाणा) ने अपनी लड़की के घर पुत्र प्राप्ति पर अपने नाना बनने की खुशी में तर्कशील सोसायटी हरियाण को 35,000/- (पैंतीस हजार रुपए) का सहयोग भेजा है।

1. मास्टर शमशेर चोरमार ने अपने बेटे डॉ. हरमनजीत का डॉ. अनुपमा से विवाह सम्पन्न होने की खुशी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 2000/- रु. (दो हजार रुपए) का सहयोग भेजा है। इसके साथ-साथ उन्हें तर्कशील भवन बरनाला, पंजाब व कालांवाली ईकाई के लिए भी आर्थिक सहयोग भेजा है।

2. तर्कशील साथी कामरेड कृष्ण गर्ग ने अपने पुत्र की 16 फरवरी, 2021 में सम्पन्न विवाह की खुशी में 'तर्कशील पथ' की 50 प्रतियां मुफ्त में वितरण करने के लिए आर्थिक सहयोग भेजा है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके आर्थिक सहयोग के लिए उक्त साथियों का हार्दिक आभार प्रकट करती है।

महासचिव,
तर्कशील सोसायटी हरियाणा

समाचार है किः

हर वर्ष मार्च का महीना कई मायनों में कुछ उत्साहपूर्ण यादें लेकर आता है और युवाओं में एक नये जीवन का संचार कर देता है। शहीद भगत सिंह का बलिदान दिवस और पाश की पुण्य तिथि के कारण यह महीना युवाओं के लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

इसी महीने 8 मार्च को महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों की प्राप्ति के संघर्ष की याद दिलाता हुआ अंतराष्ट्रींय महिला दिवस भी आता है

भारत में भी समय-समय पर महिलायें विभिन्न क्षेत्रों अधिकारों के लिए संघर्ष करके इतिहास रचती रही हैं। आज भारतीय युवा महिलायें समाज सुधार के लिए विभिन्न रूपों में मुखर हो कर कार्य कर रही है। एक तरफ नौदीप कौर श्रमिक अधिकारों के लिये कार्य कर रही हैं। दूसरी ओर पर्यावरण परिवर्तन के क्षेत्र में कार्य कर रही दिशा रवि मुखर हो कर सामने आई हैं। महिलाओं जब-जब भी अपनी आवाज उठाती हैं, हर काल में सत्ता पर बैठे लोग घबरा जाया करते हैं और उनकी आवाज को दबाने का प्रयास किया जाता है। परंतु सलाम करना होगा हमारे उन न्याय की कुर्सी पर बैठे उन जजों को, जो सच के पक्ष में खड़े नज़र आते हैं।

दिशा रवि को एक मामले में जमानत देते हुए माननीय जज ने बहुत सारी महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां की हैं जो न्याय व्यवस्था में एक उदाहरण के तौर पर साबित होंगी। दिशा रवि की गिरफ्तारी पर जमानत देते हुए माननीय जज ने कहा किः

सरकार पर सजग तरीके से नजर रखने वाले नागरिकों को सिर्फ इसलिए जेल में नहीं डाला जा सकता क्योंकि वे सरकार की नीतियों से असहमति रखते हैं।

2 सरकार की नीतियों को भेदभाव रहित बनाने के लिए मतभेद, असहमति या विरोध करना जायज तरीकों में शामिल है। उन्होंने कहा कि हमारी पांच हजार साल पुरानी सभ्यता अलग-अलग विचारों की कभी भी विरोधी नहीं रही।

संविधान के अनुच्छेद में 19 में भी विरोध करने के अधिकार के बारे में पुरजोर तरीके से बताया गया है।

माननीय जज ने अपना फैसला देते हुए ऋगवेद के एक श्लोक का उद्धरण भी दिया -'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो अपरितासउद्भिदः।' यानि हमारे पास चारों ओर ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें, जो किसी से न दबें, और उन्हें कहीं से रोका न जा सके और जो अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले हों।

हाल ही में फरवरी माह में पत्रकार प्रिया रमानी के खिलाफ पूर्व कंद्रीय मंत्री एमजी अकबर द्वारा दायर किये गये मानहानि के मामले में भी याचिका को खारिज करते हुए माननीय जज ने महत्वपूर्ण टिप्पणियां की हैं। स्मरण रहे कि प्रिया रमानी ने अपने टवीट में पूर्व केंद्रीय मंत्री एम जे अकबर के खिलाफ बड़ी बहादुरी का परिचय देते हुए अपने पर कुछ साल पहले हुए यौन उत्पीड़न के आरोप लगाये थे। तत्पश्चात कई अन्य महिलाओं ने भी कुछ उच्च पदों पर बैठे लोगों के खिलाफ यौन उत्पीड़न के आरोप लगाये थे जो 'टू मी' के नाम से मशहूर हुए।

बीते फरवरी 13 को युवाओं द्वारा अंतर्जातीय विवाहों पर एक महिला लेक्चरार द्वारा अपनी मर्जी से एक विवाह किये जाने, जिसे पुलिस ने उसे विवाह विच्छेद करने के लिए कहा था। महिला द्वारा दायर याचिका में उस के पक्ष में फैसला सुनाते हुए माननीय उच्चत्तम न्यायालय के न्यायधीश संजय कृष्ण कौल ने टिप्पणी दी कि शिक्षित युवाअन्तर्जातीय विवाह करके जाति भेद और सांप्रदायिक तनाव कम करने के लिये एक रास्ता दिखा रहे हैं। उन्होनें कहा कि 'पढ़े लिखे युवा लड़के और लड़कियां अपना जीवन साथी स्वयं चुन कर समाज के पुराने मानदण्डों, जिनमें जाति और समुदाय मुख्य नियंत्रित करते हैं, को तोड़ कर एक मुख्य भूमिका निभा रहे है।

उक्त घटनाओं से पुरानी वर्जनाओं को तोड़ कर सामाजिक परिवर्तन में एक नई आशा की किरण दिखाई दे रही है।

-बलदेव सिंह महरोक

स्मरण, चेतना एवं चिंतन : राज्य स्तरीय कृष्ण बरगाड़ी स्मृति समारोह 2021

साहित्यकार बलबीर परवाना को कृष्ण बरगाड़ी सम्मान प्रदान करते हुए राज्य नेतृत्व

तर्कशील सोसायटी पंजाब की नेतृत्व टीम द्वारा समारोह के मुख्य वक्ता डा. सुखदेव के सम्मानित करते हुए

कृष्ण बरगाड़ समृति समारोह में राज्य भर से पहुँचे तर्कशील कार्यकर्ता एवं अन्य अतिथीगण

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।